क्या मध्यावधि चुनाव की सम्भावनाएं बढ़ गई है?

तीसरा विश्व युद्ध : क्या निकट भविष्य में ही है?

क्या प्रियंका अगला चुनाव लड़ेगी?

गुरु पूर्णिमा शिविर
9 से 12 जुलाई 1995
पानीपत

ओ मेरे उपवन के बहुरंगी फूलों. . . चाहे तुम गुलाव के फूल हो या सुनहले गेंदे के, चाहे मरुभूमि के कैक्टस हो या ऊंचे पर्वतों के गुलमोहर. . . तुम्हारी सम्भावनाएं असीमित हैं, और तुम इसे पहिचान नहीं पा रहे हो. . . इसी की पहिचान कराने के लिए मैं हर बार अलग-अलग स्थानों पर तुम्हें आवाज देता हूं. . . और सम्पन्न करवाता हूं **विशिष्ट साधनाएं,** और प्रदान करता हूं विशेष **दीक्षाएं,** और वह भी **ऊर्ध्वपात दीक्षा** जो दुर्लभ है योगियों के लिए भी . . . ऐसा इसलिए कि शायद कहीं तुम्हारी चेतना जागे, तुम्हारी खोयी स्मृति पुनः वापिस लौटे और तुम समा जाओ मुझमें, उस पूर्णता में जहां से तुम्हारी यात्रा शुरू हुई थी और जहां तुम्हें पहुंचना है. . . इस पूर्णिमा में तुम्हें पूर्ण होने के लिए आना है . . . और खाली हाथ नहीं लौटना है।

– गुरुदेव

: सम्पन्न होने वाले प्रयोग :

क्रिया योग, राज योग
कुण्डलिनी जागरण प्रयोग
प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग
पूर्ण साधना सिद्धि प्रयोग
सिद्धाश्रम साधना

: सम्पन्न होने वाली दीक्षाएं :

आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा, क्रिया योग दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा, भविष्य सिद्धि दीक्षा, कुबेर सिद्धि दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, ब्रह्माण्ड दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा और वे दीक्षाएं, जो आप अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए प्राप्त करना चाहेंगे।

आयोजन स्थल : एस० डी० स्कूल, जी० टी० रोड, पानीपत, हरियाणा

आयोजक

शिविर शुल्क : ६६०/-

श्री एस० बी० सक्सेना, १०१, किशन स्वरूप कॉलोनी, पानीपत
श्री सतीश सिंगला, होटल सिंगला पैलेस, जी. टी. रोड, पानीपत, फोन : २१३८६
श्री विलायती राम अग्रवाल, एडवोकेट, ४३८, मॉडल टाउन, पानीपत, फोन : २२५०७
निखिलवाणी टीम, निखिल ध्यान केन्द्र, गौतम बाजार, पानीपत
श्री राकेश मित्तल, पत्रकार, पानीपत
श्री जोगेन्द्र कुमार, शिवशक्ति टेंट हाउस, लोधी मकबरा, पानीपत

पानीपत, दिल्ली से १०० कि.मी. दूर रेल व बस द्वारा जुड़ा महत्वपूर्ण नगर है। पश्चिमी उत्तर-प्रदेश व हिमाचल प्रदेश के साधक यहां तक सीधे भी पहुंच सकते हैं। शेष प्रान्तों के साधकों के लिए दिल्ली आकर अन्तर्राज्यीय बस स्टैंड (पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास स्थित) से पानीपत पहुंचना ही सुविधाजनक रहेगा।

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

प्रार्थना

या विद्या भवरोग पावनवती या वै परं शाम्भवम्,
हृष्टा पुष्टमयी समस्तजगतां वार्धक्यमुद्राविणी।
यामाश्रित्य च भार्गवः सुविभवः संजीवनीमीश्वरीं,
कायाकल्पविधानदान सकला पायादपायाच्च सा।।

जो भगवती, संसार के सभी रोगों का नाश करने वाली, सभी प्राणियों को हृष्ट-पुष्ट करने वाली, वृद्धता को समाप्त करके कायाकल्प प्रदान करने वाली है, जिस विद्या से शुक्राचार्य ने दैत्यों को सौभाग्यशाली बना दिया, वह देवी संजीवनी, हम साधकों पर नित्य अनुग्रह करती रहे।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

स्तम्भ

ज्योतिष

सद्गुरुदेव

कथ्य

विशेष

संस्मरण / विवेचनात्मक

दीक्षा

स्तोत्र

पाठकों के पत्र

✽ **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका में हर बार समस्त जसवानी परिवार **राशिफल** को पढ़कर ही आगे अपना कार्य करते हैं, जिसके कारण हर बार कामयाबी हासिल होती है।

प्रहलाद जसवानी, मण्डला

✽ पूज्य गुरुदेव, **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका''** मैं कुछ महीनों से पढ़ रहा हूं, शायद मेरी १०-१५ वर्षों से चली आ रही यंत्रणाओं का अब अंत होना होगा, तभी आपके आशीर्वाद स्वरूप यह पत्रिका मुझे मिली है। आपकी पत्रिका पढ़कर एक आशा की किरण मेरे मन में प्रस्फुटित होती जा रही है।

एच० के० साहू, शाहपुरा

✽ पूज्य गुरुदेव, मैं १८ वर्ष का युवक हूं, शरीर दुबला-पतला है तथा कुछ खाया-पीया भी लगता नहीं। मैंने नवम्बर माह का अंक पढ़ा, जिसमें से मंत्र का प्रयोग कर, मुझे मेरे चेहरे के कील-मुहांसों से छुटकारा मिला। यदि शरीर बनाने तथा वजन ठीक करने के लिए कोई मंत्र है, तो बताने की कृपा करें।

शरत भल्ला, कैथल

प्रिय भल्ला जी, आप ''पूर्ण पौरुष प्राप्ति'' दीक्षा प्राप्त कर साधना सम्पन्न करें, आपको लाभ होगा।

सम्पादक

✽ **आदरणीय गुरुदेव, आपको यह जानकर खुशी होगी कि आप से ''पुत्र-प्राप्ति दीक्षा'', जो मैंने २३/०१/९४ को भोपाल में शिविर के अवसर पर ली थी, उससे यह हुआ कि मेरे घर में एक पुत्र ने जन्म लिया है, जन्म तिथि ७/१२/९४ सायं ७.५० है। बाकी आपकी कृपा को हम अब हर समय महसूस कर रहे हैं।**

अश्विनी शर्मा, राजौरी

✽ महोदय, माह अगस्त-सितम्बर की पत्रिका में मंत्र विवेचन पर जो प्रकाश डाला गया है, वह सराहनीय है। इस सम्बन्ध में मेरी राय है कि मंत्रोच्चारण को समझाने में अंग्रेजी भाषा का सहारा ले लिया जाए, तो मंत्रों का उच्चारण समझने में सुविधा रहेगी।

तरसेम लाल धुन्ना, श्रीगंगानगर

आपका सुझाव सराहनीय है, हम इस पर विचार करेंगे।

सम्पादक

✽ परम पूज्य गुरुदेव, **''सिद्धाश्रम साधक परिवार संस्था''** से मैं पिछले तीन साल से जुड़ा हूं, इन तीन सालों के अन्दर मैंने सामाजिक तथा आर्थिक स्तर में बहुत अधिक परिवर्तन अनुभव किया है।

आदेश्वर लाल जैन, बांसवाड़ा

✽ पूज्य गुरुदेव, जब से आपकी पत्रिका के माध्यम से मुझे आपका साथ मिला है, तब से मेरा उद्धार ही हुआ है। आपकी कृपा से प्राप्त सर्व मनोकामना पूर्तिदायक **''चैतन्य यंत्र''** पर मैंने प्रयोग किया और मैं सफल हुआ। अभी तक मुझे व्यवसाय का अवसर नहीं मिला था, मगर इस प्रयोग के बाद मुझे एक अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है। अब आप मुझे सफलता प्राप्त करने का, प्रतिपल उन्नति प्राप्त करने का आशीर्वाद दें।

विजय गर्ग, नरवाणा, जीन्द

✽ मैं **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका''** का नियमित पाठक हूं, तथा मुझे इसके हर आने वाले अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है, क्योंकि इसमें प्रकाशित रचनाएं अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्द्धक तथा सत्यता लिए हुए होती हैं। मंत्र-तंत्र के बारे में मुझे शुरु से ही रुचि रही है, जिसे आपकी पत्रिका पूरा कर रही है। इसके लिए आप सभी सम्पादक मंडल को धन्यवाद।

यज्ञ प्रकाश शर्मा, दिल्ली

✽ आदरणीय गुरुदेव, **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका''** प्राप्त होते ही मन में मानो एक लहर सी दौड़ पड़ती है, और जब तक एक-एक अक्षर को पढ़ नहीं लेता, तब तक किसी और कार्य में मन ही नहीं लगता। इस पत्रिका की सदा से यह विशेषता रही है कि इसकी भाषा बड़ी ही सरल तथा आसानी से समझ में आती है, परन्तु पिछले अंकों के कुछ लेखों में बहुत कठिन भाषा का प्रयोग किया जा रहा है, जिसका विद्वान तो शायद लाभ उठा पाते हैं, परन्तु मुझ जैसे पाठक उसका कोई लाभ नहीं ले पाते। आपसे अनुरोध है कि पहले वाली व्यवस्था पुनः लागू कर दी जाए।

हरिओम शर्मा, शालीमार बाग

प्रिय बन्धु! हमारी पत्रिका का पाठक प्रत्येक स्तर का व्यक्ति है, हमें सबको साथ लेकर चलना होता है, फिर भी हमारा प्रयास होगा कि पत्रिका की भाषा शैली अधिक कठिन न हो।

सम्पादक

✽ पत्रिका में प्रकाशित **'साधक साक्षी हैं'** इस स्तम्भ में प्रकाशित साधकों के अनुभव से हमारा भी साधना के प्रति उत्साह बढ़ता है।

जय सिंह, दिल्ली

पहले इसे पढ़ लें

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है कि वे साधना-सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर जोधपुर टेलीफोन नं०-0291-32209 द्वारा लिखाएं, क्योंकि आप के द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को 10 दिन बाद मिलता है, और कार्यालय द्वारा भेजी गई सामग्री आपके पास 10 दिन बाद पहुंचती है। इन 20 दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।

अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में २४ घंटे में कभी भी नोट करा सकते हैं।

जोधपुर : टेलीफोन नं० - 0291- 32209
फेक्स नं० - 0291- 32010

वर्ष 15 **अंक 5** **मई 95**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरु सेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार -** अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन : 0291 - 32209, फेक्स : 0291 - 32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

सम्पादकीय

पत्रिका परिवार के सभी सदस्य चाहे वह पाठक वर्ग हो, शिष्य हो, साधक हो सभी को मेरा स्नेह . . . फरवरी, मार्च और अप्रैल तीनों विशेषांकों से सम्बन्धित्त आप लोगों के अनेक पत्र प्राप्त हुए. . . सभी ने उसमें प्रकाशित राजनीति से सम्बन्धित भविष्यवाणियों वाले लेखों की सराहना की है, और आगामी अंकों में भी इस प्रकार के लेख बराबर प्रकाशित करने की मांग की है. . . पत्रिका परिवार तो एक विस्तृत परिवार है, और हमने सदा आप लोगों के सुझावों को स्वीकार किया है, आप लोगों के पत्रों से हमें प्रसन्नता होती है, और हमें यह ज्ञात होता है, कि आपको किस प्रकार के साधनात्मक, विवेचनात्मक ज्ञान की आवश्यकता है, आप की भावनाओं के अनुसार ही हम लेखों का प्रकाशन करें। इसके लिए आप हमें पत्र द्वारा अवगत कराते रहें।

आइये, इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए हम आपके विचारों के अनुरूप राजनीतिक भविष्यवाणियों से सम्बन्धित पांच नवीन भविष्यवाणियां प्रकाशित कर रहे हैं। वैसे इस विशेषांक का नाम हमने **''कायाकल्प संजीवनी विशेषांक''** रखा है. . . क्योंकि इसमें प्रकाशित साधनाएं मानव को जीवन की सभी परेशानियों से मुक्ति दिला कर एक नया जीवन देने में समर्थ हैं. . . चाहे वह मानसिक तनाव हो, शारीरिक हो, भौतिक हो या आध्यात्मिक। जब तक जीवन में निश्चिंतता नहीं आ जाती, तब तक सब कुछ होते हुए भी उसका जीवन जर्जर है. . . जब वह इन तनावों से मुक्त हो जाता है, तब उसका कायाकल्प होता है, उसके चेहरे पर प्रसन्नता होती है, उसका आभामण्डल विकसित हो जाता है। इन्हीं बातों पर विचार कर हमने साधना क्रम में आपके लिए **गणाधिपतये साधना, गायत्री साधना, चन्द्रमौलिश्वर साधना, त्रिपुर सुन्दरी साधना** के साथ-साथ **मानसिक तनाव से उत्पन्न रोगों से कैसे बचें,** इस विषय पर भी लेख दिया है, और साथ में हमेशा की तरह स्थायी स्तम्भ तो हैं ही।

आप इन साधनाओं और प्रयोगों के द्वारा अपने जीवन का पूर्ण कायाकल्प करने में समर्थ बनें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ . . .

आपका

नंदकिशोर श्रीमाली

गुरु ही तो जिन्दगी की धड़कन है
यदि हम जिन्दगी को टटोल कर देखें तो

नारायणो नित्यरम्यः नित्यमुक्तः निरंजनः।
निरामयः निरवद्यः निखिलः निखिलेश्वरः।।

साक्षात् नारायण स्वरूप, अतिरंमणीय, बन्धन रहित, सर्वत्र रमणीय, रोग रहित, निन्दा रहित, विकार रहित गुरुदेव निखिल समस्त शिष्य समुदाय के एकमात्र अधिपति हैं।

गुरु पूर्णिमा वह पावन पर्व है, जब प्रत्येक शिष्य अपने प्राण-प्रिय पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में उपस्थित होकर, कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है। **यही है गुरु और शिष्य का पावन सम्बन्ध, जहां अन्य सभी सम्बन्ध न्यून एवं नगण्य हो जाते हैं, क्योंकि शिष्य-गुरु का मिलन वैसा ही है, जैसे धरती और आकाश का मिलन हो, बूंद और समुद्र का मिलन हो, और इस मिलन के बीच समस्त ब्रह्माण्ड रचा-पचा है . . . यह सम्बन्ध आज का नहीं अपितु युगों-युगों से है, और शाश्वत है।**

यह सम्बन्ध देह का नहीं, अपितु प्राणों का है, आत्मा का परमात्मा से मिलन है, और जब कोई शिष्य-गुरु से एकाकार होता है, तो सारा ब्रह्माण्ड शिष्य के पैरों तले होता है, वह शिष्य सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की झलक गुरु में देख कर विस्मय विमुग्ध हो उठता है, क्योंकि यह तो स्व का आत्मा से, जीव का ब्रह्म से और चैतन्य का अचैतन्य से मिलन है. . . और यह मिलन कोई सामान्य मिलन नहीं है, अपितु जन्म-जन्मान्तर का मिलन है।

जब गुरु अपने शिष्य को आवाज देता है, तो उनकी वाणी का एक उद्देश्य होता है कि वह शिष्य रूपी बूंद गुरु रूपी समुद्र में पूर्णरूप से समाहित हो सके, वह सुगन्ध वसन्त में पूरी तरह से मिल सके, जिससे कि यह बार-बार जन्म लेते रहने की प्रक्रिया, यह जन्म-मरण का चक्र एकबारगी ही समाप्त हो सके, और गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु इसी क्रिया को सम्पन्न करते हैं, वे शिष्यों के ललाट की दुर्भाग्य लिपि को बदलने की क्रिया करते हैं, उनके कर्म-वासना रूपी मैल को धुलने का, समाप्त करने का प्रयास करते हैं, क्योंकि यह पर्व ही ऐसा है, जब गुरु शरीर स्थित अमृत-कुंड पर से परदा हटाने का प्रयास करते हैं, जिससे कि वह अमृत शिष्य के पूरे शरीर में रच-पच सके, और उसके जीवन को पूर्णता की ओर

“ गुरु जीवन की पूर्णता है, गुरु को प्राप्त कर लेना शिष्य की पूर्णता है, और यही जीवन की सबसे बड़ी खोज है, उपलब्धि है, जिसे प्राप्त करके शिष्य धन्य-धन्य हो जाता है, बूंद, समुद्र में समा जाने के बाद तद्रूप हो जाती है, फिर उसका सभी कशमकश तथा भटकाव समाप्त हो जाता है, और इसी रहस्य को समझ जाना शिष्य की चैतन्यता है, यही सौभाग्यशालिता तथा कृतकृत्यता है। ”

पहुंचा सके, क्योंकि **'पूर्णिमा'** शब्द अपने-आप में पूर्णता का प्रतीक है।

"पूर्णिमा" का अर्थ है सोलह कलाओं से पूर्ण होना, जब चन्द्रमा प्रतिपदा तिथि से लेकर एकैकशः अपनी कलाओं को पूर्ण करता हुआ, सभी सोलह कलाओं से पूर्ण होकर अत्यन्त सौन्दर्य से भरपूर हो जाता है, उसी को 'पूर्णिमा' कहते हैं, और वह इसी सुन्दरता को पृथ्वी पर बिखेरता हुआ, अपनी शीतल चांदनी से सभी को आप्लावित करता है।

यह गुरु पूर्णिमा पर्व भी ऐसा ही है, जब पूज्य गुरुदेव अपनी चौंसठ कलाओं से पूर्ण, अपने ज्ञान की गरिमा को, अपनी शीतलता को शिष्यों के बीच बिखेर कर उनके हृदयों को आनन्द से सराबोर कर देते हैं, क्योंकि गुरु तो पूर्ण ईश्वर का ही स्वरूप है, एक मस्त-मादक फुहार है, जिसमें भीग कर शिष्य आनन्द से सराबोर हो सकता है, अपने-आप को प्यार में, मस्ती में, मादक तरंग में पूरी तरह से भिगो कर उस विराटता के दर्शन कर सकता है, जो जीवन का वास्तविक आनन्द है, ध्येय है, सर्वस्व है। गुरु से एकाकार होना ही, उनकी कृपा-फुहार में भीग जाना ही उस विराट सत्ता को प्राप्त कर लेना है और शिष्य वही है, जो उस ब्रह्मानन्द में एकाकार होकर अपने-आप को गुरु-चरणों में सम्पूर्णता के साथ समाहित कर दे।

गुरु पूर्णिमा तो जीवन का वह स्वर्णिम क्षण है, जब शिष्य गुरु-चरणों का पूजन-अर्चन आदि कर अपने समस्त विकारों, न्यूनताओं और समस्त संचित पाप कर्मों से मुक्ति पा जाता है, तथा उनके विशेष आशीर्वाद व कृपा-दृष्टि से उनकी श्रेष्ठता, उच्चता और पवित्रता को ग्रहण कर पाता है, अतः इस दिन गुरु-चरणों में पहुंचना तथा उनकी सामीप्यता पाना ही जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि कही जा सकती है, क्योंकि इस दिन गुरु-चरणों में होना ही समस्त तीर्थों में स्नान करने के तुल्य है, तो फिर कोई अज्ञ ही होगा, जो इस पर्व पर गुरु-चरणों में पहुंच कर उनके आशीर्वाद और कृपा-दृष्टि तले अपने-आप को उस रासानन्द की फुहार में भिगो कर आप्लावित न कर सके।

गुरु-कृपा तो सही अर्थों में पवित्र, दिव्य, उज्ज्वल और निर्मल मानसरोवर है, जिसमें डुबकी लगाने से कौआ भी हंस बनने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। गुरु तो वह सम्पूर्णता है, जिसमें अवगाहन करने से समस्त सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं।

जो व्यक्ति गुरु की महत्ता को व इस दिन के महत्व को नहीं समझ पाता, उसके जैसा हतभागी और कोई नहीं होता, क्योंकि इन दिव्य क्षणों में गुरुदेव के समक्ष न होना जीवन के बहुत बड़े सौभाग्य से वंचित रह जाना है, और यह बात वही जान सकता है, जिसने गुरु के अर्थ को अर्थात् 'गुरु-तत्व' को जाना हो।

गुरु-शिष्य की परम्परा तो आदिकाल से ही चली आ रही है, हर बार गुरु, शिष्य को बहुत कुछ देता है, परन्तु शिष्य अपने गुरु को कुछ नहीं दे पाता और उस पर गुरु-ऋण चढ़ता ही जाता है, यही तो एक मौका, एक सुअवसर शिष्य के जीवन में आता है, जब वह पूर्णता के साथ उनमें समाहित होकर, उनसे एकाकार होकर इस गुरु-ऋण को उतारने का प्रयास कर सकता है, क्योंकि गुरु पूर्णिमा गुरु-हृदय में सम्पूर्णता के साथ समावेश होने का दुर्लभ अवसर है।

गुरु पूर्णिमा मात्र 'गुरु पर्व' न होकर 'शिष्य पर्व' है, जिस प्रकार चन्द्रमा अपनी एक-एक कला को ग्रहण करता हुआ, सोलह कलाओं से पूर्ण होकर, अपूर्व सौन्दर्य से पूर्ण हो जाता है, उसी प्रकार शिष्य भी इस पर्व पर गुरु

गुरु पूर्णिमा तो जीवन के सभी बन्धनों से मुक्त होने का मार्ग है, पशुवत जीवन से मुक्ति पाकर वास्तविक जीवन को समझने का रास्ता है, यह तो गुरु-शिष्य के प्रेम की पूर्णता की पूर्णिमा है, और बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, योगी भी पूर्णिमा की इस चांदनी में स्नान करने के लिए . . .

शिष्य तो वह है, जो अपने 'स्व' को गुरु-चरणों में विसर्जित कर दे, अपना नाम, पद, गरिमा, उच्चता जैसे भावों को गुरु-चरणों में तिरोहित कर दे, क्योंकि शरीर, मन, प्राण, देह, रोम-प्रतिरोम यह सभी कुछ गुरु का ही तो है, तथा यह सब गुरु को अर्पित कर देना ही गुरुमय हो जाना है।

द्वारा अपने जीवन में समस्त कलाओं से युक्त होकर अपूर्व सौन्दर्य से भरपूर हो जाता है, क्योंकि मात्र गुरु पें ही शिष्य को पूर्ण मानव बना देने की क्षमता होती है।

शिष्य के मन में जब अपने इष्ट और गुरु के प्रति भेद नहीं रह जाता, जब वह इष्ट की वाणी व गुरु की वाणी से एक ही प्रकार की आनन्दानुभूति का अनुभव करने लगता है, क्योंकि गुरु का दिव्य शरीर इष्ट रूप में ही कल्याण निहित बना है, तभी वह जीवन में सफलता की आशा कर सकता है, और यदि उसके मन में एक क्षण के लिए भी यह भाव आ जाता है कि वह गुरु एक साधारण मानव है, तो वह शिष्य अपने लक्ष्य की ओर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता, और न ही अपने जीवन के ध्येय को और जीवन की पूर्णता को प्राप्त कर सकता है, क्योंकि गुरु साधारण मानव के रूप में केवल दुष्ट विचारों वाले दम्भियों को ही दिखाई देते हैं, जो कि अपने तर्क के जाल में ही उलझे रहते हैं, और ऐसे व्यक्ति जीवन में गुरु की सामीप्यता प्राप्त करके भी दुराचारी व दुर्भाग्यशाली बने रहते हैं।

गुरु प्राप्त होना तो जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि है, और उनके चरणों में अपने-आप को श्रद्धा पूर्वक समर्पित कर देना ही जीवन का सर्वस्व कहलाता है, क्योंकि गुरु तो साक्षात् विचरण करते हुए सजीव, सप्राण देवालय हैं, उनका रोम-रोम मंदिर की पवित्रता है, और चरण समस्त तीर्थों के सम्पूर्ण दर्शन, इसीलिए यह कहा जाता है, कि संसार के सभी तीर्थ और पुण्य क्षेत्र गुरु-चरणों में साकार रूप में उपस्थित होते हैं, किन्तु उन्हें देखने के लिए वे दिव्य चर्मचक्षु चाहिए, जो गुरु-कृपा के द्वारा ही प्राप्त किए जा सकते हैं।

गुरु तो सही अर्थों में पवित्र, दिव्य, उज्ज्वल और निर्मल मानसरोवर है, जिसमें डुबकी लगाने से कौआ भी हंस बनने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। गुरु तो वह सम्पूर्णता है, जिसमें अवगाहन करने से समस्त सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं, और इन्हीं समस्त सिद्धियों को शिष्य में समाहित कर देने का ही यह पर्व है। **शिष्य को वसन्त की मादक अठखेलियों से गुजार कर, साधना की तपिश देकर फिर से रस युक्त कर देने का ही यह अवसर है, जिससे कि वह शिष्य स्वयं शरद पूर्णिमा का चांद बन सके, आवश्यकता है उसे गुरु-चरणों में इस पर्व पर पूर्णरूप से अपने-आप को समर्पित कर देने की।**

शिष्य तो वह है, जो अपने 'स्व' को गुरु-चरणों में विसर्जित कर दे, अपना नाम, पद, गरिमा, उच्चता जैसे भावों को गुरु-चरणों में तिरोहित कर दे, क्योंकि शरीर, मन, प्राण, देह, रोम-प्रतिरोम ये सभी कुछ गुरु का ही तो है, तथा यह सब गुरु को अर्पित कर देना ही गुरुमय हो जाना है, और इस क्रिया को क्रियान्वित करने का अवसर ही गुरु पूर्णिमा पर्व है, जब शिष्य पूर्णरूप से गुरुमय होकर अपने जीवन के वास्तविक आनन्द को, जीवन की श्रेष्ठता को, जीवन की सर्वोच्चता को प्राप्त कर लेता है, क्योंकि गुरु का तात्पर्य ही पूर्णता है, सिद्धि है, सर्वोच्चता है।

यह महोत्सव तो पूर्णिमा की चांदनी है, जो मन के अंधियारे को दूर करने में समर्थ है, यह महोत्सव तो छलकते हुए जाम की तरह है, जिसे पीने पर शरीर का रोम-रोम पुलकित हो उठता है, हृदय मोहित हो उठता है तथा चारों तरफ वासन्ती धूप खिल उठती है, और भक्ति-रस चारों तरफ से इस प्रकार बरसने लगता है, कि इसे अभिव्यक्त करने के लिए कोई शब्द नहीं बनते।

गुरु पूर्णिमा तो जीवन के सभी बन्धनों से मुक्त होने का मार्ग है, पशुवत जीवन से मुक्ति पाकर वास्तविक जीवन को समझने का रास्ता है, यह तो गुरु-शिष्य के प्रेम की पूर्णता की पूर्णिमा है, और बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, योगी भी पूर्णिमा की इस चांदनी में स्नान करने के लिए , अपने-आप को उनकी कृपा-फुहार में भिगो देने के लिए व्यग्र हो उठते हैं, क्योंकि गुरु पूर्णिमा दिव्य चंद्र रूपी गुरु की चांदनी में अपने-आप को तृप्त कर लेने का पर्व है, जिसमें सभी शिष्य स्नान कर तृप्त व आनन्द युक्त होकर अपने जीवन को धन्य-धन्य कर सकते हैं।

बहुत कुछ समेटे हुए है १९९५ अपने अंक में

जिस प्रकार निरन्तरता से राजनीतिक घटना क्रम परिवर्तित हो रहा है, उससे तो ऐसा लगता है, कि किसी भी समय कोई भी घटना घटित हो सकती है, और राजनीति का तो खेल ही ऐसा है, इसमें राजनीतिज्ञ स्वयं भी यह अनुमान नहीं लगा पाते, कि दो घंटे बाद या दो दिन बाद क्या होने वाला है, फिर भी पिछले तीन-चार महीनों में यदि ग्रह योगों का अध्ययन करें, तो काफी कुछ परिवर्तन हुआ है, और ऐसा ही परिवर्तन हुआ है, जैसा ग्रह संयोगों से अनुभव होता है।

अर्जुन का अग्नि बाण कितना दूर पहुंचेगा?

श्री अर्जुन सिंह कांग्रेस के तपे-तपाये नेता रहे हैं, और कई वर्षों तक उन्होंने मंत्री पद को भी सम्भाला है, परन्तु राहु और मंगल का पारस्परिक सम्बन्ध इस रूप में घटित हुआ, कि उन्होंने त्याग पत्र दे दिया और नई पगडण्डी पर चल पड़े, जैसा कि पहले से ही यह अनुमान था, कि इस पगडण्डी पर एकदम से कोई उसके साथ नहीं चलेगा और ऐसा हुआ भी।

परन्तु क्या यह ऐसा ही रहेगा, क्या कांग्रेस से जो उनको संन्यास दिया गया है, वह संन्यास बरकरार रहेगा?

इन प्रश्नों को यदि ज्योतिष के माध्यम से टटोलें, तो ऐसा लगता है, कि ज्यादा समय तक वे एकांतवास नहीं भुगतेंगे। २ मई से फिर उनका अच्छा समय आ रहा है, और ऐसा लग रहा है, कि २ जून के आस-पास वे वापिस महत्त्वपूर्ण पद को प्राप्त करेंगे और कांग्रेस को उसी प्रकार से दिशा निर्देश देते रहेंगे। ये चार-छः महीने जरूर उनके जीवन में परीक्षा के दिन हैं, और इन दिनों में उनको काफी कष्ट व वेदना भी उठानी पड़ेगी, मगर समय का परिवर्तन जो देखने में हो रहा है, वह उनके लिए अनुकूल साबित हो पायेगा। परिस्थितियां परिवर्तित होंगी और वे वापिस सत्ता के गलियारे में घूमते हुए दिखाई देंगे।
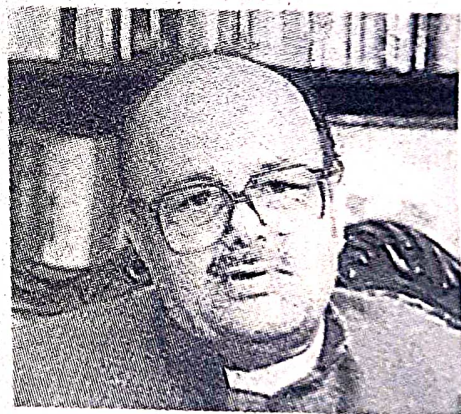
फिर भी यह तो निश्चित ही है, कि अप्रैल और मई का समय उनके लिए कष्ट साध्य है, तथा जून के बाद भी वे निष्कण्टक चल पायेंगे ऐसा प्रतीत नहीं होता, क्योंकि फरवरी १९९६ तक का जो समय है, वह अपने-आप में काफी हिचकोले खाने वाला समय है, और इन हिचकोलों में श्री अर्जुन सिंह जी की नाव कभी इस पार, कभी उस पार हिचकोले खाती हुई, भंवर जाल में डूबती-उतराती हुई कठिनाई से ही पार हो पायेगी। यह तो निश्चित है, कि वे अपनी नाव को सकुशल खेते हुए नदी पार कर लेंगे और मंत्री पद को प्राप्त कर पायेंगे, मगर फिर भी उन्हें अभी काफी लम्बा रास्ता तय करना होगा और इस रास्ते पर चलते हुए कुशलता के साथ कार्य को सम्पन्न करना होगा।

क्या मध्यावधि की सम्भावना बढ़ गई है?

यदि राजनीति का विश्लेषण किया जाय, तो अभी जो चुनाव हुए हैं, उसमें कांग्रेस को काफी कुछ नुकसान उठाना पड़ा है, और महाराष्ट्र में उनको अपना साम्राज्य भी छोड़ना पड़ा है।

प्रश्न यह उठता है, कि कांग्रेस की इस विफलता से क्या मध्यावधि चुनाव की सम्भावना निकट आ रही है?

ज्योतिष का अध्ययन करें, तो इस समय राहु और मंगल दोनों तारा वेध में चल रहे हैं, और यह वेध अपने-आप में असन्तुलित सा अनुभव होगा, शोषण पैदा करेगा, कठिनाइयां पैदा करेगा, और प्रधानमंत्री के लिए भी अनेक प्रकार की उलझनें सामने आयेंगी।

परन्तु केन्द्र में कोई विशेष परिवर्तन हो, अभी ऐसी कोई सम्भावना नहीं है। हो सकता है, कि अभी तीन मंत्रियों को और निकाला जाय, और यह भी हो सकता है, कि पांच-छः मंत्रियों को नये पद दिये जायें, परन्तु फिर भी सन् १९९६ में चुनाव हो रहे हैं, इसलिए १९९५ में ऐसी कोई घटना घटित नहीं हो पायेगी, कि मध्यावधि चुनाव हो जायें। यह बात और है, कि जून १९९६ में चुनाव होने की अपेक्षा मार्च १९९६ के आस-पास चुनाव हो जायेंगे . . . दो-तीन महीने पहले ही चुनाव होने की सम्भावना प्रबलतम है, क्योंकि उस समय ग्रह-स्थति ऐसी है, कि चुनाव हों, लेकिन उनको मध्यावधि चुनाव नहीं कहा जा सकता, चूंकि जून से दो-तीन महीने पहले से लेकर आगे की कुछ स्थितियां अनुकूल नहीं हैं, इसलिए चुनाव फरवरी-मार्च १९९६ के आस-पास होने की प्रबल सम्भावना है।

फिलहाल यह बात तो दो टूक स्पष्ट है, कि सन् १९९५ में मध्यावधि चुनाव की सम्भावनाएं नहीं के बराबर हैं।

क्या प्रियंका अगला चुनाव लड़ेगी?

धीरे-धीरे स्थितियां इस प्रकार से बन रही हैं, कि सोनिया गांधी सीधे राजनीति में नहीं उतरेंगी, क्योंकि वे इस बात को समझती हैं, कि देश की राजनीति को गतिशील करना और नित नयी उलझनों में उलझना बड़ा ही मुश्किल है, मगर वह प्रियंका के माध्यम से राजनीति में उतर सकती हैं। प्रियंका की जन्मकुण्डली देखने से भी यही प्रतीत होता है, कि अगले लोकसभा चुनाव में वे अमेठी से या उत्तर प्रदेश के किसी भी अन्य स्थान से चुनाव लड़ने की तैयारी करेंगी और वे चुनाव लड़ेंगी ही।

मगर यह कहना उचित है, कि चुनाव लड़ने के कुछ समय बाद ही वे महत्त्वपूर्ण पद को प्राप्त कर पायेंगी, फिलहाल उनके ग्रह-संयोग इस बात को स्पष्ट करते हैं, कि उनका रास्ता चुनाव में लड़कर सफलता पाने की ओर अग्रसर हो रहा है, और आने वाले वर्षों में वे निश्चय ही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद तक भी पहुंच सकती हैं, क्योंकि उनकी जन्मकुण्डली में ग्रह के संयोग अपने-आप में महत्त्वपूर्ण हैं, उच्चतर हैं, श्रेष्ठ हैं।
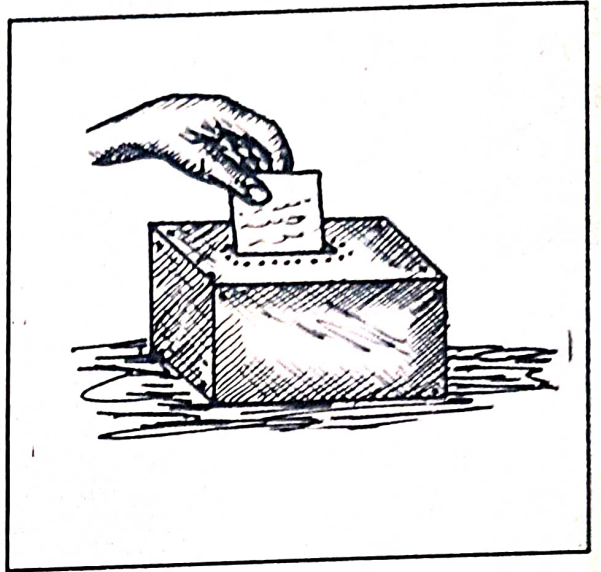
तीसरा विश्व युद्ध : क्या निकट भविष्य में ही है?

यह प्रश्न कई बार उठा है और संसार के लगभग सभी ज्योतिषियों ने इस प्रश्न को उछाला है, तथा भारत में भी कई ज्योतिषियों ने यह कहा है, कि सन् १९९९ में विश्व युद्ध होने की सम्भावनाएं है। जैसे-जैसे सूर्य, वृषभ, मिथुन, कर्क की ओर गतिशील होगा, विश्व युद्ध की सम्भावनाओं को बढ़ायेगा, क्योंकि मंगल, राहु, शनि और जितने भी नक्षत्र हैं, वे वेध नष्ट होंगे, और यह वेध पूरे विश्व को अपने-आप में समेट लेगा। किसी भी समय और कभी भी विश्व युद्ध प्रारम्भ हो सकता है, छोटी-सी चिनगारी कभी भी दावानल का रूप धारण कर सकती है; क्योंकि यह तो निश्चित है, कि एक बार और विश्व युद्ध होने की सम्भावनाएं हैं, और यह सन् १९९९ के आस-पास है।

हम सब ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, कि संसार के प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष को सद्‌बुद्धि दे, और ऐसी कोई स्थिति नहीं आने दे, जिससे कि नर-संहार हो, तनाव हो और विश्व युद्ध की विभीषिका में मानवता झुलस जाय, क्योंकि इस बार जो भी युद्ध होगा, वह अपने-आप में अत्यन्त दुःखदायी और महाविनाशकारी होगा।

परन्तु फिलहाल तो ग्रह-संयोग तो यही बता रहा है, कि सन् १९९९ में विश्व युद्ध होगा, और जल्दी ही समाप्त भी हो जायेगा, मगर थोड़े से समय में ही इतनी क्षति हो जायेगी, कि ५० वर्षों में भी उस क्षति की पूर्ति करना कठिन हो जायेगा।

वास्तव में ही आने वाला समय हम सबके लिए चुनौतियों का समय है, हमारे जीवन में प्रेम और भ्रातृत्व बढ़े और राजनीति भी अपने-आप में साफ-सुथरी हो, श्रेष्ठ व्यक्ति राजनीति में आयें और देश का कल्याण हो, ऐसी ही हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

क्या तंत्र से कुछ भी सम्भव है?

तंत्र कोई दुःखदायी क्रिया नहीं है, गलत क्रिया नहीं है, कुछ गलत लोगों के हाथ में पड़ जाने के कारण इसका मूल स्वरूप, इसका वास्तविक ज्ञान वर्तमान में हमें नहीं प्राप्त हो पा रहा है, क्योंकि टुच्चे और घटिया लोग हाथ की कलाबाजी दिखा करके उसको 'तंत्र' कहते हैं, कुछ घटिया लोग दूसरों को दुःख दे करके अपने सुख की प्राप्ति तंत्र के माध्यम से लेना उचित समझते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में जो कुछ भी हम पढ़ते हैं, उस के कारण शर्म से हमारा सिर झुक जाता है, कि क्या व्यक्ति इतना घटिया भी हो सकता है। तंत्र के नाम पर किसी व्यक्ति को नुकसान पहुंचाना, तंत्र के नाम पर नरबलि देना, तंत्र के नाम पर घटिया काम करना, तंत्र के नाम पर अत्याचार करना, यह सब कुछ अपराध ग्रस्त और निम्न स्तरीय लोगों का काम है।

तंत्र तो अपने-आप में एक स्पष्ट विधा है, जिसका प्रयोग पूर्ण विवेक के साथ करना चाहिए, ठीक उसी प्रकार, जैसे एक सब्जी काटने का चाकू बाजार से कोई भी दस रुपये में खरीद सकता है, परन्तु यह तो उसके विवेक पर निर्भर है, कि उससे वह सब्जी काटें या किसी का गला काट दे अथवा किसी को नुकसान पहुंचा दे, चाकू का इसमें अपना कोई दोष नहीं है, ठीक इसी प्रकार तंत्र का भी कोई दोष नहीं है, जो तंत्र नहीं जानते हैं, वे ही लोग इसका दुरुपयोग करते हैं, और ऐसे लोगों को तो कठोर दण्ड दिया ही जाना चाहिए, जो तंत्र के नाम पर बदमाशी, चालाकी, मक्कारी, धूर्तता, घटियापन और सामाजिक नियमों का उल्लंघन करते हैं।

शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है, कि तंत्र के माध्यम से भाग्य को परिवर्तित किया जा सकता है, तंत्र के माध्यम से व्यक्ति अपने दुःखों को सुख में परिवर्तित कर सकता है, तंत्र के माध्यम से एक साधारण व्यक्ति सर्वोच्च पद पर पहुंच सकता है, तंत्र के माध्यम से व्यक्ति अपने परिवार को सुखमय बना सकता है, तंत्र के माध्यम से पूरे विश्व में शांति लायी जा सकती है।

परन्तु आवश्यकता इस बात की है, कि व्यक्ति को तंत्र की सही विधि ज्ञात हो, मंत्र का ज्ञान हो, अनुष्ठान का ज्ञान हो, कालखण्ड का ज्ञान हो, उसके दिल में प्रेम, दया, करुणा, ममत्व हो। यदि व्यक्ति भले कार्यों के लिए तंत्र का प्रयोग करे, तो निश्चय ही इसके माध्यम से कोई भी परिवर्तन व्यक्तिगत जीवन में और समाज में किया जा सकता है।

नमो विश्वप्रबोधाय गणाधिपतये नमः

जो ऋद्धि-सिद्धि एवं शुभ-लाभ के प्रदाता हैं।

जीवन में निर्विघ्नता तथा मंगल के लिए भगवान् गणपति की आराधना उतनी ही आवश्यक है, जितनी की एक मनुष्य को जीने के लिए प्राण-वायु की। किसी भी साधना से पूर्व भगवान् गणपति पूजित होते ही हैं, इसीलिए इन्हें "मंगलमूर्ति" कहते हैं। ये देवाधिदेव तो हैं ही, किन्तु इनकी साधना अत्यन्त सरल

और शीघ्र सफलता देने वाली होती है। जीवन की समग्रता को लिये हुए इनकी साधना विविधता पूर्ण है।

गणाधिप! नमस्तुभ्यं सर्वविघ्नप्रशान्तिद।
उमानन्दप्रद प्राज्ञ, त्राहि मां भवसागरात्।।

अर्थात् सभी विघ्नों को शांत करने वाले उमा पुत्र, हे गणनायक! आप ही हमें भव-सागर से पार उतार सकते हैं।

गणेश पूजन और उनकी साधना एवं उपासना का साधक के जीवन में विशेष महत्व है। किसी भी प्रकार के विशिष्ट कार्य के लिए, विशिष्ट शक्ति सम्पन्न देवताओं का स्मरण, पूजन एवं साधना सम्पन्न करनी ही पड़ती है, इसीलिए सभी पूजनों में किसी भी कार्य को निर्विघ्न पूर्ण, फल युक्त, मंगल रूप से पूर्ण करने हेतु श्री गणपति का ही पूजन सर्वप्रथम किया जाता है।

भगवान् गणपति समस्त गणों के अधिपति माने जाते हैं, इसीलिए विस्तृत यज्ञों, स्तोत्र पाठों तथा नित्य पूजन में भी पहले गणेश जी की पूजा करके ही मनुष्य सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त कर सकता है। शिव-शक्ति दोनों तत्वों का सायुज्य होने से इनकी साधना करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होता है।

यह तो हमारी भारतीय परम्परा ही रही है कि किसी भी कार्य का प्रारम्भ करने से पूर्व 'श्री गणेश' का पूजन किया जाता है, जिससे कि वह कार्य शुभ और लाभ दे सके। उसमें किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी न आये, और वह कार्य पूर्णता के साथ सम्पन्न हो सके, क्योंकि गणपति जीवन में पूर्ण समृद्धि और 'ऋद्धि-सिद्धि' प्रदान करने वाले तथा जीवन को प्रत्येक दृष्टि से ऊंचा उठाने वाले देव माने जाते हैं।

गणेश "ऋद्धि-सिद्धि" और "शुभ-लाभ" के प्रदाता हैं, क्योंकि जब गणेश व्यस्क हुए, तो इनका विवाह ऋद्धि-सिद्धि नाम की दो कन्याओं से कर दिया गया, और विवाह के कुछ समय बाद ही ऋद्धि से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम **"शुभ"** रखा गया और सिद्धि से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम **"लाभ"** रखा गया, अतः इस तरह पूरा परिवार ही मिलकर अपने-आप में पूर्ण सफलता का परिचायक हो गया। मात्र गणपति पूजन से कार्य में पूर्णता प्राप्त नहीं की जा सकती, उसके लिए तो किसी विशेष विधान द्वारा पूर्ण गणपति परिवार की पूजा-अर्चना करना आवश्यक है, जिससे कि व्यक्ति या साधक को जीवन में पूर्णता और सफलता प्राप्त हो सके, क्योंकि जहां पर गणपति का वास होता है, वहां पर ऋद्धि और सिद्धि दोनों देवियां रहती ही हैं।

कलियुग में गणपति शीघ्र सफलतादायक देव माने जाते हैं, और यह ज्ञान-विज्ञान दोनों ही प्रदान करने वाले हैं। ये "विघ्नराज" कहे जाते हैं, क्योंकि ये सम्पूर्ण दैत्यों के एकमात्र संहारक हैं, इनकी साधना सम्पन्न करने से साधक को लक्ष्मी तो प्राप्त होती ही है, साथ ही उसे जीवन में प्रसन्नता, उल्लास व आनन्द की प्राप्ति भी होती है।

गणपति यज्ञों के एकमात्र रक्षक तथा जीवन की शेष रह गई इच्छाओं को पूर्ण करने वाले देव हैं, जो व्यक्ति इनकी साधना को श्रद्धापूर्वक और पूर्ण विश्वास के साथ सम्पन्न कर लेता है, वह सभी कार्यों में पूर्ण, प्रवीण, लेखक, चित्रकार, विद्वान, ज्ञान-विज्ञान के तत्व को जानने वाला तथा सर्वज्ञ हो जाता है, किन्तु इसके लिए यह आवश्यक है कि वह साधक गणपति के बारह नामों का पाठ करे।

गणपति र्विघ्नराजो लम्वतुण्डो गजाननः।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः।।
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पटेत्।।
विश्वं तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित्।

(पद्मपुराण)

अर्थात् ये बारह नाम इस प्रकार हैं— गणपति, विघ्नराज, लम्बतुण्ड, गजानन, द्वैमातुर, हेरम्ब, एकदन्त, गणादि, विनायक, चारुकर्ण, पशुपाल और भवात्मजः। जो प्रातःकाल उठकर इन बारह नामों का पाठ कर लेता है, उसे अपने इच्छित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य-सिद्धि प्राप्त हो जाती है, तथा उसे कभी किसी प्रकार के विघ्न या कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता, क्योंकि इनके प्रत्येक नाम का विशेष अर्थ होता है, विशेष महत्व होता है, विशेष भाव होता है।

कोई भी व्यक्ति मात्र अपने प्रयत्नों से, अपनी प्रतिभा के द्वारा, अपनी बुद्धि के माध्यम से किसी भी कार्य को पूर्णरूप व श्रेष्ठता नहीं दे पाता, प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिभा और बुद्धि की एक सीमा अवश्य होती है, इस सीमा से आगे वह नहीं दौड़ पाता, क्योंकि विभिन्न प्रकार की बाधाएं उसकी बुद्धि एवं कार्य के विकास को रोक देती हैं, यदि उस कार्य को सही अर्थों में पूर्ण करना है, तो उस व्यक्ति को **'गणपति साधना'** अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

हमारे शास्त्रों में भी गणेश पूजा, साधना, उपासना को महत्व दिया गया है, उपनयन, विवाह आदि सम्पूर्ण मांगलिक कार्यों में भी गणेश पूजा को ही सर्वोपरि माना जाता है। 'पद्मपुराण' के अनुसार— **"जो साधक *"गणेश साधना"* सम्पन्न करता है, वह तीनों लोकों को अपने वश में कर लेता है, और उसे अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है।"**

गणपति साधना प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक है, क्योंकि गणपति सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने में सहायक हैं। 'लिंग पुराण' के अनुसार **"सभी देवताओं पर विचार करने के**

बाद यही निर्णय सर्वमान्य है कि जीवन में पूर्ण सफलता, सिद्धि तथा निर्वाण को देने वाले एकमात्र गणपति ही हैं।''

किसी भी साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए साधक को गणपति साधना अवश्य ही सम्पन्न कर लेनी चाहिए, जिससे कि वह उस साधना में शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर सके, अर्थात् जो पूर्ण भक्ति-भाव से गणपति साधना को सम्पन्न करता है, उसके जीवन की सभी बाधाओं, कष्टों और विपदाओं का नाश होता रहता है, कार्य सिद्धि निरन्तर होती रहती है। जीवन में निर्धनता से छुटकारा पाने के लिए, धन तथा सुख-सौभाग्य प्राप्त करने के लिए, उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिए एवं जीवन की अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए गणपति साधना प्रत्येक गृहस्थ को अवश्य ही करनी चाहिए।

साधना सामग्री– गणपति विग्रह, मंगल माला, गणपति गुटिका।

समय– १५ जुलाई शनिवार, गणेश चतुर्थी या किसी भी मंगलवार को (प्रातः ६ से ९ बजे तक)

साधना विधि

यह साधना प्रातःकालीन है, इस दिन साधकों को चाहिए कि वे प्रातः ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर, स्नान आदि से निवृत्त होकर, पीले आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाएं, अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर तांबे की प्लेट में कुंकुम से या केसर से 'स्वस्तिक' बनाकर वस्त्र के ऊपर रखें तथा **'गणपति विग्रह'** को दूध और पानी से स्नान कराकर पोंछ लें, और उसे तांबे के पात्र में स्थापित कर दें।

इसके बाद **'गणपति गुटिका'** को विग्रह के सामने स्थापित करें, फिर उसका भी स्नान, तिलक के बाद अक्षत, पुष्प चढ़ाकर, धूप व दीप से पूजन करें, बेसन से बने लड्डू का भोग लगायें, इसके बाद उस चौकी पर बिछे हुए कपड़े के ऊपर चारों दिशाओं में पीले चावल की बारह ढेरियां अर्थात् चारों दिशाओं में तीन-तीन ढेरियां बनाकर, प्रत्येक ढेरी पर एक-एक सुपारी कुंकुम से रंग कर रख दें, तत्पश्चात् गणपति के बारह नामों का एक बार पाठ करें, और **'मंगल माला'** से निम्न मंत्र का बहुत ही श्रद्धा और विश्वास पूर्वक ११ माला जप करें–

मंत्र

ॐ ग्लौं गं गणपतये नमः

यह एक दिन की साधना है, साधना समाप्ति के बाद आरती करें, और सभी परिवार के लोगों में प्रसाद वितरण करें। यह साधना अत्यधिक मंगलकारक और विघ्नविघातक है, तथा घर में होने वाले छोटे-छोटे कलह, विवाद, अशांति और व्यर्थ के तनावों एवं दुष्प्रभावों को हटाकर यथाशीघ्र शांति का वातावरण बनाती ही है। प्रत्येक साधक या गृहस्थ को चाहिए कि वह इस एक दिन की साधना से अवश्य लाभ उठाये।

साधना के बाद विग्रह और माला एवं अन्य सामग्री को एक कपड़े में बांध कर जल में विसर्जित कर दें।

श्री गणेश आरती

गणपति स्मरण : विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।

आरती

आरति गजवदन विनायक की, सुर मुनि-पूजित गणनायक की।

एकदंत शशिभाल गजानन, विघ्नविनाशक शुभगुण कानन।
शिवसुत वन्द्यमान-चतुरानन, दुःखविनाशक सुखदायक की।। सुर मुनि . . .

ऋद्धि-सिद्धि स्वामी समर्थ अति, विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति।
अघ-वन-दहन, अमल अविगत गति, विद्या विनय विभव-दायक की।। सुर मुनि . . .

पिंगलनयन, विशाल शुण्डधर, धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर।
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर, सुर-वन्दित सब विधिलायक की।। सुर मुनि . . .

● डॉ० रामदास शर्मा

"बेटे कच! तुम कहां हो? क्या बात है, आश्रम में इतना सन्नाटा क्यों है?" चारों ओर वायुमंडल से ध्वनियां उत्पन्न हुई और कहने लगीं– "गुरुदेव! आपके शिष्यों ने मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर उसे चारों ओर फेंक दिया है।" शुक्राचार्य ने पुनः संजीवनी विद्या का प्रयोग किया और . . .

संजीवनी विद्या

संजीवनी विद्या भारत की प्राचीन विद्याओं में से एक है। इस विद्या का आश्रय लेकर मृत व्यक्ति को भी जीवित किया जा सकता है। रामायण, भागवत्, महाभारत आदि ग्रंथों में संजीवनी विद्या के अनेकशः जीवंत उदाहरण प्राप्त होते हैं। रामायण के अनुसार– **"भगवान् श्री राम के भाई लक्ष्मण को जब मेघनाथ की शक्ति लगी थी, तब हनुमान जी ने हिमालय से संजीवनी जड़ी लाकर लक्ष्मण को नव जीवन प्रदान किया था।"** इसमें कोई संदेह नहीं, प्रकृति के प्रांगण में अनेक ऐसी औषधियां वनस्पति के रूप में विद्यमान हैं, जिनके उपयोग से मृतक-शरीर में भी प्राणों का संचार किया जा सकता है।

पौराणिक कथाओं में संजीवनी विद्या के विशेषज्ञ, दानवों के गुरु **"शुक्राचार्य"** को माना जाता है। शुक्राचार्य के सम्वन्ध में जो कथाएं प्राप्त होती हैं, उनके अवलोकन से तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति के उज्ज्वल कीर्तिमानों का इतिहास प्रकट होता है। देवताओं और दानवों के युद्धों गें जब कभी दानवों की मृत्यु होती थी, तो शुक्राचार्य संजीवनी विद्या का आश्रय लेकर अपने उन शिष्यों को जीवित कर दिया करते थे, और इस तरह दानवों की सेना का कभी पूर्ण संहार होता ही नहीं था। देवताओं के गुरु **"बृहस्पति"** ने निर्णय लिया, कि जो संजीवनी विद्या शुक्राचार्य के पास है, उसका ज्ञान देवताओं को भी होना चाहिए, और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने अपने पुत्र **"कच"** को शुक्राचार्य की सेवा करने के लिए स्वर्ग लोक से भेजा।

बृहस्पति पुत्र 'कच' जब शुक्राचार्य का शिष्यत्व ग्रहण करने के लिए उनके पास पहुंचा, तो शुक्राचार्य ने ब्राह्मण धर्म का निर्वाह करते हुए कच को अपने आश्रम में रहने की अनुमति प्रदान कर दी। कच एक आदर्श युवक था, उसने निष्ठा पूर्वक शुक्राचार्य की सेवा करनी आरम्भ कर दी और उनसे गुह्य विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करने लगा। शुक्राचार्य की एक ही बेटी थी– **'देवयानी'**, वह अत्यन्त सुन्दर थी। यद्यपि कच ने देवयानी के अप्रतिम सौन्दर्य की ओर कभी दृष्टिपात भी नहीं किया था, किन्तु देवयानी उसके पौरुष-सौंदर्य को देखकर मोहित हो गई और उससे मन ही मन प्रेम करने लगी।

जिस कालखंड की यह कथा है, उस समय **'वृषपर्वा'** असुरों का सम्राट था। उसे जब यह विदित हुआ कि बृहस्पति पुत्र कच संजीवनी विद्या प्राप्त करने देव लोक से आया है, तो उसने षड्यंत्र कर कच की हत्या करने का निश्चय किया। एक दिन जब कच निर्जन वन में भ्रमण कर रहा था, असुरों ने उसे पकड़ कर उसकी गर्दन काट दी।

संध्या का समय था। शुक्राचार्य अपने आश्रम में उपासना करने के लिए बैठे हुए थे, उन्होंने देखा कि कच कहीं नहीं है, तो पुकार उठे— **"देव पुत्र कच! तुम कहां हो?"** आश्रम के बाहर से आवाज आई— **"गुरुदेव! मैं यहां हूं।"** शुक्राचार्य ने पूछा— **"मुझे तुम दिखलाई क्यों नहीं दे रहे हो?"** आवाज ने उत्तर दिया— **"गुरुदेव! मुझे आपके असुर शिष्यों ने मार डाला है।"** शुक्राचार्य ने जब अपनी दिव्य-दृष्टि से देखा, तो वे सारा हाल समझ गए। उन्होंने तुरन्त संजीवनी विद्या का प्रयोग किया, जिसके प्रभाव से कच जीवित होकर गुरु के समक्ष उपस्थित हो गया।

दूसरे दिन आश्रम में असुरों ने जब देखा कि कच जीवित हो गया है और गुरु सेवा में तल्लीन है, तो वे चकित रह गए। असुर समझ गए, कि शुक्राचार्य ने संजीवनी विद्या के प्रयोग से कच की कटी हुई गर्दन जोड़ दी होगी और उसे नव जीवन प्रदान कर दिया होगा। असुरों ने कुछ निश्चय किया और सायंकाल होने की प्रतीक्षा करने लगे, उसी दिन सायंकाल जब किसी कार्यवश कच जंगल की ओर गया, तो असुरों ने उसे पुनः पकड़ कर मार डाला, और उसके शरीर की बोटी-बोटी काटकर पूरे पृथ्वीमंडल पर फेंक दी। इधर आश्रम में शुक्राचार्य ने कच को अनुपस्थित देखकर आवाज दी— **"बेटे कच! तुम कहां हो? क्या बात है, आश्रम में इतना सन्नाटा क्यों है?"** चारों ओर वायुमंडल से ध्वनियां उत्पन्न हुईं और कहने लगीं— **"गुरुदेव! आपके शिष्यों ने मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर उसे चारों ओर फेंक दिया है।"** शुक्राचार्य ने पुनः संजीवनी विद्या का प्रयोग किया और कच को जीवित कर दिया।

अब असुरों में खलबली मच गई, वे सोच नहीं पाए कि कच को किस प्रकार मारा जाए, जिससे कि वह संजीवनी विद्या लेकर देव लोक न जा सके? उस दिन उन्होंने कच को पकड़ा और उसकी हत्या कर उसके शरीर को जलाकर राख कर दिया, और उस राख को मदिरा में मिलाकर गुरु (शुक्राचार्य) को वह मदिरा पिला दी। असुर अब निश्चिन्त हो गए कि कच कभी जीवित नहीं हो सकेगा।

संध्या का समय था, शुक्राचार्य ने आश्रम में अपनी पुत्री देवयानी को अकेला देखकर उससे पूछा— **"पुत्री, आश्रम में इतना सन्नाटा क्यों है, कच कहां है?"** उसी समय शुक्राचार्य के पेट के भीतर से आवाज आई— **"गुरुदेव! मैं यहां हूं।"** शुक्राचार्य अब बड़ी उलझन में पड़ गए, उन्होंने सोचा, यदि मैं संजीवनी विद्या का प्रयोग करूंगा, तो कच मेरा पेट फाड़कर प्रकट हो सकता है। उन्होंने विवशता के स्वर में कहा— **"पुत्र! मैं क्या करूं? मैं संजीवनी विद्या का प्रयोग कर तुम्हें जीवित तो कर सकता हूं, किन्तु इससे मेरी स्वयं की मृत्यु हो जाएगी।"**

पेट के भीतर से कच की आत्मा ने कहा— **"गुरुदेव! आप मुझे संजीवनी विद्या का ज्ञान दीजिए, आपके प्रयोग से जब मैं आपका उदर विदीर्ण कर जीवित हो जाऊंगा, तो संजीवनी विद्या का प्रयोग करूंगा और आपको जीवित कर दूंगा।"** शुक्राचार्य ने सुझाव के अनुरूप उदरस्थ कच को संजीवनी विद्या का ज्ञान-दान किया, और फिर शुक्राचार्य ने जैसे ही कच को जीवित करने के लिए संजीवनी विद्या का प्रयोग किया, उनके पेट को चीर कर कच प्रकट हो गया, और सामने खड़ा हो गया।

कच यदि चाहता, तो निर्भय होकर संजीवनी विद्या लेकर देव लोक जा सकता था, किन्तु उसे तो अभी गुरु-दक्षिणा देनी थी। अपने गुरु से सीखी हुई विद्या का कच ने प्रयोग किया और शुक्राचार्य को जीवित कर दिया। पुराणों में यह कथा काफी लम्बी है। राजा ययाति के पूरे वंश का इतिहास यहीं से प्रारम्भ होता है। राजा ययाति वही थे, जिन्होंने अपने पुत्र से यौवन मांग लिया था, ताकि वे अधिक काल तक यौन-सुख भोग सकें।

गुरु शुक्राचार्य के जीवित होने के बाद बृहस्पति पुत्र कच ने उनसे विद्या मांगी। जिस उद्देश्य के लिए वह शुक्राचार्य के आश्रम में आया था, वह पूर्ण हो चुका था, अर्थात् संजीवनी विद्या का ज्ञान उसे प्राप्त हो चुका था। शुक्राचार्य ने सहर्ष अपने इस योग्य शिष्य को विदाई दी, किन्तु कच जब आश्रम से बाहर जा रहा था, तभी देवयानी उसे मिल गई, मुस्कराते हुए देवयानी ने कहा— **"देव पुत्र! तुम ब्राह्मण हो और मैं भी ब्राह्मण की कन्या हूं। मैं तुमसे प्रेम करती हूं, अतः तुम मुझसे विवाह कर लो।"**

कच हतप्रभ सा रह गया। उसने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था, कि देवयानी उसके सामने इस तरह का प्रस्ताव रखेगी। उसने बड़ी विनम्रता से कहा— **"देवी! तुम गुरु-पुत्री हो, इस नाते तुम मेरी भगिनी हो जाती हो, अतः तुमसे मैं विवाह के बारे में सोच भी नहीं सकता।"**

देवयानी क्रुद्ध नागिन की तरह फुंफकार उठी और बोली— **"ब्राह्मण! तूने मेरे नारीत्व का अपमान किया है। जा, मैं तुझे शाप देती हूं, मेरे पिता से जो संजीवनी विद्या तुमने सीखी है, वह तुम्हें इसी क्षण से विस्मृत हो जायेगी।"**

शुक्राचार्य के आश्रम में कच ने जो परिश्रम किया था, वह सब व्यर्थ हो गया। उसे भी क्रोध आ गया, और उसने शाप के बदले शाप देते हुए देवयानी से कहा— **"ब्राह्मणी! जा, तेरा भी विवाह किसी ब्राह्मण पुत्र से कदापि नहीं होगा।"**

दोनों के ही शाप सच हुए। कच उसी क्षण संजीवनी विद्या भूल गया, और ऐसी परिस्थितियां निर्मित हुईं, कि देवयानी को क्षत्रिय राजा से विवाह करना पड़ा।

मनुष्य के मस्तिष्क में उत्पन्न होते विचार सदैव से परिवर्तनशील रहे हैं तथा सुख-दुःख, प्रेम-घृणा, रिश्ते-नाते सब इन्हीं विचारों की जीवंत अनुभूतियां हैं। जीव-जगत् में दुःखों का, कष्टों का, प्रसन्नता का, आनन्द का अलग से कोई अस्तित्व नहीं होता, यह तो एक चेतना मात्र है, एहसास मात्र है, जिसे केवल चैतन्य, जीवित-जाग्रत प्राणी ही अनुभव कर सकता है, क्योंकि वैचारिक अनुभूतियों का जड़-जगत् के लिए कोई अस्तित्व नहीं होता।

जो चेतन है, जो सजीव है, जिसमें प्राणों का संचार है, वह इन संचारी भावों से मुक्त नहीं हो सकता, क्योंकि इन्हीं संचारी भावों की प्रबलता से चेतना की, जीवन की उत्पत्ति हुई है।

मनुष्य को पल-पल में होते एहसास इन्हीं संचारी भावों की प्रबलता का परिणाम हैं। जब ये भाव मानव को

"सम्मोहन को लेकर आज समाज में बहुत सी भ्रामक धारणाएं बनी हुई हैं। सम्मोहन आज जन-मानस में भयप्रद बना हुआ है, व्यक्ति समझता है कि सम्मोहन को जानने वाला कुछ भी गलत कर सकता है, जबकि ऐसा सम्भव नहीं है, इसके पीछे अत्यन्त गूढ़ रहस्य व चिन्तन छिपे हुए हैं।"

जकड़ लेते हैं, तब मानव एक अजीब सी पीड़ा, जिसे परेशानियों की, कष्टों की, बाधाओं की संज्ञा से सम्बोधित किया गया है, अनुभव करने लग जाता है।

मनुष्य द्वारा निर्मित रिश्ते-नाते, माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी इन्हीं संचारी भावों एवं विचारों का ही परिणाम हैं। यदि किसी मनुष्य के मस्तिष्क में एक विचार उत्पन्न होता है कि अमुक स्त्री मेरी पत्नी है, तो वह उस स्त्री को अपनी पत्नी स्वीकार करने लगता है, और अगर उसी क्षण उसकी चेतना लुप्त हो जाए अथवा स्मरण शक्ति खो जाए, तब ये सम्बन्ध भी खो जाते हैं, अर्थात् ये सभी सम्बन्ध विचारों के साथ ही समाप्त होने वाले हैं।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि इस जीव-जगत् में मुख्य शक्ति **'वैचारिक शक्ति'** है, जिसे विद्वानों ने, योगियों ने, ऋषियों ने मनःशक्ति के रूप में स्वीकार किया है।

जब व्यक्ति इस मनःशक्ति के अधीन होता है, तब वह एक सांसारिक प्राणी कहलाता है और अनेक प्रकार के कष्टों को, दुःखों को अनुभव करता हुआ एक दिन समाप्त हो जाता है, और जो मनःशक्ति को अपने अधीन कर लेता है, वह प्रज्ञावान एवं चेतनायुक्त व्यक्तित्व बन जाता है।

इस मनःशक्ति पर नियन्त्रण स्थापित करना इतना सरल नहीं है, जितना की कहने-सुनने में प्रतीत होता है। अध्यात्म का मूल रहस्य इसी शक्ति पर आधारित है। जब व्यक्ति इस शक्ति पर नियंत्रण स्थापित करने लगता है, तब वह धीरे-धीरे अजेय होने की स्थिति में आ जाता है, वह विजयी होने लगता है तथा जीवन को नवीन आयाम प्रदान करने में सक्षम हो जाता है।

उसके लिए संसार में फिर कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता, क्योंकि तब वह 'देह तत्व' से ऊपर उठकर 'प्राण तत्व' में प्रवेश करने की क्रिया करने लगता है। स्थूल वस्तुएं उसे अत्यन्त ही तुच्छ प्रतीत होने लगती हैं, वह 'ईश्वरीय तत्व' का अनुभव करने लगता है, और स्वयं देव तुल्य बनकर देवताओं से साक्षात्कार करने लग जाता है।

यही उच्च अवस्था एक साधक के लिए आवश्यक है, और आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य भी है, क्योंकि तभी वह साधनाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है, अपना अभीष्ट सिद्ध कर सकता है, और वह सभी कुछ प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है, जो उसके भौतिक जीवन के लिए आवश्यक है। धन, वैभव, ऐश्वर्य, सुख, मान-सम्मान, ज्ञान और आध्यात्मिक जीवन की उच्चता, फिर सभी कुछ उसके लिए सहज हो जाता है।

इस मनःशक्ति को नियन्त्रण में लेने की सरल व प्राचीन तथा शास्त्र सम्मत विधि है "सम्मोहन साधना"। सम्मोहन शब्द अपने-आप में जाना-पहिचाना व प्रचलित शब्द है। अंग्रेजी में इसे "हिप्नोटिज्म" के नाम से भी जाना जाता है।

सम्मोहन को लेकर आज समाज में बहुत सी भ्रामक धारणाएं बनी हुई हैं। सम्मोहन आज जन-मानस में भयप्रद बना हुआ है, व्यक्ति समझता है कि सम्मोहन को जानने वाला कुछ भी गलत कर सकता है, जबकि ऐसा सम्भव नहीं है, इसके पीछे अत्यन्त गूढ़ रहस्य व चिन्तन छिपे हुए हैं। जब कोई व्यक्ति 'सम्मोहन साधना' में सफलता प्राप्त कर लेता है, तथा अपनी मनःशक्ति पर नियंत्रण कर अपने विचारों को नियन्त्रित कर लेता है, तब उसका मानस विचार शून्यता की अवस्था को प्राप्त कर लेता है, और विचार शून्यता की अवस्था में उसके मानस में वे ही विचार प्रबल होते हैं, जो सृजनात्मक हैं।

सृजनात्मक विचारों के द्वारा ही इस धरा को वसन्तमय बनाया जा सकता है, और प्रत्येक प्राणी मात्र का उपकार व कल्याण किया जा सकता है, एक नवीन चेतना, उमंग, जोश तथा नए आयाम इस समाज को दिए जा सकते हैं, जिनका कि आज इस समाज में, मानव चेतना में सर्वथा अभाव दिखाई देता है।

सम्मोहन ज्ञाता यदि अपने मानस में कुविचारों को आने देता है अथवा विनाशात्मक विचारों को उत्पन्न करता है, तो उसी क्षण से उसकी सम्मोहन शक्ति का ह्रास होने

लगता है, उसकी सम्मोहन साधना का प्रभाव कमजोर पड़ने लगता है, और कोई भी सम्मोहन कर्ता यह नहीं चाहेगा कि कठिन साधना कर प्राप्त की गई सम्मोहन शक्ति को व्यर्थ गंवा दिया जाए, अतः सम्मोहन से मानव का, इस समाज का कोई अपकार होगा, ऐसा तो विचार करना भी अपने-आप में हास्यास्पद है।

सम्मोहन साधना को सम्पन्न करने वाला व्यक्ति निरन्तर जीवन में आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति प्राप्त करता ही है, साथ ही जो समाज का, अपने देश का, इस मानव जाति का कल्याण करने की भावना रखते हैं, उनके लिए तो यह साधना वरदान स्वरूप है।

सम्मोहन साधना की आवश्यकता–

१. प्रत्येक साधना में सफलता प्राप्ति हेतु।
२.आत्म-विश्वास में वृद्धि हेतु।
३.लोक-कल्याण की भावना की पूर्ति हेतु।
४.समाज में व्याप्त कुविचारों से स्वयं की रक्षा हेतु।
५.जीवन में सर्वोन्नति प्राप्त करने हेतु।
६.शत्रुओं पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने हेतु।
७.प्रकृति से अनुकूलता प्राप्त करने हेतु।
८.अध्यात्म में पूर्णता प्राप्ति हेतु।

इसके अलावा भी सम्मोहन साधना के अनेक लाभ हैं, अतः प्रत्येक साधक, शिष्य व कोई भी व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष उसे इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए, जिससे कि उसे जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सके, जो उसके लिए अति आवश्यक है।

साधना विधि

इस साधना के लिए जिन सामग्रियों की आवश्यकता होती है, वे इस प्रकार हैं–

१. प्राण-प्रतिष्ठित सम्मोहन यंत्र
२. सम्मोहन माला
३. सम्मोहन गुटिका
४. शक्ति चक्र

उपरोक्त सामग्रियों को साधक साधना प्रारम्भ करने से पूर्व ही प्राप्त कर लें, जिससे कि साधना काल में साधक को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

यह साधना प्रातः या सायं साधक कभी भी अपनी सुविधानुसार कर सकता है। सर्वप्रथम साधक स्नान कर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें, इसके बाद पूर्व दिशा में एक लकड़ी का बाजोट स्थापित कर, उस पर पीला आसन बिछा कर साधना-सामग्री को स्थापित करें। साधक गुरुनामी

''सम्मोहन साधना से मन में एकाग्रता बढ़ती है और मनःशक्ति पर नियंत्रण स्थापित होता है, जिससे स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है, और यह विद्यार्थी जीवन में भी लाभदायक सिद्ध होती है।''

दुपट्टा ओढ़ कर स्वयं भी पीले आसन पर ही बैठें।

किसी ताम्रपात्र अथवा स्टील की प्लेट में **''सम्मोहन यंत्र''** स्थापित कर, उसके मध्य में **''सम्मोहन गुटिका''** को स्थापित करें तथा धूप, दीप, अक्षत, पुष्पादि से यंत्र एवं गुटिका का पूजन करें।

यह पूजन सम्पन्न करने की क्रिया पूर्ण एकाग्रता के साथ करें, तथा अपनी उचित भावनाओं का संकल्प लेकर जल को भूमि पर छोड़ दें, और चार माला गुरु मंत्र का जप करें। साधक के लिए प्रतिदिन **''शक्ति चक्र''** पर १० मिनट त्राटक का अभ्यास करना आवश्यक है।

इसके पश्चात् **''सम्मोहन माला''** से ११ दिन तक नित्य ३ माला निम्न मंत्र का जप करें–

मंत्र

ॐ ह्रौं अमुकं सम्मोहनाय फट्

उपरोक्त मंत्र में ''अमुकं'' के स्थान पर सर्वजन अथवा किसी व्यक्ति विशेष के लिए प्रयोग किया जा रहा हो, तो उसका नाम लें। ११ दिन के पश्चात् साधक समस्त सामग्री को किसी नदी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दें, तथा पत्र अथवा टेलीफोन द्वारा पूज्य गुरुदेव को अपनी साधनात्मक अनुभूतियां बताकर आशीर्वाद प्राप्त करें।

साधना समाप्ति के पश्चात् भी ''शक्ति चक्र'' पर नित्य त्राटक का अभ्यास करना चाहिए, इससे सम्मोहन शक्ति बढ़ती है। इस अभ्यास के अन्तर्गत साधक को अपलक शक्ति चक्र के मध्य बिन्दु पर दृष्टिपात करना होता है।

प्रारम्भ में यह अभ्यास एक या दो मिनट तक ही सम्भव हो सकेगा, लेकिन निरन्तर अभ्यास के बाद कोई भी व्यक्ति ३२ मिनट का त्राटक पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न कर सकता है। साधकों को इस बात का विशेष ध्यान रखना है कि वे इस त्राटक क्रिया में पलकें न झपकायें, आंखों में पानी आने लगे अथवा दर्द होने लगे, तो साधक अपनी आंखों को ठंडे पानी से धो लें, तथा कुछ समय विश्राम कर, फिर यह अभ्यास करें।

ऐसा करने से निश्चय ही सम्मोहन साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

विशेष
तंत्र रक्षा कवच
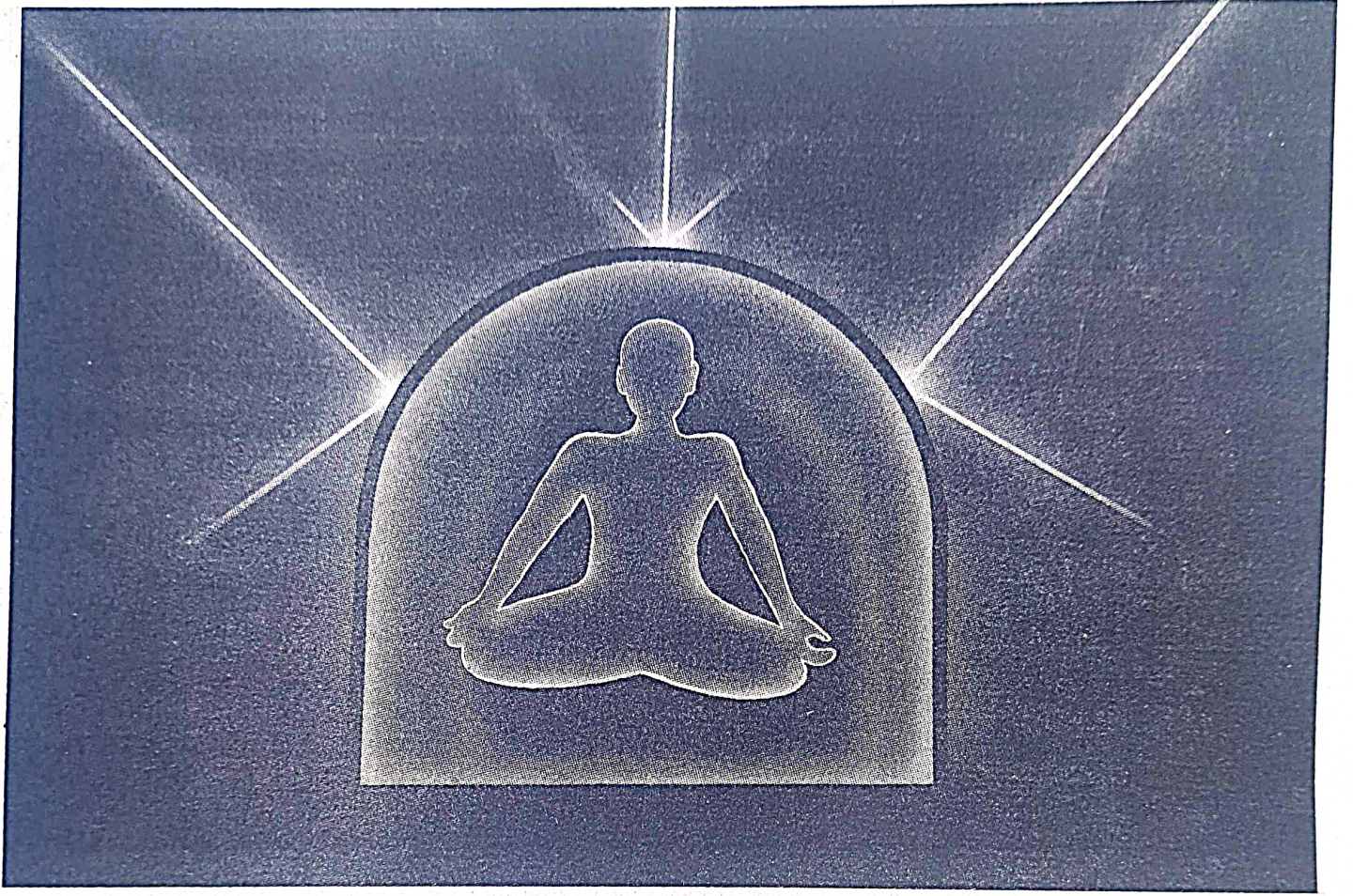
जव जीवन में विष घुल जाता है और समस्याओं के
हल सही नहीं सूझते. . .यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाए

* कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
* शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
* पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति वनना
* विवाह में वात वन - वनकर विगड़ जाए
* घर या किसी निर्माण कार्य में वात न वन पाना
* ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
* निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता चला जाना
* बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों

या फिर झगड़े- झंझटों में वार- वार फंस जाना, मुकदमेबाजी, जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।**

संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - ११०००/- मात्र) जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

पर आप इससे बच सकते हैं।

जरा सोचिए, हर बीमारी का मूल कारण क्या है? एकाएक होने वाली घटनाएं जीवन में उथल-पुथल मचा देती हैं, यदि मनुष्य इन समस्याओं से घिरा है, तो वह अपने शरीर में अनेक बीमारियों को निमंत्रण दे रहा है, और यह निमंत्रण है मौत को!

– क्या मृत्यु को परे धकेलना आपके हाथ में है?

– क्या आप स्वयं इन समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं?

– क्या आप स्वयं रोगों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं?

– यदि नहीं! तो फिर आपको एक ऐसे उपाय की आवश्यकता है, जो आपको पूर्णतः निरोगी तथा स्वस्थ बनाए, और उस तत्व से मुक्त कर जीवन के सुखद क्षणों का एहसास करा दे, जिसे कहते हैं. . . मानसिक तनाव! आप इसके बारे में सोचें जरूर. . .पर इतना नहीं, कि और तनाव उत्पन्न हो जाय।

आज हर व्यक्ति रोगग्रस्त, पीड़ित व दुःखी दिखाई देता है, और इसका कारण है ''मानसिक तनाव''। जब तक व्यक्ति इस तनाव से छुटकारा नहीं पा लेता, तब तक वह सुखी एवं समृद्ध जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। आज ९५ प्रतिशत बीमारियां इसी तनाव के कारण ही पैदा होती हैं, क्योंकि शरीर का सीधा सम्बन्ध मन से होता है, और इसका मन से तादात्म्य होने के कारण ही ये रोग स्वतः शरीर पर आक्रमण करने लगते हैं, जो कि व्यक्ति को रोगी बना देते हैं, और फिर वह जगह-जगह उन रोगों के उपचार के लिए भटकता-फिरता है।

मानव-मस्तिष्क में एक सेकण्ड में तीन लाख विचार एक साथ कौंधते हैं, इसलिए मनुष्य का तनाव ग्रस्त रहना भी स्वाभाविक है। ये विचार यदि अच्छे हों, तो व्यक्ति के लिए सुखदायक होते हैं, और यदि बुरे हों, तो यही दुःखदायक हो जाते हैं, क्योंकि विचारशील मस्तिष्क के भ्रमण करने से तथा विचारों में आबद्ध रहने से उसे पग-पग पर तनाव ही मिलता है, और वह चाहकर भी उस तनाव से बच नहीं पाता, क्योंकि जीवन की छोटी-छोटी परेशानियां उसके तनाव का कारण बन जाती हैं, जैसे-

– यदि बिजली चली गई, तो तनाव!
– यदि पानी बंद हो गया, तो तनाव!
– यदि किसी ने स्वयं के विचारों के विपरीत कोई बात कह दी, तो तनाव!
– यदि कोई काम नहीं हो पाया, तो तनाव!
– पारिवारिक झगड़ों के कारण तनाव!
– यदि कपड़े अच्छे नहीं पहिने, तो तनाव!
– खाना नहीं खाया, तो तनाव!
– कहीं जा नहीं सके, तो तनाव!
– शहर में कर्फ्यू लग गया, तो तनाव!
– यदि ट्रैफिक जाम हो जाए, तो तनाव!

इस प्रकार हर छोटी-बड़ी बात व्यक्ति के मस्तिष्क को तनाव ग्रस्त कर देती है, न तो उसका कोई कारण समझ में आता है और न ही कोई प्रकार या रूप। यह तो स्वतः ही बिना किसी कारण उत्पन्न होने वाले तनाव हैं, जो मानव-मस्तिष्क को अपने शिकंजे में जकड़े रहते हैं, और उसे स्वतंत्र नहीं रहने देते तथा व्यक्ति चाहकर भी इन सबसे

छुटकारा नहीं पा सकता, किन्तु इसके लिए कोई न कोई उपाय तो उसे करना ही चाहिए, जिससे कि वह कुछ क्षणों के लिए ही सही सुख पूर्वक जी सके, क्योंकि ये मानसिक तनाव व्यक्ति के शरीर को अंदर ही अंदर खोखला कर मृत्यु को आमंत्रण देने लगते हैं।

बड़े-बड़े विशेषज्ञ चिकित्सक इस बात को मानने के लिए बाध्य हैं, कि सभी बीमारियां चाहे वह "सिर दर्द" हो या "आरथ्राइटिस", "हार्ट अटैक" हो या "कैंसर", किसी भी प्रकार की "एलर्जी" हो या त्वचा से सम्बन्धित कोई अन्य समस्या, ये सभी मानसिक तनाव से ही पैदा होती हैं, जिससे यदि छुटकारा पाना है, तो सर्वप्रथम मानसिक तनाव को दूर करना होगा।

चिकित्सकों के अनुसार— **"व्यक्ति को यह पता ही नहीं होता, कि वह क्यों दुःखी है? क्यों मायूस है? क्यों उसके अंदर इतना चिड़चिड़ापन भर गया है? क्यों उसे इतना अधिक क्रोध आने लग गया है? इन सब का कारण वह स्वयं समझ नहीं पाता, किन्तु जिस दिन वह इन सब बातों को जान जायेगा, जिस दिन वह अपने मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण पा लेगा, जिस दिन वह तनाव मुक्त हो जायेगा, उसी दिन से वह मानसिक रूप से तो स्वस्थ होगा ही, साथ ही शारीरिक रूप से भी पूर्णतया स्वस्थ और सेहतमंद दिखाई देने लगेगा।"**

जिन्दगी के तनाव पूर्ण दौर से गुजरते हुए व्यक्ति को कई अप्रत्याशित दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ जाता है, क्योंकि तनाव ग्रस्त होने के कारण वह अपने कार्यों पर पूरा ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता, जिसके फलस्वरूप उसमें सही ढंग से सोचने और निर्णय लेने की क्षमता भी शिथिल पड़ जाती है, और वह मानसिक असंतुलन के कारण सुचारु रूप से कार्य न कर पाने पर किसी न किसी दुर्घटना का शिकार अवश्य हो जाता है।

तनाव के परिणाम स्वरूप होने वाली विभिन्न बीमारियां

सिर दर्द –

इस दर्द का कारण गले या कपाल की मांस पेशियां होती हैं, जिनमें चिंता या परेशानी से तनाव की स्थिति में आते ही एक गांठ सी पड़ जाती है, जिसके फलस्वरूप सिर में दर्द शुरू हो जाता है। यह दर्द कभी कुछ क्षणों का, कभी कुछ घंटों का या फिर कुछ दिनों या महीनों का भी हो सकता है, क्योंकि जब तक वह चिंता या परेशानी, जिसके कारण तनाव उत्पन्न हुआ है, समाप्त नहीं होगी, तब तक यह बरकरार रहेगा।

पीठ दर्द –

यदि हम ध्यान दें, तो भारी तनाव रहने से पीठ की मांस पेशियां तन जाती हैं, जिसके कारण उनमें दर्द होने लगता है, तथा दर्द होने के कारण व्यक्ति को हर क्षण खतरा बना रहता है, क्योंकि अनेक दुर्घटनाओं के होने पर सर्वप्रथम पीठ पर ही चोट पहुंचती है, और यह सब तनाव के कारण ही होता है।

बाल सफेद होना –

छोटी उम्र में ही बालों का सफेद होना या उनका अधिक मात्रा में झड़ना, यह सब मानसिक तनाव के कारण ही होता है, इसके सन्दर्भ में चिकित्सा विशेषज्ञों का कहना है, कि—

"तनाव के कारण त्वचा के टिश्यूज में होने वाला रक्त-प्रवाह रुक जाता है, जिससे आवश्यक अनुपात में रक्त बालों की जड़ को नहीं मिल पाता, और बालों में सफेदी आने लगती है। बालों में रूसी होने का कारण भी मानसिक तनाव ही है।"

तनाव के कारण सिर में एक प्रकार की बीमारी होने लगती है, जिसे **"ऐलोपेसिया एरीएटा"** कहते हैं, जिसके होने से सिर में जलन महसूस होने लगती है और उस स्थान से बाल झड़ने लग जाते हैं।

चेहरे पर मुंहासे –

तनाव चेहरे को कांतिहीन बना देता है, जिस कारण चेहरा उदास और मुरझाया हुआ सा दिखाई देने लगता है, तथा चेहरे पर कई प्रकार के दाने या मुंहासे निकल आते हैं, जो चेहरे को भद्दा तथा आकर्षणहीन बना देते हैं।

इसका कारण भी शारीरिक गड़बड़ी न होकर मानसिक तनाव ही होता है, जिस कारण ये दाने उभर कर चेहरे पर आ जाते हैं।

व्यक्ति केवल मानसिक तनाव के कारण ही इन रोगों को जन्म देता है, और शारीरिक रूप से घातक बीमारियों का शिकार हो जाता है, जो बीमारियां उसे मृत्यु की ओर धकेल कर ले जाती हैं।

वैसे तो सभी बीमारियों की जड़ तनाव ही है, जो शरीर को रोगग्रस्त बना देता है, और अनेक घातक

बीमारियों का केन्द्र बन जाता है मानव-शरीर, किन्तु स्थानाभाव के कारण यहां सभी बीमारियों का विवरण देना सम्भव नहीं है, अतः कुछ एक बीमारियों का ही वर्णन किया जा रहा है—

कैंसर : एक घातक रोग

शोध कर्ताओं और विभिन्न विशेषज्ञों का यह मत है, कि अपने भावों को व्यक्त न कर पाने अथवा अपने को हीन या लाचार समझ बैठने की स्थिति में मानव के अन्तःमन में भाव दबे रह जाते हैं, जो उसे रोगी बना देते हैं, और इससे व्याप्त, जो चिढ़न या क्रोध होता है, वह बाहरी रूप से व्यक्त न हो पाने के कारण कैंसर का रूप ले लेता है, अतः इस दबी हुई भावना और क्रोध के कारण मनुष्य-शरीर में एक कोशिका या अन्य कोशिकाओं के समूह का असामान्य विकास ''कैंसर'' कहलाता है।

अतः मन में किसी प्रकार की बेचैनी, डर या भय और प्रतिरोधक क्षमता में कमी कैंसर को बढ़ावा देती है।

तनाव ग्रस्त व्यक्ति हृदय रोग का शिकार –

दिल अथवा हृदय का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है, जब दिल और दिमाग दोनों सुचारु रूप से कार्य करें, तो व्यक्ति हृदय रोग की समस्याओं से बचा रहता है, और यदि **''कोलेस्ट्रॉल''** के अधिक बढ़ने या मस्तिष्क की धमनियों में रुकावट आ जाय, तो वह व्यक्ति हृदय रोग से पीड़ित हो जाता है।

हृदय रोग का प्रमुख कारण भी अत्यधिक क्रोध या धीरज की कमी होना है, जो व्यक्ति को दिल का मरीज बना देता है।

हाई ब्लड प्रेशर –

मानसिक और भावनात्मक तनाव के कारण शरीर में **''एड्रेनालिन''** का स्राव होता है, जिसके कारण दिल की धड़कन बढ़ जाती है और रक्त नलिकाएं सिकुड़ जाती हैं, तथा अधिक क्रोध भी ''हाई ब्लड प्रेशर'' को बढ़ावा देता है।

अल्सर का कारण तनाव

हर क्षण मनुष्य परेशानी, चिन्ताओं और उत्तेजनाओं से भरा रहता है, अतः इन विषम स्थितियों के कारण अल्सर जैसा रोग अधिकतर लोगों में पाया जाता है, क्योंकि लगातार चिन्ताएं बने रहने के कारण **''अमाशयिक रसों''** का अधिक स्राव बढ़ जाता है, जो पेट की अन्दरूनी परत **''ड्योडीनम''** में घाव पैदा करता है, इसलिए अमाशय में होने वाले घावों के बनने में तनाव की अहं भूमिका होती है, क्योंकि ये घाव तनावों के कारण अत्यन्त गम्भीर अवस्था में पहुंच जाते हैं, अतः जीवन में अत्यधिक व्यस्तता तथा अतिविशिष्ट तनाव के कारण शरीर में ''अल्सर'' जैसे रोग अपनी जड़ जमा लेते हैं।

काम-शक्ति का क्षीण होना –

तनाव का व्यक्ति की काम-शक्ति पर भी बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति मानसिक तनाव के कारण हार्मोन्स में विपरीत बदलाव तथा नपुंसकता और वीर्य की कमी जैसी बहुत बड़ी-बड़ी समस्याओं को पाल लेता है, जो कामेच्छा को खत्म कर देती हैं, क्योंकि शरीर में मानसिक तनाव के कारण **'टेस्टेरॉन'** की कमी हो जाने से उन व्यक्तियों में उस समय काम-शक्ति नहीं रहती, और जब वह मानसिक तनाव पूरी तरह समाप्त हो जाता है, तो 'टेस्टेरॉन' का यह स्तर अपनी सामान्य अवस्था में आ जाता है।

यदि मानसिक तनाव नहीं, तो बीमारी भी नहीं!

चिकित्सा विशेषज्ञों और शोध कर्ताओं की जांच से और उनके द्वारा मिलने वाले परिणामों से यह ज्ञात होता है, कि **''सभी शरीर से सम्बन्धित रोग मानसिक तनावों के कारण ही पैदा होते हैं, जब तक व्यक्ति का मानसिक तनाव दूर नहीं होगा, तब तक वह शारीरिक रोगों से भी मुक्त नहीं हो सकता, क्योंकि इन रोगों की मूल जड़ ही मानसिक तनाव है।''**

अतः जहां तनाव होगा, वहां बीमारियां होंगी ही,

चाहे वे छोटी हों या बड़ी हों। इससे यह ज्ञात होता है, कि स्वस्थ मनोभावना के द्वारा एक हृष्ट-पुष्ट शरीर का निर्माण किया जा सकता है, तथा इन शारीरिक रोगों से, जो कि तनाव के कारण ही पैदा होते हैं, छुटकारा पाया जा सकता है, किन्तु यह मनुष्य के स्वयं के बस की बात नहीं है, क्योंकि व्यक्ति प्रतिपल परेशानियों और व्यस्ततापूर्ण जीवन जीने के कारण चिंता व तनाव ग्रस्त रहता ही है, वह चाहकर भी इन तनावों से मुक्त नहीं हो सकता, और जब ऐसा नहीं कर सकता, तो वह अपने शरीर में अनेक बीमारियों को जन्म देकर मृत्यु को आमंत्रण देता है।

इसीलिए मनुष्य के लिए यह आवश्यक है, कि वह सर्वप्रथम इन तनावों को दूर करे, क्योंकि यदि तनाव बीमारी का कारण हैं या उसकी वृद्धि में सहायक हैं, तो इसके विपरीत मस्तिष्क बहुत ही सशक्त ढंग से उन्हें ठीक कर सकता है।

मानसिक तनावों को दूर करने का उपाय

शारीरिक रोगों से छुटकारा पाने के लिए मस्तिष्क का पूर्ण स्वस्थ होना आवश्यक है, जो कि किसी आयुर्वेदिक औषधि या जड़ी-बूटी का सेवन करने से सम्भव नहीं है, अनेक चिकित्सक इस तनाव को दूर करने के लिए ज्यादा से ज्यादा नींद की दवा उस रोगी को देकर सुला देते हैं, जिससे कि वह रोगी पूर्ण मानसिक तनाव से मुक्त तो नहीं हो पाता है, किन्तु कुछ क्षणों के लिए उसका मस्तिष्क कार्य करना अवश्य बंद कर देता है, और व्यक्ति वापिस चैतन्यावस्था में आकर उस रोग का शिकार बना रहता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि दवाओं या अन्य चीजों के सेवन व व्यायाम आदि से भी यदि इस रोग से मुक्ति नहीं मिलती, तो ऐसा कौन-सा उपाय है, जो पूर्णरूप से मानसिक तनाव को खत्म कर शरीर को पूर्ण स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट बना सकता है? **इन सभी प्रश्नों का एक ही हल है– ''वांछा कल्पलता दीक्षा।''**

इस दीक्षा को प्राप्त कर व्यक्ति पूर्ण मानसिक तनाव से छुटकारा पा सकता है, और तब वह स्वस्थ शरीर व स्वस्थ भावनाओं दोनों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है। यह दीक्षा दो प्रकार की होती है–

१. शक्तिपात युक्त वांछा कल्पलता दीक्षा

२. सात चरण युक्त वांछा कल्पलता दीक्षा

१. शक्तिपात युक्त वांछा कल्पलता दीक्षा

इस दीक्षा के माध्यम से व्यक्ति को उन रोगों से मुक्ति मिल जाती है, जो रोग अपनी प्रथमावस्था में होते हैं।

२. सात चरण युक्त वांछा कल्पलता दीक्षा

इस दीक्षा के सात चरण होते हैं। साधक या व्यक्ति इसके सातों चरणों को प्राप्त करने पर अपने जीवन की समस्त परेशानियों, चिन्ताओं तथा मानसिक तनावों से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्ति पा लेता है, फिर उसके जीवन में कोई दुःख या पीड़ा शेष रह ही नहीं सकती, क्योंकि उससे उसका मानसिक तनाव तो खत्म होगा ही, साथ ही शारीरिक अस्वस्थता, जो कि विभिन्न रोगों व तनाव के कारण उत्पन्न होती है, वह भी खत्म हो जाएगी, जिसके फलस्वरूप मनुष्य जानलेवा एवं प्राणघातक बीमारियों से भी निजात पा सकता है, और फिर वह निरोगी अर्थात् तनाव से मुक्त होकर जीवन के सुखद क्षणों का एहसास कर सकता है।

मानसिक तनाव मंत्रश्चेतना युक्त विशेष शक्तिपात से ही दूर किया जा सकता है, क्योंकि गुरु अपनी प्राण-ऊर्जा के माध्यम से उसके मस्तिष्क में कुछ विशेष प्रकार की किरणों का दीक्षा के माध्यम से समावेश करते हैं, जिससे कि वे किरणें उसके मस्तिष्क से जा टकराती हैं, और उस ऊर्जा-शक्ति के बल पर ही उसके मस्तिष्क का सारा विषाद, सारा तनाव दूर होने लगता है। फिर उसके भीतर से मानसिक तनाव के कारण नष्ट हो जाने पर वह मानसिक रूप से तो स्वस्थ होता ही है, साथ ही उसकी शारीरिक व्याधियां भी दूर होने लगती हैं, किन्तु इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है, कि उस व्यक्ति में दीक्षा व गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा हो, जिसके फलस्वरूप रोगी का मस्तिष्क बहुत ही सजग और सुचारु रूप से कार्य करने लगेगा तथा उस दीक्षा से मिलने वाले लाभ उसे आश्चर्यचकित कर देने वाले सिद्ध होंगे।

''सात चरण युक्त वांछा कल्पलता दीक्षा'' के सातों चरणों को एक साथ भी लिया जा सकता है, तथा अपनी सुविधानुसार अलग-अलग चरण में भी इस दीक्षा को ग्रहण किया जा सकता है। यह एक विशेष प्रकार की श्रेष्ठतम दीक्षा है, जिसे प्राप्त करना मनुष्य-जीवन का सौभाग्य ही कहा जा सकता है।

विश्व की सर्वश्रेष्ठ साधना

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

गायत्री साधना

पद्मपुराण के अनुसार — "गायत्री देवी सांख्यायन गोत्र में उत्पन्न हुई हैं, तीनों लोक उनके चरण हैं, पृथ्वी उनके उदर में स्थित है, और पैर से मस्तक तक शरीर के चौबीस स्थानों में गायत्री के चौबीस अक्षरों का न्यास करके साधक ब्रह्म लोक को प्राप्त होता है, तथा प्रत्येक अक्षर के देवता का ज्ञान प्राप्त करने से उसे विष्णु का सायुज्य मिलता है।"

भारतीय परम्परा में गायत्री परम उपास्या रही हैं और सद्बुद्धि एवं सद्विचारों की प्रदातृ के रूप में उपादेय हैं। इस साधना पद्धति से बुद्धि का विकास, आत्मिक शक्तियों को बढ़ाने का यह साधन सरलतम सोपान माना गया है, इसीलिए गायत्री उपासना का अधिकाधिक वेदों में उल्लेख पाया जाता है, अतः इसे "वेद माता" की संज्ञा भी दी गई है।

गायत्री मंत्र मन को सबल बनाने का अमोघ अस्त्र कहा गया है, इस मंत्र-शक्ति के द्वारा ही बड़े-बड़े महात्मा, ऋषि, महर्षि से लेकर गृहस्थ साधक भी अपने जीवन को ऊंचा उठाने में समर्थ हुए हैं। पुराणों में उल्लेख है कि "यह मंत्र किसी के द्वारा रचित नहीं है, अपितु स्व निर्मित है। ब्रह्मा जी को यह स्पष्ट निर्देश हुआ था, कि गायत्री साधना से ही सृष्टि-निर्माण की क्षमता प्राप्त होगी, इसके पश्चात् ब्रह्मा जी ने स्वयं इस कठिन गायत्री साधना को सम्पन्न कर, उससे शक्ति उपार्जित की और वे सृष्टि निर्माण में समर्थ हुए।"

गायत्री देवी का वर्ण शुक्ल, मुख अग्नि तथा ऋषि विश्वामित्र हैं, इसी साधना के बल पर विश्वामित्र ने इन्द्र को परास्त कर एक नई सृष्टि का निर्माण किया था।

वैज्ञानिक दृष्टि से यह गायत्री साधना अत्यंत ही कल्याणकारी सिद्ध हुई है। गायत्री मंत्र में जिन चौबीस अक्षरों का समावेश है, उन्हें दिव्य शक्तियों का समूह माना गया है, तथा इन्हें

दिव्य शक्तियों का स्थिति-स्थान भी कहा गया है। गायत्री के चौबीस अक्षरों में पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच प्राण, पांच विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) तथा मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार ये चौबीस तत्त्व भी इन्हीं में समाहित हैं। इन चौबीस अक्षरों से साधना के द्वारा जीवात्मा में चौबीस शक्तियां उत्पन्न मानी गई हैं। गायत्री के चौबीस अक्षरों में क्रमशः निम्न चौबीस देवताओं का निवास माना गया है—

१. तत्-अग्नि, २. स - वायु, ३. वि - सूर्य, ४. तुर् - विद्युत्, ५. व - यम, ६. रे - वरुण, ७. णि - वृहस्पति, ८. यम् - पर्जन्य, ९. भ - इन्द्र, १०.र्गो-गन्धर्व, ११. दे - प्रणव, १२. व - मित्रावरुण, १३. स्य-त्वष्टा, १४. धी - चसु, १५. म - मरुत्, १६. हि - सोम, १७. धि - अंगिरस १८. यो - विश्वेदेवा, १९. यो - अश्विनी कुमार, २०. नः - प्रजापति, २१. प्र - सर्वदेव, २२. चो - रुद्र, २३. द - ब्रह्मा, २४. यात् - विष्णु।

गायत्री साधना के माध्यम से साधक का, शरीर में विद्यमान इन चौबीस देवताओं के साथ सम्बन्ध बनता है, तथा बाद में जब-जब इन चौबीस अक्षरों के शक्तिशाली कम्पन 'ईथर' के द्वारा सारे विश्व में फैल जाते हैं, तब ब्रह्माण्ड स्थित सभी देवताओं से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। साधक का ब्रह्माण्ड की इन दिव्य शक्तियों से सम्बन्ध बनने पर वह अनन्त सिद्धियों का स्वामी बन जाता है, केवल और केवल मात्र गायत्री मंत्र में ही वह ऊर्जा विद्यमान है, जो इतनी शक्तियों को एक साथ जाग्रत कर देती है, इसीलिए शास्त्रों में गायत्री मंत्र को "मंत्रराज" भी कहा गया है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने **"गायत्री छन्द समाहम"** कहा है, अर्थात् सभी मंत्रों में मैं गायत्री मंत्र हूं। इसके अतिरिक्त गायत्री के सावित्री, ब्रह्म विद्या, वेदमाता आदि अनेक नाम वेदों तथा उपनिषदों में वर्णित हैं।

हमारे सूक्ष्म शरीर में ऐसी कई ग्रन्थियां तथा चक्र हैं, जहां अनन्त शक्तिपुञ्ज विद्यमान होते हुए भी वे सुप्तावस्था में हैं, किन्तु गायत्री मंत्र की संरचना इस क्रम से हुई है कि उनके उच्चारण से उन ग्रन्थियों या चक्रों पर आघात लगता है, और वे चक्र स्वतः ही जाग्रत हो जाते हैं।

इस साधना के बारे में प्रायः लोगों का यह मत है, कि "गायत्री मंत्र मूलरूप से एक आध्यात्मिक मंत्र है, अतः इस मंत्र का जप करने से आत्मा की उन्नति और आध्यात्मिक प्रगति तो अवश्य होती है, परन्तु इससे आर्थिक उन्नति या गृहस्थ से सम्बन्धित बाधाओं को दूर करने में सहायता नहीं मिल पाती" यह बात सर्वथा सही है, किन्तु गायत्री मंत्र यदि विशिष्ट बीजाक्षरी मंत्रों से निर्मित हो, तो उसके द्वारा गृहस्थ की समस्त बाधाओं को भी दूर किया जा सकता है, यह बात भी सर्वथा सही है।

यहां कुछ ऐसे प्रयोग दिए जा रहे हैं, जिससे साधक अपने गृहस्थ जीवन की समस्याओं को दूर कर सकते हैं। ये निश्चित रूप से सरलतम और सटीक प्रयोग हैं, जो इस प्रकार हैं—

१. बुद्धि एवं शारीरिक बल वृद्धि हेतु

गायत्री मंत्र का अधिष्ठात्रि देव 'सविता' अर्थात् सूर्य है, इस मंत्र में सूर्य की आराधना है। प्रातःकालीन ब्रह्म मुहूर्त में किसी भी **रविवार** के दिन इस साधना को सम्पन्न करने पर साधक के ज्ञान-चक्षु जाग्रत होने पर उसकी समस्त मेधा शक्ति विकसित हो जाती है, जिससे वह बालक या साधक अपने-आप में अद्वितीय

मेधा सम्पन्न व्यक्ति बन जाता है। इस साधना के लिए साधक प्रातः स्नान के बाद हाथ में पानी से भरा हुआ पात्र लेकर, उसमें कुछ चावल के दाने तथा पुष्प डाल कर, पूर्व की ओर मुख करके, सूर्य को निम्न मंत्र सात बार पढ़ कर अर्घ्य दें—

''उदित्यं जातवेदसे नमः''

सूर्य को अर्घ्य देने के पश्चात् उपरोक्त मंत्र से ही, दाहिने हाथ में जल लेकर अभिमंत्रित करें और अपने शरीर पर छिड़क लें, तत्पश्चात् साधना कक्ष में आकर, पूर्व की ओर मुंह कर, एक पीले आसन पर, पीली धोती पहिन कर बैठ जाएं, तथा सामने एक चौकी पर पीला कपड़ा बिछा दें, फिर मध्य में लाल रंग से रंगे हुए चावलों की एक ढेरी बनाकर प्राण-प्रतिष्ठित **''गायत्री यंत्र''** को चावल की ढेरी पर स्थापित कर दें, तत्पश्चात् उसकी धूप, दीप, अक्षत आदि से पूजा करके **''स्फटिक माला''** से निम्न मंत्र का तीन माला जप करें—

मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् श्रीं ह्रीं नमः।।

हर बालक को या साधक को इस साधना से लाभ उठाना ही चाहिए, साधना समाप्ति के पश्चात् यंत्र को किसी बहते हुए जल में प्रवाहित कर दें, तथा माला को पहिन लें अथवा पूजा कक्ष में रख दें।

२. मनोकामना पूर्ति प्रयोग

सामग्री– गायत्री मंत्र से संस्कारित दिव्य शंख एवं चैतन्य माला।

समय – किसी भी रविवार अथवा शुक्रवार को प्रातः ५ से ८ बजे के मध्य।

प्रातः स्नानादि के बाद साधक को चाहिए कि वह पूर्व की ओर मुख करके पीले आसन पर, पीली धोती पहिन कर बैठ जाएं, तथा सामने चौकी पर पीला कपड़ा बिछा लें, फिर पीले चावलों की एक ढेरी बनाकर उस पर **एक पानी वाला नारियल** स्थापित कर दें तथा मौली (कलावा) बांध कर उस पर रक्तचंदन या कुंकुम लगा दें, और उसके दाहिनी ओर लाल फूल की पंखुड़ियों के ऊपर **''दिव्य शंख''** को स्थापित कर, उसका भी अक्षत, पुष्प व धूप से पूजन करें, फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक व्यक्ति (नाम, गोत्र) इस मनोकामना पूर्ति हेतु यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा बोलकर जल को भूमि पर छोड़ दें, फिर आसन पर खड़े होकर निम्न गायत्री मंत्र का **''चैतन्य माला''** से एक माला जप करें।

मंत्र –

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं नमः।।

साधक जप समाप्ति के बाद यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा माला को पहिने रहें। यह अद्भुत प्रयोग शीघ्र ही सफलता देने वाला है।

३. रोग निवारण हेतु

रोग जब इतना असाध्य हो जाए कि डॉक्टर तथा वैद्यों को भी समझ में न आ रहा हो, तो उस समय यह प्रयोग रोगी स्वयं कर सकता है या रोगी के नाम का संकल्प लेकर अन्य व्यक्ति भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है।

किसी भी **शनिवार की रात्रि को नौ बजे के बाद** अपने सामने एक छोटी चौकी पर लाल कपड़ा बिछा लें, तथा लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं। चौकी पर किसी प्लेट में कुछ चावल बिछाकर, उसमें एक **''मूंगा रत्न''** रख दें, उसका कुंकुम, अक्षत, धूप से पूजन करके, उसे **''लाल हकीक माला''** पहिना दें, फिर दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक व्यक्ति (नाम व गोत्र) इस रोग की निवृत्ति हेतु यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा कहकर जल भूमि पर छोड़ दें, फिर बिना माला के ही एक घंटा निरन्तर निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ऐं ओं हुं नमः।।

मंत्र-जप के बाद साधक समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

४. वशीकरण प्रयोग

साधक किसी भी **शुक्रवार** की रात्रि को शुद्ध वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जाएं, फिर सामने बाजोट (लकड़ी की चौकी) पर चावल की एक ढेरी बनाकर, उस पर **''वशीकरण गुटिका''** को स्थापित कर दें, और गुटिका का कुंकुम, अक्षत आदि से पूजन करें, घी का दीपक व अगरबत्ती जला लें, इसके बाद पीपल के चार पत्तों पर उस व्यक्ति का कुंकुम से नाम लिखें, जिसके लिए प्रयोग करना है, फिर इन चारों पत्तों को चावल की ढेरी के चारों तरफ रख दें, और **''मूंगा माला''** से निम्न मंत्र का पांच माला जप करें—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं नमः।।

यह एक दिन की उत्कृष्ट साधना है, यदि आप चाहें तो इसी गुटिका और माला से तीन बार प्रयोग कर सकते हैं, यदि एक या दो बार में सफलता न मिल रही हो तो। साधना समाप्ति के पश्चात् सभी साधना-सामग्री को जल में विसर्जित कर दें। पूरे साधना काल तक घी का दीपक और अगरबत्ती जलते रहना चाहिए।

लगभग सवा बारह बजे का वक्त था, जब मैंने मामा जी के साथ श्मशान में प्रवेश किया। यह श्मशान देहाती क्षेत्र में होने के कारण, न तो यहां प्रकाश की व्यवस्था है और न ही किसी प्रकार की बाउन्ड्रीवॉल, जिससे कि श्मशान भूमि की सुरक्षा की जाए। हां, सुरक्षा के नाम पर कुछ कंटीले तार लगाकर श्मशान भूमि का क्षेत्र अवश्य ही सीमित कर दिया गया है।

श्मशान के आस-पास जितने भी गांव हैं, उन सभी गांवों में लगभग सायं आठ बजे के बाद नीरस व भयावह वातावरण बन जाया करता है, और उस समय गांव के निवासी घर से बाहर निकलना भी पसन्द नहीं करते, क्योंकि चोर और डाकुओं का भय हमेशा गांव वालों पर बना रहता है। कभी कहीं चोरी हो गई, तो कहीं किसी गांव में डाका पड़ गया, लूट-पाट और हत्या तो जैसे रोज का ही नियम है उस क्षेत्र का, और उस पर जंगली जानवरों का खतरा कौन सिर ले? इसलिए शाम होते ही यहां के लोग अपने घरों में बैठ जाना ज्यादा सुरक्षित अनुभव करते हैं।

तंत्र-मंत्र, पूजा-पाठ, साधना आदि के संस्कार तो जैसे मुझे वरदान स्वरूप ही प्राप्त हुए थे। इन सभी विषयों में मेरी रुचि बचपन से ही बनी हुई थी, मगर मुझे कोई सहारा, कोई मार्ग-दर्शक नहीं मिल पा रहा था, जो मुझे इस क्षेत्र में आगे बढ़ा सके।

एक दिन मेरे मित्र पर किसी के द्वारा "मूठ" प्रयोग कर दिया गया, यह मेरे लिए अत्यन्त ही आश्चर्य का विषय था, क्योंकि मैंने इससे पूर्व कभी इस प्रकार की घटना नहीं देखी थी। मैं अपने जीवन में पहली बार इतने करीब से तंत्र से सम्बन्धित घटना देख रहा था।

मेरे मित्र का पूरा परिवार, रिश्तेदार, सगे-सम्बन्धी उसकी ऐसी दशा को लेकर अत्यधिक परेशान थे, और बात भी परेशानी की ही थी, जब किसी परिवार में २२-२३ वर्ष का कोई नौजवान पुत्र मृत्यु के करीब आकर खड़ा हो जाए, और सभी छोटे-बड़े डॉक्टरों द्वारा जवाब दे दिया जाए, तो उस परिवार की दुःखद स्थिति का अनुमान ही लगाया जा सकता है।

जब डॉक्टरों को कोई रोग समझ में नहीं आया, तो मित्रों तथा सम्बन्धियों की सलाह पर झाड़-फूंक करने वाले स्याने, ओझा, फकीर सभी को दिखाया गया, लेकिन दूर-दूर तक कोई तांत्रिक, मांत्रिक जब उसे ठीक न कर सका, तो परिवार के सभी लोग एकदम निराश हो गए। इतना सब कुछ होने से यह तो निश्चित हो गया था, कि मेरा मित्र तंत्र प्रयोग से पीड़ित है।

ऊपरी बाधा का प्रकोप दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था, अब तो वह अपने-आप ही अपनी मृत्यु की घोषणा करने लगा था, हम सब उसकी इस हालत से बहुत अधिक परेशान और बेचैन हो रहे थे। हर रोज मिलने वालों का तांता लगा ही रहता था, लेकिन केवल ढाढ़स और दिलासा देने के अलावा कोई भी कुछ नहीं कर पा रहा था।

एक दिन मेरे मित्र के दूर के रिश्ते के मामा, जिन्हें मैं भी मामा जी कहकर पुकारने लगा था, घर आए, उन्होंने उसे देखा, और देखते ही

श्मशान आज मेरे लिए पूर्णरूप से शांति स्थल है. . . पवित्रता और दिव्यता प्रदान करने वाला देवालय है. . . जब भी मैं इन सांसारिक प्रपंचों से, विषयों से ऊब जाता हूं, तो मैं श्मशान में ही आश्रय लेता हूं. . . क्योंकि श्मशान ही एक ऐसी स्थली है, जो भौतिकता से दूर, कुचक्रों से परे है. . .

बोले– **''अरे! इस लड़के पर तो भयानक तंत्र प्रयोग हुआ है, आप लोगों ने इसे कहीं दिखाया या नहीं?''**

तब मेरे मित्र के पिताजी बोले– **''हमारी नजर में तो जितने भी ओझा, तांत्रिक, फकीर आए, उन सबको दिखा दिया, परन्तु उन सबने एक ही जवाब दिया, कि यह हमारे बस का नहीं, इसे कहीं और ले जाइए।''**

तब मामा जी ने कहा– **''अब घबराने की जरूरत नहीं है, मैं इसे ठीक करूंगा, और इसे ठीक करके ही यहां से जाऊंगा।''**

उसी रात्रि को पूजन का समय निश्चित किया गया, पूजन में उपयोग होने वाली सभी प्रकार की सामग्रियों को एकत्रित किया जाने लगा, जिनमें सात प्रकार की मिठाइयां, दो मिट्टी की छोटी हंडियां, एक नींबू, शूकर-दंत, काली उड़द की दाल तथा सरसों आदि था।

रात्रि को लगभग साढ़े दस बजे पूजन की तैयारी आरम्भ की गयी, पूजन इसलिए जल्दी प्रारम्भ किया गया था, क्योंकि बारह बजे उस सामग्री को लेकर श्मशान में जाना था, और जब श्मशान जाने के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता हुई, तो मैंने तुरन्त अपना नाम प्रस्तुत कर दिया। थोड़ी देर तो वे नानुच करते रहे, परन्तु मेरे जिद्द करने पर वे मान गए। मैं उस दिन बहुत प्रसन्न था, कि आज मुझे श्मशान जाने का अवसर मिलेगा।

अब वे मुझे श्मशान जाते वक्त तथा श्मशान भूमि में बरतने वाली सावधानियों के बारे में समझाने लगे, और पूरी क्रिया में उन्होंने मुझे मौन रहने का सख्त आदेश दे दिया।

पूजन की सारी तैयारियां हो चुकी थीं, ठीक १०.४० बजे वे अपने काले रंग के आसन पर, काली चादर ओढ़कर बैठ गए, और इस समय उनका जो स्वरूप था, वह सुबह से सर्वथा भिन्न था। जब सुबह मैंने उन्हें देखा था, तो वे सादा पैण्ट-कमीज पहिने एक साधारण से व्यक्ति ही प्रतीत हो रहे थे, मगर इस समय उनका स्वरूप बदल चुका था।

माथे पर लम्बा व गहरा लाल तिलक, काले वस्त्र, लाल सुर्ख आंखें, कठोर चेहरा. . .ये सब अत्यन्त ही भयप्रद लग रहे थे, साथ ही उनके सामने किसी विशेष क्रम में रखी साधना की सामग्रियां जिन पर बिखरा सिन्दूर अपने-आप में भयावह स्थिति उत्पन्न कर रहा था।

हम सभी उस पूजन-क्रिया को बहुत ध्यान से देख रहे थे, एक स्टील की थाली में सफेद कागज पर, अपनी उंगली को चीर कर निकाले गए ताजे रक्त की बूंदों से सात बिन्दियां बनाकर पूजन-सामग्री को उस पर स्थापित किया गया। एक मिट्टी की हांडी में जल भर कर उसमें कुंकुम, पुष्प, कुछ दाने काली मिर्च के डाल कर, रखा गया था तथा दूसरी हांडी सिर्फ जल से भरी हुई थी। अब वे कुछ मंत्रोच्चारण के साथ-साथ सामग्री को इधर से उधर पलटने की क्रिया करने लगे।

कुछ समय बाद उन्होंने मेरे मित्र को अपने पास बिठा लिया, और उन आत्माओं का आह्वान करने लगे, जिनसे वह पीड़ित था। कुछ समय बाद मेरा मित्र अजीब-सी हरकतें करने लगा, उसमें आत्माओं का प्रवेश हो चुका था, और वे अपनी-अपनी इच्छानुसार चीजें मांगने लगीं, कुल तीन आत्माओं का उसमें प्रवेश हुआ था। जिसने जो भी मांगा, उसके लिए वही सामान एक थाली में रख दिया गया, और उन आत्माओं से रोगी को छोड़ जाने का निवेदन किया, जिसे मानकर वे आत्माएं जा चुकी थीं।

इसके बाद एक नींबू काटकर, मूठ काटने का प्रयोग सम्पन्न किया और श्मशान जाने का उपक्रम करने लगे। दो थाल, जिनमें से एक में मिष्ठान्न रखा हुआ था, वह मेरे पास था और दूसरी थाली, जिसमें केवल पकवान थे वह मामा जी ने ले रखी थी। जल की हांडी भी मुझे दे दी गई, और हम दोनों ही श्मशान के लिए रवाना हो गए।

अमावस्या की अंधेरी रात थी, चारों ओर भयानक सन्नाटा व्याप्त था, और उस पर कुत्तों के रोने का स्वर. . . दूर से आती सियारों की आवाजें. . . ऐसा लग रहा था, जैसे पूरी प्रकृति ही रहस्यात्मक हो रही हो। ऐसे में हम दोनों मौन ही चले जा रहे थे, मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे हम दोनों के अलावा और कोई भी हमारे पीछे-पीछे चल रहा है।

उस कड़ाके की ठंड में भी मुझे पसीना छूट रहा था। मेरा हृदय शिथिल होता जा रहा था, भय के कारण मेरा मामा जी के पीछे चलना कठिन हो रहा था, इसलिए मैं बार-बार दौड़कर उनके बराबर आने की कोशिश कर रहा था, मगर उनकी चाल इतनी तेज थी, कि मैं बार-बार पीछे रह जाता, तथा मौन के कारण मैं कुछ बोल भी नहीं पा रहा था।

लगभग आधा घंटा चलने के बाद हम लोग श्मशान के करीब पहुंचे, अब तो मेरा हृदय शिथिलता की चरम सीमा पर था, मेरा शरीर भी अब मेरा साथ नहीं दे रहा था, मुझे चक्कर आने लगा था, ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो मैं गिर ही जाऊंगा।

जब हम श्मशान में पहुंचे, तब वहां एक चिता जल रही थी, हम लोग चिता के पास जाकर बैठ गए, और सब सामान नीचे रख लिया, तथा मामा जी ने उस चिता से एक लकड़ी लेकर बड़ा सा गोल घेरा खींचा और मुझे उस घेरे में अपने साथ बैठाकर पूजन सम्पन्न करने लगे।

अभी मुश्किल से चार-पांच मिनट ही बीते होंगे, कि जो दृश्य वहां उपस्थित हुआ, उसकी तो मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी, और वह भयानक दृश्य देखने के बाद भी मैं कैसे जीवित रह गया, यह तो मैं भी नहीं जानता?

जो चिता हमारे सामन जल रही थी, उस चिता का जलता हुआ शव अचानक उठकर खड़ा हो गया. . . **एकदम वीभत्स. . . जगह-जगह से जला हुआ. . . कहीं-कहीं से हड्डियां दिखाई पड़ रही थीं, तो कहीं-कहीं पर**

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

सुखद जीवन का अहसास इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे।

केवल **7777/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3,000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209 फेक्सः0291-32010
गुरुधाम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोनः011-7182248, फेक्सः011-7186700

जले हुए मांस के लोथड़े उन हड्डियों पर लटक रहे थे. . . वह एक स्त्री का शव था, जो इस समय भयानक प्रेतात्मा सी लग रही थी, जिसको देखकर मेरी तो रूह ही कांप गई, परन्तु मामा जी निर्विघ्न अपनी तंत्र क्रिया में लगे रहे. . . और मेरी जो स्थिति हो रही थी, वह सांप के मुंह में छछूंदर जैसी थी, और मैं चाह कर भी कुछ नहीं कर पा रहा था, मन ही मन उस क्षण को कोस रहा था, जब मैं श्मशान में आने के लिए तैयार हुआ था।

वह प्रेतात्मा उस जलती हुई चिता में से उतरने का प्रयास कर रही थी, वह हमारी ओर आना चाहती थी, कि तभी एक लम्बा-चौड़ा व्यक्ति, जिसका रंग काला-स्याह था, हमारी ओर आया, उसकी लाल सुर्ख आंखें अंधेरे में चमक रही थीं, मुझे तो वह भी कोई प्रेत ही लग रहा था, उसने हमें बैठे रहने का आदेश दिया तथा स्वयं उसने लकड़ी लेकर, जो मामा जी ने चिता से उठाई थी, पुनः उसे चिता में डाल दिया।

आश्चर्य! लकड़ी चिता में डालते ही वह प्रेतात्मा एकदम से शांत हो गई, और अपने स्थान पर ही ठिठक कर रुक गई। उसके बाद उस औघड़ ने शून्य से ही जल प्राप्त कर, उस प्रेतात्मा पर छिड़का, जल के छींटे लगते ही वह प्रेतात्मा पुनः उसी चिता में समा गई।

उसके बाद वह औघड़ पुनः हमारे पास आया तथा हाथ में लिए जल से, एक गोला पुनः खींच कर चला गया।

लगभग पन्द्रह मिनट पूजन करने के बाद वह सामग्री वहीं उलट कर, हम दोनों घर पहुंचे। घर जाकर देखा, तो मेरा मित्र बिलकुल ठीक हो चुका था और आज भी वह एकदम स्वस्थ है।

उसके बाद मामा जी बोले—
''मेरे साथ दिल्ली चलो, वहां मैं तुम्हें अपने गुरुदेव से मिलवाऊंगा, जिनकी वजह से तुम आज जीवित हो।''

यह सुनकर मुझे जितनी प्रसन्नता हुई, वह मैं व्यक्त नहीं कर सकता, मैं उड़कर दिल्ली पहुंचना चाहता था, क्योंकि मैंने मामा जी के पास **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका पढ़ ली थी, जिसकी वजह से मैं गुरुदेव से मिलने की इच्छा रोक नहीं पा रहा था।

— और वह क्षण भी आया, जब हम पूज्य गुरुदेव के समक्ष बैठकर दीक्षा प्राप्त कर रहे थे, सचमुच यह मेरे जीवन का सबसे अधिक सौभाग्यशाली अवसर था, जब पूज्य गुरुदेव से मुझे जीवन की नई दिशा, नई रोशनी तथा अभय का वरदान दीक्षा के रूप में प्राप्त हुआ। **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** को गुरु रूप में प्राप्त कर मेरा तो जीवन ही धन्य-धन्य हो गया है, मुझे तो ज्ञान का अथाह सागर मिल गया है, कहां तो मैं एक बूंद के लिए तरसता था।

हमने पूज्य गुरुदेव से **''श्मशान साधना''** करने की अनुमति मांगी, पहले तो उन्होंने मना कर दिया, परन्तु हमारा दृढ़ निश्चय व आत्म-विश्वास देखकर उन्होंने हमें स्वीकृति प्रदान कर दी, क्योंकि वे समस्त प्रकार की साधनाएं गृहस्थ शिष्यों को घर में रहकर भी सम्पन्न करवा सकते हैं, परन्तु हमारी जिज्ञासा तो 'श्मशान साधना' करने की थी, अतः उन्होंने हमें स्वीकृति प्रदान कर दी।

उसके बाद तो हम धीरे-धीरे श्मशान साधना करने लगे। एक दिन 'श्मशान साधना' के दौरान ही, फिर वही काला औघड़ हमें मिला, जिसने हमें उस प्रेतात्मा से बचाया था। बातचीत करने पर पता चला, कि वह भी पूज्य गुरुदेव **''परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी''** का ही शिष्य है, जो आज ''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी'' के रूप में जाने जाते हैं, तथा वह पन्द्रह वर्षों से निरन्तर श्मशान साधना में संलग्न है। उस दिन भी वह पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से ही हमें बचाने के लिए आया था, जो कि 'टेलीपैथी' के माध्यम से पूज्य गुरुदेव ने उसे प्रदान की थी।

प्रस्तुति – आनन्द, दिल्ली

आश्चर्य! लकड़ी चिता में डालते ही वह प्रेतात्मा एकदम से शांत हो गई, और अपने स्थान पर ही ठिठक कर रुक गई। उसके बाद उस औघड़ ने शून्य से ही जल प्राप्त कर, उस प्रेतात्मा पर छिड़का, जल के छींटे लगते ही वह प्रेतात्मा पुनः उसी चिता में समा गई।

दस महाविद्या सिद्धि साधना शिविर
11 से 14 मई 1995
कोटा (राजस्थान)

परम पूज्य सद्गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी के आशीर्वाद तले प्रथम बार दस महाविद्या सिद्धि साधना शिविर, जिसमें पूज्य गुरुदेव महाविद्या साधना के सभी पक्षों को पूर्णता के साथ स्पष्ट करेंगे।

सम्पन्न होने वाले प्रयोग

तारा प्रयोग
काली प्रयोग
कमला प्रयोग
मातंगी प्रयोग
धूमावती प्रयोग
छिन्नमस्ता प्रयोग
भुवनेश्वरी प्रयोग
बगलामुखी प्रयोग
त्रिपुर भैरवी प्रयोग
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग
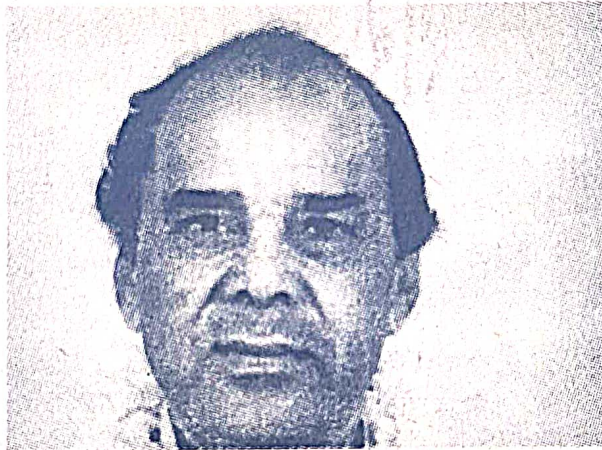
ये दीक्षाएं, जो प्रदान की जायेंगी

तारा दीक्षा
काली दीक्षा
कमला दीक्षा
मातंगी दीक्षा
धूमावती दीक्षा
छिन्नमस्ता दीक्षा
भुवनेश्वरी दीक्षा
बगलामुखी दीक्षा
त्रिपुर भैरवी दीक्षा
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा

शिविर स्थल : दशहरा मेला रंगमंच, कोटा (राजस्थान)

सम्पर्क

श्री राजीव गुप्ता निखिल, 140 शॉपिंग सेन्टर, कोटा, फोन : 0744-29052
श्री जगेन्द्र भटनागर, म० न० 8 बी 45, महावीर नगर तृतीय कोटा, कार्या० : दैनिक नवज्योति, छावनी, कोटा, फोन : 0744-23738, 26959
श्री राम प्रताप मीणा, म० न०-2 र 31, विज्ञान नगर, कोटा
श्री महावीर गौतम (अध्यापक), 1 डी 61, महावीर नगर विस्तार, कोटा
श्री राम प्रताप डागर, सेवा निवृत्त प्रधानाध्यापक, सीसवाली
डॉ० पी० पी० श्रीवास्तव, एच-1, हैवी वाटर प्रोजेक्ट कॉलोनी, रावतभाटा, फोन : 01475-2223
श्री ए. के. अग्रवाल, के-6, हैवी वाटर प्रोजेक्ट कॉलोनी, रावतभाटा, फोन : 01475-33080
श्री जीतेन्द्र जैकी, जैकी स्टूडियो, मंगलपुरा, झालावाड़
श्री लक्ष्मी नारायण दाधीच, दाधीच वर्कशॉप, खानपुर
श्री आर० पी० शर्मा, राजेश जनरल स्टोर, सलूजा सदन, गुरु नानक कॉलोनी, बूंदी
श्री महावीर शर्मा, तेल फैक्ट्री, बारां

शिविर शुल्क : 660/-

विशेष सम्पर्क

श्री ओम प्रकाश निखिल, 140, शॉपिंग सेन्टर, कोटा, फोन : 0744-29052

हम पूरे के पूरे नौ ग्रहों को नियंत्रित कर सकते हैं

यदि

हमें "चन्द्रमौलिश्वर साधना" ज्ञात हो

मानव-जीवन स्वतंत्र नहीं है, क्योंकि उसका प्रत्येक कार्य ग्रहों से संचालित होता है, अतः इसी कारणवश जब ग्रहों का विपरीत असर मानव पर पड़ता है, तो उसे जरूरत से ज्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिसके फलस्वरूप उसे विभिन्न प्रकार के कष्ट और दुःख भोगने पड़ते हैं।

सम्पूर्ण जगत् कुछ विशेष नियमों-उपनियमों से बंधा है, प्रत्येक मनुष्य के जीवन में जो कुछ भी घटित होता है, उन पर ग्रहों का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता ही है, तथा पृथ्वी पर रहने वाली प्रत्येक वस्तु के साथ, जो आकर्षण-विकर्षण ग्रहों के प्रभाव से बनता है, उसके प्रभाव से कोई बच नहीं सकता। यही कारण है कि मनुष्य चाहकर भी उन्नति की मंजिल पर यदि बढ़ता है, तो कुछ क्रूर और पापी ग्रह उसकी कामयाबी के रास्ते का रोड़ा बन जाते हैं, अतः जीवन में यदि ग्रहों की दशा अच्छी रहती है, तो हमारी कामयाबी भी हमारे साथ होती है।

इसमें कोई दो राय नहीं, कि मानव के जीवन और भाग्य पर ग्रहों का प्रभाव बराबर रहता है। कई बार तो ऐसा होता है कि हम प्रयत्न करते हैं, और जब सफलता हम से दो-चार हाथ

मानव के जीवन और भाग्य पर ग्रहों का प्रभाव बराबर बना रहता है. . . उसके सारे प्रयत्नों के बाद भी उसकी स्थिति डगमगा जाती है. . . सफलता सामने होते हुए भी उससे दूर चली जाती है, और कभी बिना परिश्रम के ही अनायास सफलता प्राप्त होती है. . . ऐसा क्यों?

दूर रह जाती है, तो सारे किये-कराये काम पर पानी फिर जाता है। आपने कई बार यह अनुभव किया होगा, कि प्रयत्न करने पर भी व्यापार में सफलता नहीं मिल पा रही है या जिस प्रकार से बिक्री बढ़नी चाहिए, उस प्रकार से नहीं बढ़ पा रही है अथवा घर में जो सुख-शांति होनी चाहिए, वह भी नहीं हो पा रही है, इसके अतिरिक्त भी कई छोटी-मोटी समस्याएं हैं, जिनसे मानव व्यथित रहता है और प्रयत्न करने पर भी उसे सफलता नहीं मिल पाती।

यों तो ग्रह किसी को नहीं छोड़ते चाहे वह गरीब हो या अमीर, या फिर देवता ही क्यों न हो। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं हमारे सामने, जिनसे यह ज्ञात होता है, कि ग्रहों का व्यक्ति के जीवन पर कितना अधिक प्रभाव पड़ता है— श्री राम को भी शनि की दशा से ग्रस्त होकर महल को छोड़कर वन में चौदह साल तक दर-दर भटकना पड़ा, यह बात और है कि वाल्मीकि ने भक्ति-भाव पूर्वक उस वनवास को कुछ और नाम दे दिया, किन्तु सत्य यही है कि राम को भी जीवन में ग्रहों के दूषित प्रभाव के कारण चौदह साल तक जंगलों में रहकर जीवनयापन करना पड़ा।

महात्मा बुद्ध को भी मंगल एवं राहु के दूषित प्रभाव से ग्रसित होकर, अपना राजपाट छोड़कर उन सबसे संन्यास लेना पड़ा, और राजा हरिश्चन्द्र को भी शनि की साढ़े साती के प्रभाव के कारण अपना राज्य त्याग कर श्मशान में रहना पड़ा, और यही नहीं अपितु उसके जीवन में एक समय ऐसा भी आया, जब वह अपने पुत्र की लाश पर कफन भी न डाल सका, इस प्रकार की अनेकों घटनाएं ऐसी हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि इतने बड़े-बड़े महापुरुष भी ग्रहों के दूषित प्रभावों से बच नहीं पाये, भले ही इन घटनाओं को समाज में कोई और रूप दे दिया गया हो, किन्तु सत्य यही है, कि ग्रहों के प्रभाव से ही उनकी यह गति हुई।

"ग्रहाधीनं जगत् सर्वम्" यह सारा संसार ग्रहों के अधीन है, क्योंकि वायुमण्डल में विचरण करने वाले ग्रह मात्र भ्रमणशील ग्रह नहीं हैं, अपितु उनका प्रभाव निश्चित रूप से मानव-जीवन पर पड़ता ही है, और जब इन ग्रहों का प्रभाव विपरीत होता है, तो विभिन्न प्रकार की समस्याएं खुद-ब-खुद मनुष्य के सामने आकर खड़ी हो जाती हैं।

ग्रह नौ प्रकार के होते हैं— **सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु। यों तो आकाश में सैकड़ों ग्रह हैं, किन्तु मुख्य ग्रह नौ ही माने जाते हैं, जिनका प्रभाव जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे हमारे ऊपर पड़ता ही रहता है, और इन्हीं ग्रहों के प्रभाव से हमें अपने जीवन में सफलता-असफलता मिलती रहती है।** हर ग्रह का मानव-जीवन पर अपना अलग-अलग प्रभाव पड़ता है, जिसके फलस्वरूप मनुष्य को कई समस्याओं का सामना करना पड़ जाता है। इन नौ ग्रहों में भी पांच ग्रह ऐसे हैं, जिनका प्रभाव प्रायः व्यक्ति पर देखने को मिलता ही है।

१. सूर्य— यदि सूर्य की दशा व्यक्ति को विपरीत फल दे, तो उसे समाज में बदनामी, विश्वासघात एवं कष्टदायक जीवन बिताते हुए असफलताओं का शिकार होना पड़ता है।

२. मंगल— यदि मंगल की दशा अच्छी न हो, तो व्यक्ति का जीवन कई प्रकार की उलझनों से ग्रस्त रहता है, जिससे उसे जीवन भर तनाव बना रहता है, यह ग्रह व्यक्ति को जेल की यात्रा, चोर या हत्यारा आदि भी बना देता है।

३. शुक्र— स्वप्न-दोष, विवाह-बाधा आदि इस ग्रह-बाधा के कारण ही होता है।

४. शनि— शनि की दशा व्यक्ति को एक-एक पैसे का मोहताज बना देती है, जिसके कारण व्यक्ति का जीवन दरिद्रता और गरीबी में बीतने पर वह शारीरिक, आर्थिक और मानसिक तनावों से ग्रस्त होकर, मृत्यु तक को प्राप्त हो जाता है। इसके अलावा ऐक्सिडेन्ट, राज्य छिन जाना, कोर्ट-कचहरी, डॉक्टरों आदि के चक्कर लगना, यह सब परेशानियां इस ग्रह-बाधा के कारण ही मानव को झेलनी पड़ती हैं।

दूषित ग्रहों का प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ता ही है, वह चाहे या न चाहे. . . लेकिन उनके दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है।

५. राहु— इस ग्रह-दोष के कारण गृह कलह, आपसी मन-मुटाव आदि अनेक प्रकार की समस्याओं से मनुष्य हर पल घिरा रहता है।

इस प्रकार अन्य ग्रह भी अपना दूषित प्रभाव मानव-जीवन पर डालते रहते हैं, जिनके चंगुल से बच निकलना मानव के लिए एक दुष्कर कार्य प्रतीत होता है। कई व्यक्ति ढोंगी पण्डित-पुरोहितों के चंगुल में फंस कर उपरोक्त समस्याओं के निवारण हेतु उनके द्वारा बताए गये उपायों को आजमाते हैं, परन्तु उससे उन्हें कोई लाभ नहीं मिल पाता, अपने कार्यों की सिद्धि एवं सफलता के लिए वे उनसे कई प्रकार के छोटे-मोटे अनुष्ठान-प्रयोग भी करवाते हैं, किन्तु फिर भी उसका अनुकूल फल उन्हें प्राप्त नहीं होता, तब उनका देवताओं आदि पर से विश्वास उठने

लगता है, क्योंकि वे उन समस्याओं एवं परेशानियों का कारण नहीं जान पाते, जबकि इन आपदाओं-विपदाओं का मूल कराण **''ग्रह-बाधा''** ही है।

कुछ व्यक्ति ग्रह-बाधा निवारण के लिए छोटे-मोटे टोने-टोटके, मंत्र, अनुष्ठान भी करते रहते हैं, किन्तु उनसे समस्त ग्रह-दोषों से मुक्ति नहीं प्राप्त हो सकती, वह तो **'भगवान् चन्द्रमौलिश्वर'** की साधना-उपासना करने पर ही सम्भव है। यदि व्यक्ति अपने जीवन की समस्त बाधाओं, उलझनों एवं परेशानियों से छुटकारा पाना चाहता है, यदि वह जीवन में पूर्णतः सुखी एवं समृद्ध होना चाहता है, यदि वह समस्त ग्रह-बाधा से मुक्ति पाना चाहता है, तो उसे यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, वरना आज जो आपके पास है वह भी बचा रहे, यह कोई जरूरी नहीं।

वेदों, शास्त्रों, पुराणों आदि में भगवान् शिव को ही चन्द्रमौलिश्वर कहा गया है—

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे,
सर्पैर्भूषित कण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थ वैश्वानरे।
दन्तित्वक् कृत सुन्दराम्वर धरे त्रैलोक्य सारे हरे,
मोक्षार्थ कुरुचित्तवृत्तिमचलाम् अन्यैस्तु किं कर्मभिः।।

अर्थात् ''सिर पर अर्धचन्द्र को धारण किए हुए भगवान् चन्द्रमौलिश्वर, जो कामदेव को भस्म करने वाले हैं, जिनके मस्तक से गंगा प्रवाहित हो रही है, कण्ठहार के रूप में सर्प को धारण किए हुए हैं, जिनके तृतीय नेत्र से वैश्वानर अग्नि निकल रही है, हस्ति चर्म को सुन्दर वस्त्र के रूप में धारण किए हुए तीनों लोकों में अद्वितीय भगवान् शंकर, जो अपने इस रूप-गुण के कारण 'चन्द्रमौलिश्वर' कहे जाते हैं, वे मेरे मन और बुद्धि को मोक्ष मार्ग की ओर प्रेरित करते हुए मेरे समस्त ग्रह जन्य दोषों को दूर करें।''

भगवान् शिव अपने 'चन्द्रमौलिश्वर' स्वरूप द्वारा ग्रहों के दूषित प्रभावों से व्यक्ति को या साधक को छुटकारा दिलाते हैं, क्योंकि 'भगवान् चन्द्रमौलिश्वर' देवाधिपति हैं, तंत्रेश्वर हैं अतः समस्त मंत्र-तंत्र भी उनके अधीन है, ऐसे भगवान् चन्द्रमौलिश्वर की साधना तो प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, इस साधना के बल पर वह व्यक्ति अपने जीवन में समस्त नौ ग्रहों के दूषित प्रभावों से मुक्ति प्राप्त कर उन ग्रहों को अपने अनुकूल बनाने में सफल हो जाता है, और तब उसे जीवन में कभी भी किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं भोगना पड़ता।

ग्रहों की दशा यदि सही रहे, तो व्यक्ति के जीवन में उन्नति के स्रोत हमेशा के लिए खुले रहते हैं, और वह कामयाबी की मंजिल की ओर बढ़ते हुए अपने जीवन में पूर्ण सुखी एवं सम्पन्न हो जाता है, क्योंकि इस साधना-शक्ति

दैनिक साधना विधि

आशीर्वाद : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
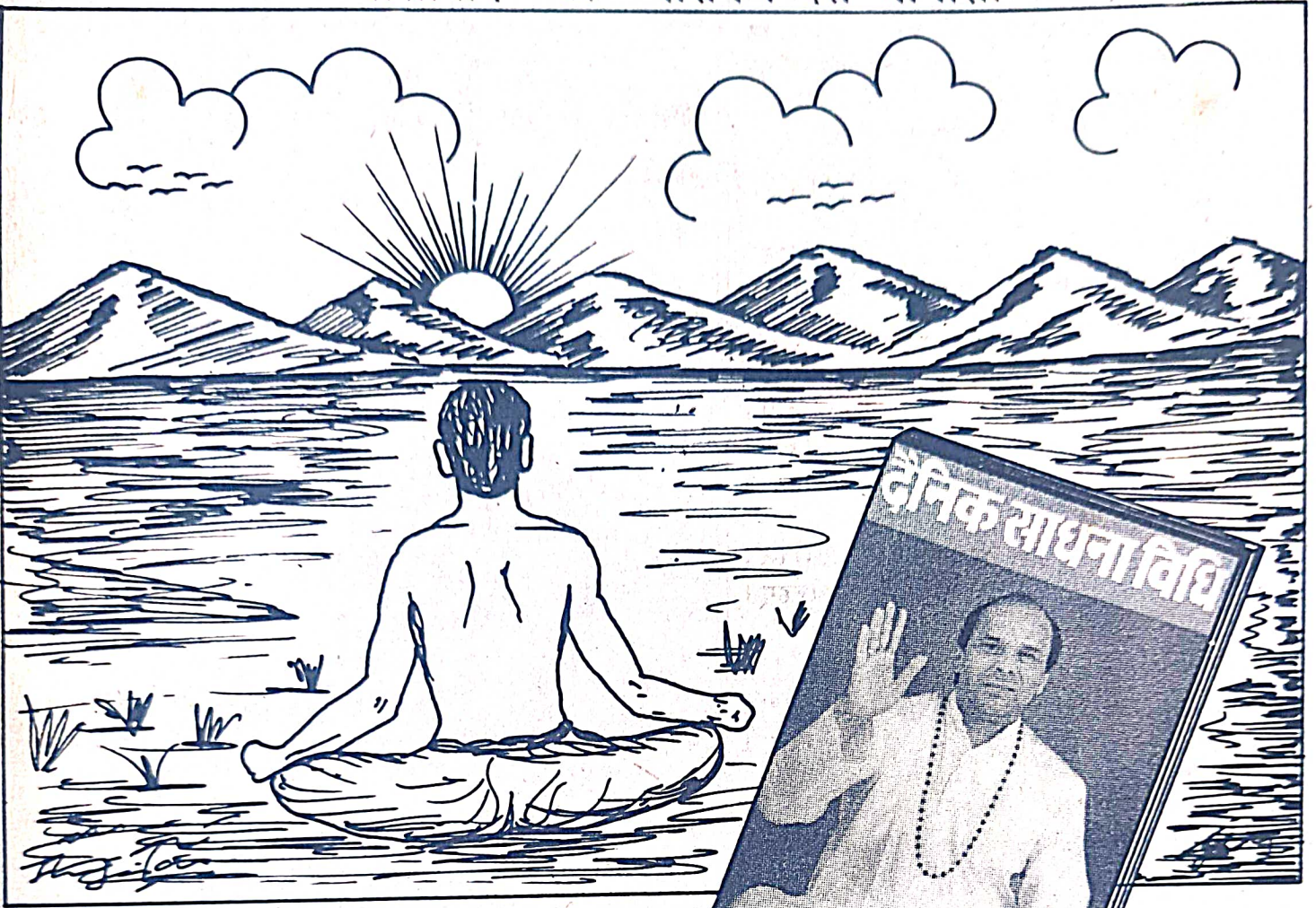
परम पूज्य गुरुदेव **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** के आशीर्वाद से युक्त

जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग साधना से प्रारम्भ होकर कुण्डलिनी जागरण की पूर्ण स्थिति में पहुंचना है। साधना के माध्यम से जीवन के कष्ट कटते हैं, और उदय होता है— नये श्रेष्ठ, अहोभाव, परिपूर्ण आनन्ददायक जीवन का।

क्या आप नित्य प्रति साधना करते हैं?

- विशिष्ट साधनाओं के प्रारम्भ में क्या प्रक्रिया होनी चाहिए, क्या आपको इसका ज्ञान है?
- स्पष्ट है, कि आप को चाहिए शुद्ध साधनात्मक ज्ञान, दैनिक साधना विधान।
- जिसे सम्पन्न कर आप कोई भी विशेष साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।
- हजारों, लाखों शिष्यों, पाठकों, साधकों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में **दैनिक साधना का विधान।**

मूल्य : १०/-
(डाक व्यय अतिरिक्त)

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन:०२९१-३२२०६

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोन:०११-७१८२२४८, फ़ेक्स:०११-७१८६७००

मृत्युञ्जय स्तोत्र

यह स्तोत्र अपने-आप में पूर्ण चैतन्य है, इस स्तोत्र के पाठ करने मात्र से सभी प्रकार के दुःख, दारिद्रय और भय समाप्त हो जाते हैं। भगवान शिव ने स्वयं कहा है– **हे पार्वती! जो इस स्तोत्र का पाठ कर लेता है, वह सभी दृष्टिकोणों से पूर्ण हो जाता है। काल भी उसका कुछ अहित नहीं कर सकता,वह एक प्रकार से मृत्युञ्जयी हो जाता है।**

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।।

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृंगनिकेतनं,
शिञ्जिनीकृत-पन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभि वन्दितं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।१।।

पञ्चपादपपुष्पगन्धपदाम्बुजद्वय शोभितं,
भाललोचनजातपावक दग्धमन्मथविग्रहम्।
भस्मदिग्ध-कलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।२।।

मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीय - मनोहरं,
पंकजासन - पद्मलोचन - पूजितांघ्रिसरोरुहम्।
देवसिन्धु-तरंग सीकर-सिक्त-शुभ्रजटाधरं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।३।।

यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजंग-विभूषणं,
शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।४।।

कुण्डलीकृत-कुण्डलेश्वर-कुण्डलं वृषवाहनं,
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।५।।

भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं,
दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्ति-मुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंघनिवर्हणं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।६।।

भक्तवत्सलमर्चितं निधिमक्षयं हरिदम्बरं,
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम्।
सोम-वारिद-भू हुताशन-सोमपालित स्वाकृतिं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।७।।

विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं,
संहरन्तमपि प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमन्वितं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।८।।

मृत्युभीत-'मृकण्ड-सूनु'-कृतस्तवं शिवसन्निधौ,
यत्र कुत्र च यः पठेन्नहि तस्य मृत्युभयं भवेत्।
पूर्णमायुररोगितामखिलार्थसम्पदमादरं,
चन्द्रशेखर एव तस्य ददाति मुक्तिप्रयत्नतः।।९।।

के द्वारा वह एकबारगी ही अपनी सहहमस्त परेशानियों एवं बाधाओं से मुक्ति पा लेता है।

सामग्री : चैतन्य पूरित रुद्राक्ष, रुद्राक्ष माला।

दिवस : ३१ जुलाई, सोमवार या किसी रविवार के दिन।

समय : रात्रि ७.३६ से ९.१२ तक।

विधि

रात्रिकालीन इस साधना में बैठने से पहले साधक स्नानादि करके पूर्णतया शुद्ध होकर, पीली धोती धारण कर, ऊपर गुरु चादर ओढ़ लें, तथा अपने सामने किसी लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें, और फिर आसन पर शांतचित्त तथा दत्तचित्त होकर बैठ जाएं, इसके पश्चात् तीन बार **'ॐ'** की ध्वनि का उच्चारण करने के बाद ५ मिनट तक गुरु का ध्यान करें, और प्रार्थना करें कि मुझे समस्त परेशानियों से मुक्ति प्राप्त हो, ऐसा कहकर उनसे आशीर्वाद ग्रहण करें, तत्पश्चात् किसी प्लेट में कुंकुम से **'ॐ'** लिखकर, उसमें उस विशिष्ट **'रुद्राक्ष'** को स्थापित कर दें, फिर कुंकुम का तिलक करके उस पर **'ॐ चन्द्रमौलिश्वराय नमः'** मंत्र बोलते हुए ११ बार थोड़े-थोड़े चावल चढ़ाएं, तथा ११ बार इसी मंत्र से काली तिल, काली सरसों, काली मिर्च अलग-अलग चढ़ाएं, और धूप या अगरबत्ती जलाकर सरसों या तिल के तेल का दीपक जलाएं, ध्यान रहे कि पूरे साधना काल में दीपक प्रज्वलित रहे।

फिर साधक मन ही मन शिव के 'चन्द्रमौलिश्वर स्वरूप' को नमस्कार कर **''रुद्राक्ष माला''** से निम्न मंत्र का ९ माला जप करें।

मंत्र

ॐ शं चं चन्द्रमौलिश्वराय नमः

जप समाप्ति के बाद गुरु आरती करें, फिर 'चैतन्य पूरित रुद्राक्ष' पर चढ़ी सामग्री को रात्रि के समय पूरे घर व दुकान तथा जो भी आपके आवासीय या व्यापारिक संस्थान हैं, सब जगह छिड़क दें, जिससे दुष्ट ग्रहों का प्रभाव दूर हो सके तथा भविष्य में भी उन ग्रह-दोषों का प्रभाव न हो, इसके पश्चात् रुद्राक्ष तथा माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

यह साधना पूर्ण सफलतादायक है, जिसे पूर्ण श्रद्धा और लगन से करने की आवश्यकता है, तभी साधक को इससे निश्चित लाभ की प्राप्ति सम्भव है।

गुरु पूर्णिमा शिविर
9 से 12 जुलाई 1995
पानीपत

ओ मेरे उपवन के बहुरंगी फूलों. . . चाहे तुम गुलाब के फूल हो या सुनहले गेंदे के, चाहे मरुभूमि के कैक्टस हो या ऊंचे पर्वतों के गुलमोहर. . . तुम्हारी सम्भावनाएं असीमित हैं, और तुम इसे पहिचान नहीं पा रहे हो. . . इसी की पहिचान कराने के लिए मैं हर बार अलग-अलग स्थानों पर तुम्हें आवाज देता हूं . . और सम्पन्न करवाता हूं **विशिष्ट साधनाएं,** और प्रदान करता हूं विशेष **दीक्षाएं,** और वह भी **ऊर्ध्वपात दीक्षा** जो दुर्लभ है योगियों के लिए भी . . . ऐसा इसलिए कि शायद कहीं तुम्हारी चेतना जागे, तुम्हारी खोयी स्मृति पुनः वापिस लौटे और तुम समा जाओ मुझमें, उस पूर्णता में जहां से तुम्हारी यात्रा शुरू हुई थी और जहां तुम्हें पहुंचना है. . . इस पूर्णिमा में तुम्हें पूर्ण होने के लिए आना है . . . और खाली हाथ नहीं लौटना है।

– गुरुदेव

: सम्पन्न होने वाले प्रयोग :

क्रिया योग, राज योग
कुण्डलिनी जागरण प्रयोग
प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग
पूर्ण साधना सिद्धि प्रयोग
सिद्धाश्रम साधना

: सम्पन्न होने वाली दीक्षाएं :

आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा, क्रिया योग दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा, भविष्य सिद्धि दीक्षा, कुबेर सिद्धि दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, ब्रह्माण्ड दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा और वे दीक्षाएं, जो आप अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए प्राप्त करना चाहेंगे।

आयोजन स्थल : डेरा बाबा जोधसचियार, गोहाना चौक, जी. टी. रोड, पानीपत।

आयोजक

शिविर शुल्क : 660/-

श्री एस० वी० सक्सेना, 101, विशन स्वरूप कॉलोनी, पानीपत
श्री सतीश सिंघला, होटल सिंघला पैलेस, पानीपत, फोन : 01742-23396
श्री विलायती राम अग्रवाल, एडवोकेट, 438, मॉडल टाउन, पानीपत, फोन : 01742-22507
ब्रिगेडियर जे. आर. सेठी, वी. एस. एम., 210 पुरानी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, पानीपत, फोन : 01742-20210
श्री वी. पी. जैन, उद्योगपति, मॉडल टाउन, पानीपत
डॉ० उदयभान दिवान, सलारगंज गेट, पानीपत, फोन : 01742-21694
श्री अविनाश ग्रोवर, हरिवाग कॉलोनी, पानीपत
निखिल ध्यान केन्द्र, गौतम बाजार, पानीपत
श्री धर्मवीर सलूजा, रिटायर्ड सेक्रेटरी एम. सी. डी. मॉडल टाउन, पानीपत

पानीपत, दिल्ली से 100 कि.मी. दूर रेल व बस द्वारा जुड़ा महत्त्वपूर्ण नगर है। पश्चिमी उत्तर-प्रदेश व हिमाचल प्रदेश के साधक यहां तक सीधे भी पहुंच सकते हैं। शेष प्रान्तों के साधकों के लिए दिल्ली आकर अन्तर्राज्यीय बस स्टैंड (पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास स्थित) से पानीपत पहुंचना ही सुविधाजनक रहेगा।

पूज्य गुरुदेव की तरफ से आपको इस वर्ष का

अद्वितीय उपहार
सर्वथा मुफ्त

''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' के आप सौभाग्यशाली पाठक हैं, अतः आपके सुख-दुःख में हम भी आपके साथ हैं। **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** किस प्रकार आपके लिए और अधिक सहयोगी, और अधिक रुचिकर हो, यही जानने के लिए नीचे कुछ प्रश्न दिये जा रहे हैं। ये प्रश्न आपके कीमती समय में से मात्र दस मिनट लेंगे, और आपके उत्तर आपकी इस प्रिय पत्रिका को और अधिक रुचिकर तथा उपयोगी बनाने में सहायक होंगे।***आप इस प्रपत्र को भर कर पत्रिका प्राप्ति के एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर लिफाफे में डाल कर हमें भेज दें–***

१. क्या आप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका के वार्षिक सदस्य हैं? हां ☐ नहीं ☐

२. क्या आप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका के वार्षिक सदस्य बनना चाहते हैं? हां ☐ नहीं ☐
   यंत्र उपहार हो तो, हां ☐ यंत्र उपहार हो तब भी नहीं ☐

३. यदि आप वार्षिक सदस्य हैं, तो कब से?
   १९८८ के पहले से ☐ १९८८ से १९९० के बीच से ☐ १९९१ से ☐
   १९९२ से ☐ १९९३ से ☐ १९९४ से ☐

४. यदि आप वार्षिक सदस्य नहीं बनना चाहते हैं, तो क्यों? ☐
   बुक स्टॉल पर पत्रिका शीघ्र उपलब्ध होती है। ☐
   एक साथ वार्षिक शुल्क देना सम्भव नहीं हैं। ☐
   यंत्र या अन्य उपहार में कोई आकर्षण नहीं है। ☐
   किसी मित्र से प्राप्त कर ही पढ़ लेंगे। ☐
   अन्य कोई कारण हो, तो यहां लिखें ....

५. आप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका को किस स्तर पर रखना चाहेंगे?
   सामान्य पत्रिका ☐ उत्तम पत्रिका ☐
   श्रेष्ठ पत्रिका ☐ सर्वश्रेष्ठ पत्रिका ☐

६. आप ऐसा क्यों मानते हैं, संक्षेप में लिखें–..............................

७. आप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका के सदस्य किस स्थिति में बने?
   जब परेशानियों से घिरे थे, तब ☐ अध्यात्म में रुचि के कारण ☐
   तंत्र आदि के प्रति जिज्ञासा के कारण ☐ किसी मित्र की प्रेरणा पर ☐
   डॉ० श्रीमाली (पूज्य गुरुदेव) द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें पढ़कर, स्वयं की प्रेरणा से ....

८. **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका में आपको कौन-से लेख अधिक पसंद हैं?

पूज्य गुरुदेव पर लेख ☐ साधना विधानों पर लेख ☐ कथाएं ☐
राशिफल, शेयर बाजार ☐ आयुर्वेदिक, योग विषयक लेख ☐
अन्य कोई लेख (यहां वर्णन करें) : . . . .

९. **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका के मुख पृष्ठ पर किस सम्बन्ध में चित्र पसंद करेंगे?

महाविद्याओं, देवी-देवताओं के चित्र ☐ प्राकृतिक दृश्य ☐ पूज्य गुरुदेव के चित्र ☐

१०. आपको किस प्रकार की साधनायें रुचिकर हैं?

धन लाभ/ ऋण मोचन साधनायें ☐ गुरु साधनायें ☐ महाविद्या साधनायें ☐
सम्मोहन, वशीकरण साधनायें ☐ शत्रुनाश साधनायें ☐ विभिन्न सिद्धि साधनायें ☐

११. क्या आप दीक्षाओं का अर्थ, महत्व समझते हैं? हां ☐ नहीं ☐

१२. क्या आप दीक्षाओं के माध्यम से समस्याओं का समाधान चाहते हैं? हां ☐ नहीं ☐

१३. क्या आप प्रत्येक शिविर में भांग लेना चाहते हैं? हां ☐ नहीं ☐

१४. क्या आप **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका के माध्यम से भारतीय अध्यात्म, तंत्र, मंत्र, योग आदि की गोपनीय क्रियाओं को व्यक्त करने तथा प्रचार-प्रसार में हमारे साथ हैं?

हां ☐ नहीं ☐ हां, साथ हैं और पूरा-पूरा सहयोग देंगे ☐

१५. क्या पत्रिका में निम्न का समावेश हो–

रोचक करने के लिए प्रतियोगिताओं का – हां ☐ नहीं ☐
व्यापारिक विज्ञापनों का समावेश हो– हां ☐ नहीं ☐
अन्य कुछ (यहां वर्णन करें) . . . .

१६. क्या आप व्यक्तिगत मार्ग दर्शन प्राप्त करना चाहेंगे? हां ☐ नहीं ☐

मेरा पूरा नाम ______________________________

____

मेरा पूरा पता (फोन सहित) ______________________________

____

____

नोट : यह प्रपत्र फाड़ कर अलग कर दें व एक खाली लिफाफा 10 X 4 का, जिस पर आपका पूरा पता लिखा हो, जिसमें भविष्य फल डाल कर भेजा जा सके, तथा जिस पर ६ रुपये के स्टैम्प लगे हों। प्रपत्र एवं लिफाफा दोनों एक लिफाफे में डालकर लिफाफा बंद कर दें, उस पर दो रुपये के स्टैम्प लगा दें व पूरा पता लिखें -

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001, (राज०)

आपका सुझाव : हमारा आधार

दाम्पत्य जीवन में गुरु और शुक्र का प्रभाव

• डॉ० अरुणेन्द्र भारती

मनुष्य की संरचना और उसके शरीर में बने चिन्ह, तिल या रेखाएं व्यर्थ नहीं होतीं, ये उसके पूरे जीवन को स्पष्ट करती हैं, जो पूर्ण प्रामाणिक होती हैं। ज्योतिष का जानकार इन रेखाओं को देखकर उसका सही-सही भविष्य कथन कर सकता है . . .

शाम का समय था, मैं अपने कार्यालय में बैठा गुरुदेव **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** की पुस्तक **'रत्न और ज्योतिष'** पढ़ रहा था, तभी एक मुस्लिम महिला मेरे सामने आई और कहने लगी— **''स्वामी जी, मैं वक्त की मारी हूं, इसलिए आपसे मिलने चली आई।''** सामने कुर्सी की ओर इशारा कर मैंने उसे बैठने को कहा, बुर्का हटा कर वह कुर्सी पर बैठ गयी, उसके चेहरे पर उदासी छायी हुई थी, मैंने पूछा— **''कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।''** महिला ने कहना शुरू किया— **''मेरा नाम नवीशा है, और मेरी शादी हुए दस वर्ष गुजर चुके हैं, हमें एक सन्तान भी है। मेरी ससुराल कलकत्ता में है, और यहां मैं अपने मायके में सात वर्षों से रह रही हूं। मेरे पति इन दिनों कुवैत में हैं, उन्होंने वहां दूसरी बीवी रख रखी है, घर-परिवार के लोग मुझे रात-दिन कोसते रहते हैं। कभी-कभी तो इच्छा होती है, कि आत्महत्या कर लूं।''**

गहरी श्वास खींच कर वह आगे कहने लगी— **''अब तो गांव, समाज के मनचले युवक भी मुझे बुरी नजर से देखने लगे हैं। आपके विषय में सुना था, कि आप ज्योतिष और तंत्र के अच्छे जानकार हैं, सो आपके पास इसी उम्मीद से आई हूं, कि आप मेरा कल्याण कर दें।''** नवीशा घंटों देर तक अपनी आप बीती सुनाती रही। मैं देख रहा था, उसकी आंखें नम हो आई थीं। लाईट जला कर मैंने उसके बाएं हाथ की लकीरों को देखा, उसके हाथ में विवाह की मात्र एक ही लकीर स्पष्ट थी और संतान-सुख में तीन लड़के होने का चिन्ह मौजूद था।

नवीशा को सान्त्वना देते हुए मैंने कहा— **''आप घबराये नहीं, आपका गुरु नीच है, अतः आप तांत्रिक अनुष्ठान करवा लें, और ७ रत्ती का 'शुद्ध पुखराज' धारण कर लें, इसके साथ ही ग्यारह मंगलवार उपवास करें। आपके पति कुवैत से आकर आपको यथाशीघ्र यहां से ले जाएंगे।''**

उस वक्त नवीशा को मेरी बातों पर पूर्णतः विश्वास नहीं हुआ, फिर भी उसने मेरी बात मान ली। गुरुवार के दिन मैंने उसके बाएं हाथ की तर्जनी उंगली में **'शुद्ध पुखराज'** धारण करवा दिया। मेरे जीवन का यह पहला आश्चर्यजनक अनुभव रहा, कि तीन महीने के अन्दर-अन्दर नवीशा के पति कुवैत से वापिस आ गए, और

आध्यात्मिकता का पथ फूलों की बगिया नहीं होती, यह तो कांटों की पगडण्डी है . . . साधना जीवन की उन्नति में जहां आवश्यक है, वहीं उसमें गुरु का मार्ग निर्देशन भी अतिआवश्यक है. . . पर सशरीर गुरु साथ न हो तो उनकी वाणी द्वारा भी दिशानिर्देशन प्राप्त किया जा सकता है. . . और ये कैसेट उपलब्ध हैं उन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, जो मंत्रों के उच्चारण, साधना करने की विधि, उनकी गोपनीयता, आरती और भजन सभी कुछ समेटे है आपके समक्ष . . .

ऑडियो कैसेट : प्रति कैसेट ३०/-

- गुरु गीता
- सिद्धाश्रम
- स्वामी सच्चिदानन्द जी
- शिव सूत्र
- शिव पूजन
- कुण्डलिनी योग
- कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
- ध्यान योग
- साधना सूत्र
- साधना, सिद्धि एवं सफलता
- ध्यान, धारणा और समाधि
- समाधि के सात द्वार

वीडियो : प्रति कैसेट २००/-

- शिव पूजन
- कुण्डलिनी
- स्वर्ण देहा अप्सरा
- पाशुपतास्त्रेय
- अक्षयपात्र साधना
- हिप्नोटिज्म रहस्य
- साधना, सिद्धि एवं सफलता
- मन मयूर नाचे
- लक्ष्मी मेरी चेरी
- जीवन पग-पग साधना है
- आध्यात्मिक प्रवचन
- गुरु पर्व ९२ बम्बई

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

नवीशा को लेकर कलकत्ता चले गए। आज नवीशा अपने पति के साथ सुख से रह रही है, साथ ही वह दूसरी संतान की मां भी बन चुकी है।

इसी तरह का मेरा दूसरा अनुभव एक दूसरी महिला के साथ रहा। उस महिला का पति दो वर्ष पूर्व अपनी पत्नी को छोड़ कर बम्बई भाग गया था। मैंने इस महिला को भी गुरुवार के दिन ७ रत्ती का 'शुद्ध पुखराज' धारण करवाया था, और सातवें महीने उसका पति बम्बई से खुद-ब-खुद वापिस आ गया, तथा आज दोनों पति-पत्नी सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

कहने का तात्पर्य यह है, कि दाम्पत्य जीवन में जब गुरु किसी पाप ग्रह से ग्रसित हो जाता है, तो पति-पत्नी के बीच आपस की दूरियां बढ़ जाती हैं। गुरु को उन्नत करने के लिए 'शुद्ध पुखराज' या 'टोपाज' को धारण करने से पति-पत्नी के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है, साथ ही, जो स्त्रियां 'शुद्ध पुखराज' धारण करती हैं, उससे उनका भाग्य बदल जाता है।

दाम्पत्य जीवन को शुक्र ग्रह भी गुरु की तरह ही प्रभावित करता है। शुक्र ग्रह यदि सही हो, तो जीवन में ऐश्वर्य, धन-दौलत व दाम्पत्य जीवन में यौन सम्बन्धी किसी तरह की अड़चनें नहीं आतीं। वाहन-सुख भी शुक्र ही दिलाता है, लेकिन यदि शुक्र ग्रह जरूरत से ज्यादा बलशाली हो जाय, तो वह पति-पत्नी को ज्यादा कामुक भी बना देता है और रात-दिन ऐशो-आराम की तलाश में ही जीवन भटकता रहता है।

दूसरी ओर अगर शुक्र नीच का हो या किसी पाप-ग्रह से ग्रसित हो, तो सेक्स में कमी आ जाती है और पति नपुंसक तक हो जाता है, ऐसी स्त्रियां अक्सर बांझ होती हैं।

यदि धातु-दोष या स्वप्न-दोष की अधिकता हो, तो शुक्र ग्रह से सम्बन्धित रत्न **'हीरा'** धारण कर लेने पर व्यक्ति को उससे समुचित लाभ प्राप्त होता है। मैंने ऐसे कई दम्पतियों को शुक्र का रत्न 'हीरा' पहिना कर संतान-सुख पहुंचाया है। जो गरीब व्यक्ति हीरा नहीं खरीद सकते हैं, तो मैंने उन्हें **'स्फटिक'** या **'ओपेल'** रत्न धारण करवाकर भी देखा है, इससे भी उन्हें समुचित लाभ प्राप्त हुआ है।

विवाह के पूर्व यदि शुक्र ग्रह की स्थिति को भली-भांति जांच-परख लिया जाए, तो किसी भी पुरुष या नारी के चरित्र को सही-सही बताया जा सकता है, जैसे शुक्र पर्वत यदि लचीला हो या दबा हुआ हो, तो यह निश्चित मान लें, कि सामने वाले व्यक्ति का चरित्र गिरा हुआ है, पर पुरुष या नारी से उसके एक या एक से अधिक सम्बन्ध रह चुके हैं अथवा वह हस्त मैथुन या गुदा मैथुन का आदी रहा है।

यदि शुक्र पर्वत पर जाली या तिल का निशान बना हुआ हो, तो पुरुष वेश्यागामी या पत्नी को छोड़ कर उसका कई बदचलन स्त्रियों के साथ शारीरिक सम्पर्क बना होता है। स्त्रियों के बाएं हाथ में यदि शुक्र के स्थान पर यह चिन्ह मौजूद हो, तो ऐसी स्त्रियां कई मर्दों के सम्पर्क में रहा करती हैं। स्त्रियों के होंठ के नीचे काला तिल हो, तो वे पति को छोड़ अन्य पुरुषों के साथ सहवास अवश्य करती हैं।

गुरु से प्रभावित व्यक्ति या महिलाएं पीले वस्त्र को अत्यधिक प्राथमिकता देती हैं। शुक्र से सम्बन्धित व्यक्ति सफेद, बैंगनी और गुलाबी रंग ज्यादा पसंद करते हैं।

जो व्यक्ति शुक्र से ज्यादा प्रभावित रहते हैं, वे फिल्मों में अधिक रुचि रखते हैं। फिल्म अभिनेता या अभिनेत्रियों के हाथ में शुक्र ज्यादा बलवती होता है। आए दिन हमारे पास ऐसे भी लोग आते रहते हैं, जो फिल्मों में असफल हो जाते हैं। मैंने उन अभिनेताओं-अभिनेत्रियों को **'शुद्ध हीरा'** पहिना कर देखा है, जिससे सफलता उनके चरण चूमने लगी है।

गुरु और शुक्र के लिए जहां रत्न धारण करने पर लाभ प्राप्त होता है, और ऐसे गरीब लोग, जो रत्न धारण नहीं कर पाते हों, तो ग्रह से सम्बन्धित जड़ी धारण करने पर भी उन्हें समुचित लाभ प्राप्त होता है। गुरु के लिए **'केले की जड़ी'**, शुक्र के लिए **'जूही की जड़ी'** लाभप्रद रहती है।

गुरु और शुक्र जहां दाम्पत्य जीवन को प्रभावित करते हैं, वहीं ये राजनीतिक जीवन, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षण, ठेकेदारी, इंजीनियरिंग आदि को भी प्रभावित करते हैं। जो व्यक्ति राजनीति में असफल हो रहे हों, नौकरी नहीं लग रही हो या नौकरी में स्थानान्तरण अथवा पदोन्नति नहीं हो रही हो, तो ऐसे व्यक्तियों को गुरु से सम्बन्धित रत्न अवश्य धारण करना चाहिए।

गुरु और शुक्र से सम्बन्धित ताबीज धारण करने से भी वही लाभ होता है, जो रत्न धारण करने से होता है। गुरु और शुक्र पर्वत उन्नत हों, और इसके साथ ही चन्द्र पर्वत पूर्ण उन्नत हो अथवा चन्द्र पर्वत से कोई लकीर शुक्र पर्वत की ओर जा रही हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने जीवन-काल में विदेश गमन करता है।

कुंवारी कन्याएं, जिनकी शादी में अनावश्यक विलम्ब हो रहा हो, तो ऐसी कुंवारी कन्याओं को 'शुद्ध पुखराज' ४ या ५ रत्ती का, बांए हाथ की तर्जनी उंगली में गुरुवार के दिन धारण करवा दें, अवश्य लाभ होगा। ऐसी कई लड़कियों को मैं जानता हूं, जिन्हें मैंने 'पुखराज' पहिनाया था और आज वे सब कुशल गृहणी बन कर सुख का जीवन गुजार रही हैं, लेकिन इसके पूर्व किसी ज्योतिषी या तांत्रिक से रत्न में प्राण-प्रतिष्ठा अवश्य करवा लें।

इस तरह गुरु और शुक्र दाम्पत्य जीवन को प्रभावित करता रहता है, जो असत्य नहीं है। रत्न से सम्बन्धित जानकारी हेतु लेखक 'डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी' की रचना ''रत्न और ज्योतिष'' अवश्य पढ़ लें।

कौन कहता है कि रम्भा सिद्ध नहीं होती,

क्योंकि यह तो अ

प्स

रा

सौन्दर्य जीवन
का श्रृंगार है. . .
सौन्दर्यवान व्यक्तित्व चाहे
वह स्त्री हो या पुरुष सभी उसकी ओर
आकर्षित होते हैं, उसके सम्पर्क में आते हैं. . .
ऐसी ही एक देव लोक की जाति है 'अप्सरा'. . .
सौन्दर्य ही जिसकी परिभाषा है. . . . . . .

न स्थायित्व वशीकरण प्रयोग है।

किसी अप्सरा की चर्चा हो, और उसमें रम्भा का नाम न आए, यह तो असम्भव है, क्योंकि रम्भा १०८. अप्सराओं की श्रेणी में से सर्वश्रेष्ठ पद पर आसीन है, जिसके रूप-सौन्दर्य को देखकर देवता भी मंत्र-मुग्ध से खड़े रह जाते हैं, और उसकी मादक व आकर्षक देह-यष्टि से प्रस्तुत नृत्य को देखने के लिए वे हर क्षण व्याकुल रहते हैं, और यदि वह अपनी मनमोहिनी मुस्कराहट से उन्हें मोहित कर अपने रूप-जाल में जकड़ ले, तो वे देवता अपने-आप को गौरवान्वित अनुभव करने लगते हैं।

ये तो देव लोक की बातें हैं, किन्तु **एक पृथ्वी लोक का प्राणी भी उसके रूप-सौन्दर्य का पान कर सकता है, और इस सौन्दर्य की साक्षात् स्वरूपा को मंत्र-शक्ति के बल पर प्रत्यक्ष इन स्थूल आंखों से भी देख सकता है, तथा उसके द्वारा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है, जिससे उसका जीवन सुखमय व सम्पन्नता युक्त बन सके।**

यह सत्य मुझे तब ज्ञात हुआ, जब मैंने उसका साक्षात्कार किया और वह भी उड़ीसा के एक मंदिर में, जहां एक बाबा हर क्षण तपस्या में लीन रहते हैं, और एक सुन्दर युवती ही उस मंदिर की और बाबा की देख-रेख करती है, ऐसा ही सुना था मैंने कुछ लोगों से। मेरी भी जिज्ञासा हुई कि मैं उस मंदिर में जाकर उनके दर्शन करूं, यही सोचकर मैं उस मंदिर में पहुंचा। उस समय तेज वर्षा हो रही थी, और घने बादलों के बीच सूर्य-दर्शन की कोई सम्भावना नहीं थी, किन्तु मेरी औतसुक्य प्रवृत्ति ने मुझे ऐसी मूसलाधार वर्षा में भी मंदिर जाने के लिए विवश कर दिया था. . . जैसे कोई मुझे खींच रहा हो।

मैंने देखा कि एक अत्यन्त रूपवती युवती बाबा के साधना मंदिर की एकमात्र संरक्षिका थी, इस मंदिर की एक विशेषता यह थी कि यहां किसी भी प्रकार की मादक वस्तु का सेवन निषिध था, और बाबा की आज्ञा के बिना कोई भी व्यक्ति वहां दो दिन से अधिक नहीं रुक सकता था, ऐसा ही उस युवती ने मुझे बताया, और देखते ही देखते वह मेरी आंखों से ओझल हो गई, तभी मेरी दृष्टि उस मंदिर के ठीक सामने बनी एक अत्यन्त आकर्षक प्रतिमा पर पड़ी, चारों ओर नील, पीत, वासन्ती और रक्त जवा पुष्पों से वह प्रतिमा शोभायमान हो रही थी। मन को मुग्ध कर देने वाली वह प्रतिमा और वह युवती दोनों एक ही जैसे रूप-वर्ण के एक ऐसे रहस्य को प्रकट कर रहे थे, जिसका अनुभव स्वयं में एक रहस्य था। वह निस्सन्देह एक दिव्य, मनो-मुग्धकारी अतीन्द्रिय अनुभूति थी।

यह एक सबसे बड़ा रहस्य था मेरे लिए, जिसे मैंने पहली बार परिलक्षित किया, वह यह कि उस मूर्ति में और उस युवती की मुखाकृति में अद्भुत साम्य था, दोनों का मुख मानो एक ही सांचे में ढाला गया हो।

मंदिर में कोई नहीं था, मैं मंदिर में स्थित भगवान् की मूर्ति के सामने नमन कर ज्योंही उठने को हुआ अचानक मस्तक पर एक अत्यंत कोमल, सुखद हाथ का स्पर्श हुआ तथा वातावरण और भी सुगन्ध व मादकता से भर गया। मेरे सामने अत्यन्त दिव्य रूप वाले, लम्बी-लम्बी दाढ़ी और गैरिक वस्त्र से सुशोभित रुद्राक्ष स्फटिक, मोती, मूंगा और वैजयन्ती माला से विभूषित एक बाबा, नील

मन को मुग्ध कर देने वाली वह प्रतिमा और वह युवती दोनों एक ही जैसे रूप-वर्ण के एक ऐसे रहस्य को प्रकट कर रहे थे, जिसका अनुभव स्वयं में एक रहस्य था। वह निस्सन्देह एक दिव्य; मनो-मुग्धकारी अतीन्द्रिय अनुभूति थी।

कांतिमय आभा बिखेरते हुए अभय मुद्रा में खड़े मुस्करा रहे थे।

मैं आत्म-विभोर कब तक बाबा के चरणों में लेटा रहा, कुछ स्मरण नहीं, किन्तु जब उठा तो वहां बाबा नहीं थे, वही एक अपूर्व सौन्दर्यमयी युवती मेरे सामने खड़ी थी, उस मूर्ति की अविकल प्रतिछवि! मैं उसे देखकर आनन्द-विभोर हो उठा और तभी मुझे एक चमत्कारिक अनुभूति हुई। आंख बंद करता तो वे बाबा नजर आते, और आंखें खोलता तो वह युवती. . . और कभी-कभी बंद आंखों में भी उस युवती की प्रतिमा और पुनः आंखें खोलने पर बाबा के दर्शन होने लगते. . . यही क्रम कुछ क्षणों तक रहा।

यहीं से उस मंदिर की प्रथम रहस्य वार्ता प्रारम्भ होती है, यही प्रथम अनुभव मेरे विश्वास और भक्ति, प्रेम और साधना के लिए पर्याप्त हो गया था। मैं आंखें बंद किए ही बाबा के चरणों में बहुत समय तक आंसू बहाता रहा। कण्ठ अवरुद्ध हो गया था, कुछ कह नहीं पा रहा था, यकायक तभी कानों में एक वीणा विनादित स्वर पुनः सुनाई पड़ा— **''यहां अखण्ड आनन्द और अमृत है, सम्पूर्ण सुख व आनन्द की साधना है। तुम निर्मल हो और निष्ठापूर्वक तप से तुम्हारे भीतर के संचित कर्मों की राशि उस युवती के नेत्रों की करुणामय अश्रु धारा से लुप्त हो जाएगी, और तुम अधिकारी वन सकोगे अखण्ड प्रेम और आनन्द के! उठो, आंखें खोलो. . .।''**

मैंने आंखें खोलीं, सामने अब न कोई मूर्ति थी और न वह युवती, एक व्याघ्र चर्म था, जिस पर बाबा पद्मासन लगाए बैठे मुस्करा रहे थे, एक अपूर्व दिव्य मुस्कान थी वह. . . उन्होंने मुझे अपने नजदीक आने को कहा, और बोले— मैंने ही तुम्हारे अन्तःमन को जाग्रत कर तुम्हें यहां आने के लिए विवश किया था, क्योंकि मेरा और तुम्हारा पूर्वजन्म का सम्बन्ध रहा है, उस समय मैं तुम्हारा गुरु था और तुम मेरे शिष्य, मैं तुम्हारे भक्ति, प्रेम और समर्पण में बंध गया था, और तब मैंने तुम्हें एक मनोकामना मांगने के लिए कहा था, किन्तु किसी कारणवश मैं उसे पूरा न कर सका, और यही कारण है कि मैंने इस जन्म में तुम्हें अपने उस वचन को साकार करने के लिए ही अपनी मंत्र-शक्ति के बल से यहां खींचा है।

पर मेरे मन में अब उस रूपसी युवती के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त कर लेने की अभिलाषा शेष नहीं रह गई थी, क्योंकि उसके सौन्दर्य ने मुझे मंत्र-मुग्ध जो कर दिया था।

पर मेरे मन में अब उस रूपसी युवती के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त कर लेने की अभिलाषा शेष नहीं रह गई थी, क्योंकि उसके सौन्दर्य ने मुझे मंत्र-मुग्ध जो कर दिया था। बाबा ने जैसे मेरी अभिलाषा को पढ़ लिया हो, वे काल्पनिक मुस्कान से मुस्कराए और उस युवती का रहस्य मेरे सामने खोला और कहा— **यह 'रम्भा' है, जो इन्द्र लोक की अप्सरा है, एक विशेष-मंत्र प्रयोग द्वारा मैंने एक रूपसी की मूर्ति बनाकर मंदिर के सामने उसे कीलित कर दिया था, और तभी से यह सिद्धि रूपा, अपूर्व, सौन्दर्य की स्वामिनी मेरे जीवन के सभी कार्यों को पूरा करती है, जिसकी वजह से मैं इतने वर्षों से यहां बैठा तपस्यारत हूं, इसने मुझे सारी सुख-सुविधाओं से पूर्ण किया है,** क्योंकि इस अप्सरा साधना को इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही किया जाता है, जिससे कि जीवन की दरिद्रता और अभाव समाप्त हो सकें, तथा एक ओजस्वी और सौन्दर्य युक्त शरीर का निर्माण हो सके, जो कि इसी साधना के द्वारा सम्भव था, और मैं ही नहीं इसे कोई भी कीलित प्रयोग सम्पन्न कर सिद्ध कर सकता है।

यह विद्या सामान्य मानव के लिए एक गोपनीय बात होगी, क्योंकि झूठे लोगों के अन्धविश्वास के कारण मानव-मन से मंत्र-शक्ति के प्रति आस्था और विश्वास खत्म हो चुका है, किन्तु मैं चाहता हूं कि तुम इस साधना को सिद्ध कर जन-मानस में फैली भ्रांतियों को दूर कर सको।

उन्होंने मेरे मन की अभिलाषा जानकर और अपनी इच्छा को प्रकट कर, कमण्डल से गंगाजल निकाल कर मेरे ऊपर छिड़का। बाबा का ऐसा करना था कि मेरा सारा शरीर रोमांचित हो उठा, मन में एक कल्पनातीत अपूर्व अनुभूति होनी शुरू हो गई, और साथ ही समस्त शरीर में अविस्मरणीय पुलकन, परिवर्तन. . . बाबा ने कुछ संस्कृत मंत्रों के अक्षर मेरे कानों में फूंके और मैं ध्यानस्थ हो गया, मैं उसी मंत्र को एक स्वर से दोहराता जा रहा था।

मुझे कुछ भी सुध-बुध नहीं थी, केवल अलौकिक, दिव्य, नीले प्रकाश के भीतर से फूटती शुभ्र किरणें, और उस मंत्र को दोहराती न थकती मेरे भीतर की जाग्रत-शक्ति।

मैं जब अपनी इस अवस्था में पहुंच चुका था, तभी कुछ समय पश्चात् पुनः समस्त शरीर में एक आनन्ददायक स्फुरण हुआ. . . मेरे सामने वही प्रत्यक्ष सौन्दर्य की प्रतिमान मूर्ति विराजमान थी, और उस साधना को सिद्ध कर मैंने देखा कि वह दिव्य नील वस्त्रालंकारों से अलंकृत हो मेरे सामने प्रत्यक्ष खड़ी थी, मेरे जीवन के समस्त अभावों को दूर भगाने के लिए, मुझे सुख, समृद्धि व सम्पन्नता प्रदान करने के लिए। कैसा अद्भुत आश्चर्य था मेरे जीवन का यह. . . मैंने अपनी इस अभिलाषा की पूर्ति के बाद बाबा के चरण-कमलों को प्रणाम किया और उनका विशेष आशीर्वाद प्राप्त कर घर लौट आया. . . मैंने देखा कि जब मैं किसी दुविधा में फंसा होता, तो वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उसे दूर कर देती, उसने तो मेरे पूरे जीवन को ही संवार दिया था. . . और साथ ही मुझे सौन्दर्यशाली व्यक्तित्व प्रदान कर मेरे नीरस और बेस्वाद जीवन को भी अपने प्रेम और मधुर वार्तालाप से रसमय व आनन्द युक्त बना दिया था।

अपनी इस प्रामाणिक सिद्धि को मैं जन-सामान्य के समक्ष रख रहा हूं, क्योंकि यह **''अप्सरा कीलन स्थायित्व प्रयोग''** है, जिसे कोई भी साधक, पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सम्पन्न कर अपने जीवन को सुन्दरता, प्रेम, आनन्द और सौहार्द से परिपूर्ण कर सकता है।

इस प्रयोग को सम्पन्न कर साधक अपने इस मानवीय जीवन में देव तुल्य बन सकता है, और मन को हरण करने वाली 'रम्भा' के प्रत्यक्ष दर्शन कर जीवन के सभी मनोरथों को पूर्ण कर सकता है।

सामग्रीः विशिष्ट प्राण-प्रतिष्ठित रम्भा यंत्र, रम्भा माला, दो रम्भायुत।

समयः कामदा एकादशी, २३ जुलाई, रविवार को ८.२४ से १०.४८ बजे तक रात्रि को।

साधना विधि—

यह साधना रात्रिकालीन है। साधक स्नानादि से निवृत्त होकर के पीली धोती पहिन लें, तथा पीले आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठ जाएं और अपने सामने चौकी पर पीला कपड़ा बिछा लें। एक प्लेट में **'रम्भा यंत्र'** को स्थापित करके अक्षत, पुष्प, धूप व दीप से यथाविधि पूजन सम्पन्न करें। उस यंत्र के दाएं-बाएं दोनों ओर पीले चावल की दो ढेरियां बनाकर उनके ऊपर दोनों **'रम्भायुत'** को स्थापित कर दें, तथा कुंकुम और पुष्प से उनका पूजन करें, उनके सामने एक-एक घी का दीपक पूरे साधना काल तक जलता रहना चाहिए।

साधक गुलाब की पंखुड़ियों से अपनी अजुंलियों को भरकर खड़े हो जाएं और आह्वान मुद्रा में पांच मिनट तक आसन पर खड़े होकर गुरु मंत्र का जप करें। बाद में उन पंखुड़ियों को **'रम्भा यंत्र'** पर चढ़ा दें। इसके बाद **'रम्भा माला'** से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र-जप करें।

साधकों को चाहिए कि साधना शुरू करने से पूर्व अपने साधना कक्ष को स्वच्छ एवं सुगन्धित कर लें, क्योंकि अप्सरा साधनाओं में यह सब आवश्यक प्रक्रिया है। अपने-आप को भी इत्र लगा लें, वस्त्रों में यदि आप धोती न पहिनना चाहें, तो सफेद पायजामा-कुरता भी पहिन सकते हैं।

मंत्र

ॐ हौं रम्भा उर्वश्यै मम आज्ञां पालय वशमानाय हौं फट्।।

इस मुहूर्त के अतिरिक्त भी साधक किसी भी **शुक्रवार** या **रविवार** को यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं, यदि प्रथम बार में साधना में सफलता न मिले, तो इन्हीं यंत्र और माला से तीन बार साधना सम्पन्न की जा सकती है। तीन बार साधना करने के बाद यंत्र, माला एवं अन्य सामग्री को एक वस्त्र में बांध कर किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

यह साधना अपने-आप में अद्वितीय एवं सटीक है, इसलिए इसे यथा सम्भव हर साधक को करने का प्रयास करना ही चाहिए।

मेष - यह माह आपके लिए सामान्य ही रहेगा। उतावली एवं हड़बड़ाहट न करें, जल्दबाजी में लिए गए निर्णय हानिप्रद होंगे। नए अनुबंधों में लाभ की आशा न्यून, रुका हुआ धन प्राप्त होगा, नवीन वाहन के क्रय का योग। अपनी पूंजी को अचल सम्पत्ति में परिवर्तित करें, लाभ होगा। दाम्पत्य सुख में अनुकूलता आएगी। स्वजन की मदद से उलझे मामलों में सुधार होगा तथा कुछ नवीन उलझनों का सामना करना पड़ेगा। अधिकारियों के सहयोग से परिस्थितियां अनुकूल होंगी, सहकर्मियों की ओर से सतर्कता बरतें। मांगलिक कार्यों में अड़चनें आयेंगी। मित्रों से मेल-जोल बनाकर चलें तथा यात्रा-योग कष्टकर रहेगा। ऋण के लेन-देन से बचें। समय पर काम होने से प्रसन्नता होगी।

वृषभ - इंटरव्यू के समय सामान्य रहें, परिश्रम लाभदायक होगा। संतान के शिक्षा पक्ष को लेकर चिंता रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्ति खर्च पर नियंत्रण रखें। प्रेम-विवाह के मामले में समय अनुकूल है, मित्रों का सहयोग मिलेगा। आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग नहीं। यात्रा-योग सामान्य, वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें। ६ व ७ तिथियां अनुकूल हैं। मांगलिक कार्य का योग तथा धार्मिक कार्यों पर धन व्यय होगा। ऑफिस में सहयोगी व्यवहार बनाए रखें, आपसी राजनीति से दूर रहें। संतान की ओर से मानसिक परेशानी रहेगी तथा घरेलू समस्याओं के प्रति उदासीनता न बरतें।

मिथुन - यह माह नवीन व्यवसाय स्थापित करने की दृष्टि से अनुकूल रहेगा, अतः बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति लाभ ले सकते हैं। आयात-निर्यात से सम्बन्धित व्यवसाय अधिक लाभप्रद सिद्ध होंगे। दाम्पत्य जीवन में वैचारिक मतभेद न उत्पन्न होने दें तथा प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। कला वर्ग के व्यक्ति सम्मान प्राप्त करेंगे। मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। जमीन-जायदाद में रुचि लें। मित्रों पर सीधा विश्वास न करें। संतान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होंगे तथा आर्थिक लाभ होगा। अपने-आप पर नियंत्रण रखें, जल्दबाजी में हानि होगी। दो लाभ तीन खर्च से चिंता रहेगी, किसी के बहकावे में न आयें, और किसी को ठेस पहुंचाने वाला कोई कार्य न करें।

कर्क - समय पर काम होने से प्रसन्नता होगी, संतान की ओर से प्रतिकूल व्यवहार रहेगा, तथा परिवार में वैचारिकता बनाए रखें। दाम्पत्य जीवन में कटुता रहेगी और प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता आयेगी, प्रेम विवाह में तेजी। नवीन व्यापार प्रारम्भ करने में जल्दबाजी न करें। नौकरी में तरक्की के अवसर बनेंगे, स्थान परिवर्तन का विचार प्रबल होगा। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। कला-जगत् के व्यक्ति आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता न बरतें, पेट सम्बन्धी रोगों से चिड़चिड़ापन रहेगा। ११ व १३ दोनों तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। कारोबारी यात्रा फलप्रद रहेगी।

सिंह - नवीन अनुबंधों में लाभ की स्थिति रहेगी, रुका हुआ धन प्राप्त होगा। नए वाहन का क्रय-योग बनेगा। अपनी पूंजी को अचल सम्पत्ति में परिवर्तित करें, लाभ होगा। दाम्पत्य सुख में अनुकूलता आयेगी, अतिथियों के आगमन से प्रसन्नता होगी। संतान की ओर से स्थिति सामान्य रहेगी। किसी स्वजन की सहायता से उलझे मामलों में सुधार होगा तथा कुछ नई उलझनों का सामना करना पड़ेगा, संकट के समय धैर्य न खोयें। अधिकारियों के सहयोग से परिस्थितियां अनुकूल होंगी, सहकर्मियों की ओर से सतर्कता बरतें, लालच में आकर कोई भी गलत निर्णय न लें। मांगलिक कार्यों में अड़चनें आयेंगी। मित्रों से मेल-जोल बनाकर चलें। पत्नी की उपेक्षा न करें, वैचारिकता बनाए रखें। १७, १८, २० तारीखें आपके लिए विशेष अनुकूल रहेंगी। साधना तथा कला के क्षेत्र में विशेष उत्साह दिखाई देगा।

कन्या - जो कार्य आप करना चाहते हैं, वह सावधानी पूर्वक निर्णय लेकर कर डालिए, समय अनुकूल चल रहा है। ४, ५, ६ तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। ८ तारीख शुभ नहीं है, ध्यान रखें। प्रेम-प्रसंगों को लेकर असफलता की स्थिति रहेगी। भोग-विलास की वस्तुओं में धन व्यय न करें। श्रमिक वर्ग के व्यक्ति कठिन परिश्रम के बाद भी आर्थिक स्थिति में कमजोरी अनुभव करेंगे। आय में कमी तथा खर्च में वृद्धि होने से भी चिंता रहेगी। इष्ट चिंतन एवं साधना से लाभ होगा। यात्रा-योग सामान्य रहेगा। जीवन साथी को सुख-सुविधा प्रदान करने में अधिक धन व्यय होगा।

तुला - व्यापारिक कार्य क्षेत्र में विस्तार होने से आर्थिक स्थितियों में सुधार होंगे। श्रमिक, कृषक एवं धातु से सम्बन्धित कार्य करने वाले अधिक लाभ की स्थिति में रहेंगे, आकस्मिक धन-प्राप्ति के योग सामान्य। मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, नए अनुबंध लाभप्रद होंगे। प्रेम विवाह में अनुकूलता रहेगी। कला-जगत के व्यक्ति समाज सेवा में रुचि लेंगे। जो आज सोचा है, उसे आज ही कर डालें, कल पर छोड़ेंगे तो हानि होगी। १४, १५, १६ तारीखें सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ एवं शुभ रहेंगी। स्वास्थ्य अनुकूल। नए व्यवसाय प्रारम्भ होंगे। धार्मिक-प्रसंगों को लेकर यात्रा होगी एवं व्यस्तता बनी रहेगी।

वृश्चिक - कठिन परिश्रम से परिस्थितियां अनुकूल होंगी। जीवन में समानता बनाए रखने के लिए मूंगा धारण करें। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सप्ताह कष्टप्रद रहेगा। मित्रों में आपसी अनबन होने से खिन्नता रहेगी। शत्रुओं से सावधान रहें, विश्वासघात की सम्भावनाएं प्रबल हैं। घर में अनुष्ठान आदि का योग शुभ रहेगा। सम्बन्धियों के सहयोग से काम बनेगा। अध्ययन की ओर से उपेक्षा न बरतें। स्त्री-सुख में न्यूनता आयेगी, वैचारिक मतभेदों से तनाव रहेगा। ऋण के लेन-देन से बचें। शत्रु बाधा निवारण के लिए बगलामुखी साधना करें।

धनु - पूरा माह सामान्यतः अड़चनों से भरा रहेगा। भूमि-विवादों में शांति बनाए रखें। शत्रु पीछे से वार कर सकते हैं, सावधानी बरतें। जिस बात का भय होगा, वही बात हो सकती है। कारोबारी मामलों में शिथिलता न बरतें। नए सम्पर्क लाभप्रद सिद्ध होंगे, पुराने अनुबंधों से लाभ ले सकते हैं। पूरे माह आर्थिक स्थिति अनुकूल ही रहेगी, खर्च में अधिकता रहेगी। समाज में सम्मान की स्थिति बनेगी। व्यापारिक कार्यों के सन्दर्भ में की गई यात्राएं लाभदायक रहेंगी। श्रमिक वर्ग के व्यक्ति कठिन परिश्रम के बावजूद लाभ न प्राप्त कर पाने से खिन्न रहेंगे। कार्यालय में व्यर्थ के विवादों से दूर रहें। दाम्पत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी।

मकर - जो हो रहा है, वह होने दें, तनाव की स्थिति से दूर रहें। प्रारम्भिक स्थिति अनियन्त्रण में, लेकिन सप्ताहांत अनुकूल रहेगा। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें। राज्य पक्ष की ओर से अनुकूलता प्राप्त होगी तथा सम्बन्धियों की सहायता लेनी पड़ सकती है। मित्रों पर भरोसा करना संकट की स्थिति उत्पन्न करेगा। ग्रह-बाधा निवारण का प्रयत्न करें। किसी से धन उधार न लें। शुभ समाचारों से प्रसन्नता होगी। मांगलिक कार्य का योग बनेगा। किसी अनुष्ठान आदि से स्थिति अनुकूल होगी। आर्थिक स्थिति में दृढ़ता प्राप्त करने के लिए कुबेर साधना करें।

कुंभ - इंटरव्यू के विषय में संयम रखें तथा सिफारिशों पर भरोसा न करें, रोजगार प्राप्ति के अवसर बनेंगे, नौकरी की तरफ झुकाव होगा। आप नीलम धारण कर इष्ट शांति का उपाय करें, इससे लाभ होगा। प्रेम-प्रसंगों के मामलों में सावधानी बरतें। ७, ८, ६ तारीखें आपके लिए अनुकूल रहेंगी। संतान की ओर से चिंताजनक समाचार प्राप्त होंगे। परिवार के किसी सदस्य के प्रति चिंता बनी रहेगी। राज्य पक्ष अनुकूल रहेगा तथा उन्नति के अवसर भी प्राप्त होंगे। पड़ोसियों से वाद-विवाद की स्थिति में शांति बरतें। आर्थिक हानि की सम्भावना है। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय हानिप्रद होंगे। कारोबारी मामलों में किसी पर विश्वास न करें।

मीन - नवीन व्यापार तथा नवीन अनुबंधों में आर्थिक लाभ होगा। कृषक एवं कला-जगत् के व्यक्ति अत्यधिक लाभ की स्थिति में रहेंगे। ३, ५, ७ तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। जीवन में समानता लाने के लिए पुखराज धारण करें। इष्ट की उपासना करें, लाभ होगा। धार्मिक-प्रसंगों को लेकर तनाव रहेगा। मित्रों से वाद-विवाद हो सकता है, सचेत रहें। मुकदमों में विजय के आसार, अधिकारियों से सम्बन्ध मधुर बनेंगे, नौकरी में तरक्की के योग प्रबल हैं। सम्बन्धियों की सहायता करने से आर्थिक स्थिति में कमजोरी आयेगी।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०२/०५/६५	वैशाख शुक्ल पक्ष ३	अक्षय तृतीया, परशुराम जयन्ती
०५/०५/६५	वैशाख शुक्ल पक्ष ५	आद्य शंकराचार्य जयन्ती
०७/०५/६५	वैशाख शुक्ल पक्ष ७	रवि पुष्य योग
०८/०५/६५	वैशाख शुक्ल पक्ष ८	बगलामुखी जयन्ती
११/०५/६५	वैशाख शुक्ल पक्ष ११	मोहिनी एकादशी
१३/०५/६५	वैशाख शुक्ल पक्ष १४	श्री नृसिंह चतुर्दशी
१७/०५/६५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ३	चतुर्थी व्रत
२४/०५/६५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ११	अपरा एकादशी
२५/०५/६५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष १२	सर्वेषां सिद्धि दिवस
२८/०५/६५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष १४	श्री शनि जयन्ती
२६/०५/६५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष १५	सोमवती अमावस्या
३०/०५/६५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १	रम्भा व्रत
०६/०६/६५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ८	अष्टमी सिद्ध योग
०८/०६/६५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १०	श्री गंगा दशहरी
०६/०६/६५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ११	निर्जला एकादशी
११/०६/६५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १३	प्रदोष व्रत
१३/०६/६५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १५	पूर्णमासी
१६/०६/६५	आषाढ़ कृष्ण पक्ष ४	चतुर्थी व्रत
२३/०६/६५	आषाढ़ कृष्ण पक्ष ११	योगिनी एकादशी
२५/०६/६५	आषाढ़ कृष्ण पक्ष १३	प्रदोष व्रत
२७/०६/६५	आषाढ़ कृष्ण पक्ष ३०	भौमवती अमावस्या
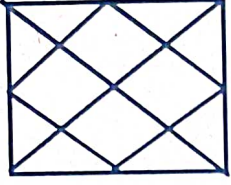
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

प्रश्न— **गुप्तांग रोग कारण और निवारण?**

उत्तर— पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा तथा अनंग प्रयोग।

श्री ओम प्रकाश, राजस्थान

प्रश्न— **मेरा विवाह कब होगा?**

उत्तर— ज्योतिषीय दृष्टि से आपका विवाह हो जाना चाहिए, आप दैविक दोष-निवारण हेतु शीघ्र विवाह दीक्षा प्राप्त करें।

मोहनचंद्र द्विवेदी, नई दिल्ली

प्रश्न— **मेरे दामाद सुनील की पीठ एवं जोड़ों में दर्द है, उसका उपचार क्या है?**

उत्तर— पूर्ण रोग मुक्ति दीक्षा के पश्चात् मेडिकल उपचार लाभदायक सिद्ध होगा।

केवल कृष्ण, बटाला, पंजाब

प्रश्न— **मेरा भाग्योदय कब तथा कैसे होगा?**

उत्तर— आपका भाग्योदय शीघ्र ही होगा, आप तांत्रोक्त गुरु-साधना सम्पन्न करें।

शीतल प्रसाद, जौनपुर

प्रश्न— **क्या किसी प्रतियोगितात्मक परीक्षा द्वारा उच्च राज्य पद पाने का योग है? यदि हां, तो कब और क्या?**

उत्तर— सम्भावनाएं क्षीण हैं, पूज्य गुरुदेव से मिलकर उपाय प्राप्त करें।

कमलेश चन्द्र मिश्र, इलाहाबाद

प्रश्न— **मैं कब चल सकूंगा, निवारण क्या?**

उत्तर— आप पूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत रूप से मिलें।

पराशर आर० पंड्या, नूतन नगर

प्रश्न— **साधना में मेरा लक्ष्य कहां तक है? क्या मैं लक्ष्य प्राप्त कर सकूंगा?**

उत्तर— साधना का लक्ष्य भोग और मोक्ष प्राप्त कर सिद्धाश्रम जाना है, आप प्रयास करें, सफलता प्राप्त होगी ही।

डी० के० गायकवाड, दुर्ग

प्रश्न— **मैं भविष्य में क्या बनूंगा?**

उत्तर— एक सफल व्यवसायी।

लैम्बर सिंह, दुर्गापुर

प्रश्न— **मुझे नौकरी मिलेगी? क्या मैं आई० ए० एस० पास हो पाऊंगा, कि नहीं?**

उत्तर— सम्भावनाएं हैं, परन्तु बाधाएं अधिक, आप प्रयास करें।

राजेश कुमार सिंह, वाराणसी

प्रश्न— **रोजगार प्राप्ति के लिए सरल अचूक उपाय बताएं।**

उत्तर—भाग्योदय दीक्षा एवं साधना।

प्रमोद कुमार, नई दिल्ली

प्रश्न— **मेरी पत्नी शूगर और रक्तचाप से बीमार है, उसका निदान?**

उत्तर— रोग मुक्ति दीक्षा एवं गुरु साधना।

केवल कृष्ण, बटाला

प्रश्न— **सरकारी नौकरी कब मिलेगी?**

उत्तर— सम्भावनाएं कम हैं, प्राईवेट नौकरी के लिए प्रयास करें।

पुष्पा कुमारी, झाबुआ

प्रश्न— **मेरा जीवन फिल्मों से कब जुड़ेगा, उपाय बताएं।**

उत्तर— पूज्य गुरुदेव से मिलकर अनुष्ठान सम्पन्न करें।

संतोष गुप्ता, बोकारो

प्रश्न— **मैं जीवन सुखमय व्यतीत करने के लिए कौन-सा उद्योग या व्यवसाय करूं?**

उत्तर— धातु अथवा डेरी फार्म का व्यवसाय करें।

तोताराम , गढ़चिरोटी

प्रश्न— **क्या मेरे भाग्य में करोड़पति बनना लिखा है, और कब?**

उत्तर— इस प्रकार का योग नहीं है, परन्तु यदि साधनात्मक प्रक्रिया का जीवन में समावेश हो जाए, तो सब कुछ सम्भव है।

संजीव वर्मा, केयर ऑफ ११ ए० पी० ओ०

प्रश्न— **अच्छे स्वास्थ्य और शिक्षा की विशेष जानकारी दें, उपाय भी बताएं।**

उत्तर— पूर्ण रोग मुक्ति दीक्षा तथा सरस्वती दीक्षा प्राप्त कर साधना करें।

राजीव एमन, पूर्णिया

प्रश्न— **पुत्र की पढ़ाई के विषय में चिंता रहती है?**

उत्तर— पूर्ण चैतन्य सरस्वती दीक्षा दिलायें।

गौरव बंसल, फर्रुखाबाद

प्रश्न— **क्या दसवीं कक्षा में सफलता मिलेगी?**

उत्तर— हां, पूर्ण मनोयोग से परिश्रम करें।

जोशी वृंदा मोरेश्वर, बम्बई

प्रश्न— **क्या मैं भविष्य में अमीर बनूंगा? नहीं तो उपाय बताएं।**

उत्तर— आपकी मनोकामनाएं निकट भविष्य में पूर्ण होंगी, आप महालक्ष्मी अनुष्ठान सम्पन्न करें।

सतीश मोरेश्वर जोशी, बम्बई

प्रश्न— **किसी साधना में सफलता मिलेगी?**

उत्तर— आप वीर साधना करें।

सूबेदार सिंह, मिरजापुर

प्रश्न— **स्थानान्तरण कब तक?**

उत्तर— निकट भविष्य में स्थानान्तरण का योग नहीं, मनोकामना पूर्ति के लिए भैरव साधना करें।

गणपति मगरेद, बीरसिंह पुर

प्रश्न— **साधना में पूर्ण सिद्धि कब तक?**

उत्तर— सफलता प्राप्ति में विलम्ब सम्भावित, प्रयास जारी रखें।

बलराम सिंह, धनबाद

प्रश्न— **स्वतंत्र धंधा करना चाहता हूं, कौन-सा करूं?**

उत्तर— आपके लिए नौकरी करना ही अधिक उपयुक्त होगा।

भालचन्द्र, डोंबिवली

प्रश्न— **कौन - सी अप्सरा अथवा यक्षिणी साधना मेरे लिए उपयुक्त होगी?**

उत्तर— पुष्पदेहा अप्सरा साधना करें।

दिनेश जैन, बम्बई

(कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)

नाम :-..

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

– ज्योतिष प्रश्नोत्तर –

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय

306, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034

जीवन के वे सूत्र, जो आपको सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा सकते हैं

ईर्ष्या मत कीजिये, इसकी अपेक्षा स्पर्धा कीजिये।

जीवन का सार स्वास्थ्य है और सब कुछ बेमानी हैं।

धोखा, असत्य और विश्वासघात उन्नति के प्रबलतम शत्रु हैं।

अपने अधिकारी के प्रति निष्ठावान और विश्वासपात्र बने रहें।

नीर के बिना नदी और पति के बिना पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं।

साधना में सफलता का मूल मंत्र है- ''शरीरं साधयति वा प्राप्यंति''

प्यार और मित्रता को पैसों से मत आंकिये, यह उनका अपमान है।

ऑफिस में या बातचीत
करते समय धूम्रपान, व्यसन या सिगरेट का प्रयोग मत कीजिये।

अपने से बड़ों के साथ या ऑफिसर के सामने समस्याएं ले
जाते वक्त उसका सम्भावित समाधान भी अपने दिमाग में रखिये।

किसी के साथ बातचीत प्रारम्भ करते समय उसके मन
के अनुकूल बात प्रारम्भ करें, अपनी समस्या प्रारम्भ में ही मत रखिये।

जिसकी अधिकतम प्रतियां विदेशों में भेजी जाती हैं . . .

MANTRA

TANTRA YANTRA VIGYAN
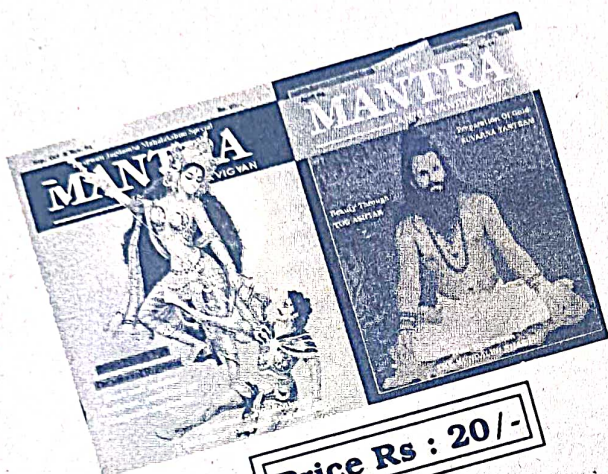
संरक्षक : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक पत्रिका
पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
के षष्ठी पूर्ति महोत्सव के अवसर पर
पाठकों के अत्यन्त अनुरोध पर
त्रैमासिक अंग्रेजी पत्रिका

जिसमें है–

- जीवन के बहुमुखी उत्थान के लिए प्रामाणिक व उपयोगी साधनाएं, योग, चिकित्सा, सौन्दर्य और ज्योतिष
- इसके पूर्व प्रकाशित दो संस्करण ''भगवती जगदम्बा विशेषांक'' तथा ''महालक्ष्मी विशेषांक'' जिसका पाठकों ने अत्यन्त उत्साह से स्वागत किया।

आपके जिज्ञासा को ध्यान में रख कर प्रस्तुत है इस बार . . .

TANTRA SPECIAL

इस विशेषांक के आकर्षण है –

- The Myths & the baseless . . .
- Beginning of a New Life
- Guhya Kali Sadhana
- Read YOur own hand
- Yes! we have experienced divinity
- Life after Death

आप अपनी प्रति निकटतम बुक स्टालों से प्राप्त करें न मिलने पर लिखें –

Mantra Tantra Yantra Vigyan
Dr. Shrimali Marg,
High Court Colony, Jodhpur (Raj.)
Ph. : 0291-32209
Fax : 0291-32010

Siddhashram
306, Kohat Enclave,
Pitampura, New Delhi-34,
Ph : 011-7182248
Fax : 011-7186700

जो कार्य जीवन में तुम्हारे द्वारा सम्भव नहीं हो पा रहा है वह निश्चित रूप से सम्भव हो सकता है

दीक्षा क्या है, इसे सभी लोग समझ नहीं पाते, क्योंकि उन्हें दीक्षा का महत्व ही ज्ञात नहीं। दीक्षा कोई आडम्बर या ढोंग नहीं, अपितु यह तो शिव-शक्ति सायुज्य का साधक के हृदय में अभ्युदय है, गुरु-शिष्य का सम्बन्ध सूत्र है, गुरु-शक्ति का संचरण है शिष्य के भीतर।

गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त करना तो जीवन का परम सौभाग्य होता है, क्योंकि दीक्षा के माध्यम से गुरु शिष्य के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को पूर्ण कर उसे जीवन की पूर्णता प्रदान करता है। ''दीक्षा'' सद्गुरु दर्शन, स्पर्श और शब्द के द्वारा शिष्य के भीतर आत्म-भाव उत्पन्न करने की क्रिया है। ''दीक्षा'' शिष्य की निधि है, शिव सायुज्य होने का विधान है, लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग है।

आज के पंडित-समाज ने ''दीक्षा'' के स्वरूप को विकृत कर मानव-मन को भ्रमित कर दिया है, यही कारण है कि मानव दीक्षा के मूल अर्थ को नहीं समझ सका। दीक्षा वास्तव में आत्म-संस्कार का ही दूसरा नाम है, जो कार्य मनुष्य अपने जीवन में मेहनत और कठिन परिश्रम से भी सम्पन्न नहीं कर पाता, वह कार्य दीक्षा के माध्यम से निश्चित रूप से सम्पन्न किया जा सकता है, क्योंकि मानव के मस्तिष्क में स्थित आज्ञा चक्र में ३२ **''ज्योतिर्बिन्दु''** होते हैं, जिन में से १६ बिन्दु भौतिक और १६ बिन्दु आध्यात्मिक होते हैं, जिन्हें **''शक्ति बिन्दु''** भी कहा जाता है।

जिस प्रकार भाखड़ा नांगल विद्युत गृह में एक विशेष बटन को दबाने से पूरे पंजाब में रोशनी हो जाती है, उसी प्रकार शिष्य के आज्ञा चक्र में स्थित उन विशेष बिन्दुओं को स्पर्श करके उसके जीवन की समस्त कमियों और न्यूनताओं को दूर कर उसके जीवन को प्रकाशित

किया जा सकता है, जिससे कि वह उस दूधिया प्रकाश में अपने लक्ष्य तक आसानी से पहुंच कर जीवन के ''पूर्णत्व'' को प्राप्त कर सके।

ये निम्नलिखित बिन्दु अत्यन्त ही गोपनीय रहे हैं, जिनका ज्ञान शायद ही किसी को हो, क्योंकि केवल मात्र तिब्बत के हस्तलिखित ग्रंथ **''ब्रह्म सूत्र विमर्षन''** में ही इनका स्पष्टीकरण है, इसके अतिरिक्त अन्य कहीं भी इस गोपनीय तथ्य को इतनी सूक्ष्मता से उजागर नहीं किया गया है, और न ही किसी को इस तथ्य का ज्ञान ही है।

क्रम	भौतिक बिन्दु	आध्यात्मिक बिन्दु
१.	स्वास्थ्य	मानसिक सुख
२.	पैत्रिक धन	सन्तुष्टि
३.	पूर्ण सौन्दर्य प्राप्ति	ध्यान
४.	पूर्ण पौरुष प्राप्ति	गुरुत्व प्राप्ति
५.	मकान	आत्म-प्रकाश
६.	पुत्र	उन्मुक्त अवस्था
७.	विद्या	निर्विचार मन
८.	शत्रु निवारण	पूर्ण शिष्यत्व समर्पण
९.	विवाह	समाधि
१०.	पति-पत्नी सुख	सिद्धि सफलता
११.	अकाल-मृत्यु निवारण	कुण्डलिनी जागरण
१२.	भाग्योदय	सहस्रार दर्शन
१३.	राज्य सम्मान	विराट साक्षात्कार
१४.	आय	समस्त लोक दर्शन
१५.	ऐश्वर्य	परमहंस अवस्था
१६.	मनोवांछित सफलता	सिद्धाश्रम प्राप्ति

इन ३२ ज्योतिर्बिन्दुओं का स्वयं मानव को भी ज्ञान नहीं होता, अपितु मात्र योग्य गुरु ही इस रहस्य का ज्ञाता होता है, तथा दीक्षा के माध्यम से वह उन बिन्दुओं को स्पर्श कर मानव-जीवन की न्यूनताओं का हमेशा के लिए अंत कर देता है, और इन बिन्दुओं को जाग्रत करने की क्रिया ही विशिष्ट दीक्षा है, किन्तु हर किसी गुरु को इस क्रिया-पद्धति का ज्ञान नहीं होता, उसे यह नहीं ज्ञात होता कि मानव के मस्तिष्क में ये ३२ बिन्दु निर्मित हैं या नहीं, और न ही उसे इन्हें जाग्रत करने की क्रिया का ही भली प्रकार से ज्ञान होता है।

''दीक्षा'' केवल अंगुष्ठ मात्र को शिष्य के ललाट पर रख देने की क्रिया नहीं है, वरन् जिस प्रकार शिष्य के ललाट में ३२ बिन्दु होते हैं, उसी प्रकार गुरु के अंगुष्ठ में भी ३२ बिन्दु समाहित होते हैं, जिन्हें ''शिव बिन्दु'' कहा जाता है, तथा केवल मात्र योग्य एवं समर्थ गुरु ही

हीरकं नैव भूगर्भात् परिशुद्धं समेष्यति।
तपस्यांश प्रदानेन पावनं गुरु दीक्षया।।

खान से निकला हुआ हीरक खण्ड शुद्ध नहीं होता, उसे पहले शुद्ध करना पड़ता है, उसी प्रकार गुरु अपनी तपस्या के अंश दान से दीक्षा द्वारा शिष्य को पावन बना देता है।

विशेष शक्तिपात के द्वारा अपने अंगुष्ठ को शिष्य के ललाट पर रखकर, शिव-शक्ति का सम्बन्ध स्थापित कर शिष्य को जीवन की सर्वोच्चता प्रदान करता है, श्रेष्ठता प्रदान करता है, पूर्णता प्रदान करता है, उसके जीवन को अधोगामी से ऊर्ध्वगामी बना देता है।

और इस विशिष्ट क्रिया का मूल रूप से ज्ञान केवल किसी महापुरुष अथवा समर्थ गुरु को ही ज्ञात होता है। जो दीक्षा के नाम पर दिखावा करते हैं या जिन्हें इस क्रिया का मूलतः ज्ञान नहीं होता, ऐसे धूर्त गुरु शिष्य के ललाट में स्थित बिन्दुओं को अज्ञानतावश स्पर्श कर उनके जीवन को कष्टप्रद बना देते हैं, जिससे उन शिष्यों को लाभ मिलने की अपेक्षा हानि ही पहुंचती है।

उदाहरणतः यदि किसी का विवाह न हो रहा हो और अज्ञानी गुरु उसके ललाट में स्थित विवाह बिन्दु की अपेक्षा पुत्र-प्राप्ति वाले बिन्दु को स्पर्श कर दे, तो ऐसे व्यक्ति का विवाह तो सम्पन्न नहीं होता, किन्तु वह किसी गलत स्त्री के चक्कर में पड़ कर इस प्रकार का कुकर्म कर बैठता है, जिससे कि उसे जीवन भर बदनामी एवं उपेक्षाएं ही मिलती हैं, अतः गलत बिन्दु के स्पर्श हो जाने से उसे सैकड़ों-हजारों समस्याओं से जूझना पड़ सकता है।

''स्वयम् असिद्धः कथम् अन्यान् साधयेत्'' अर्थात् जो ढोंगी होते हैं, जिन्हें इस क्रिया का ज्ञान नहीं होता तथा जो स्वयं ही इस क्रिया में सिद्ध नहीं होते, वे दूसरों को भी सिद्धि का मार्ग नहीं दिखा सकते, इसीलिए किसी योग्य गुरु से दीक्षित होना जीवन का अहोभाग्य कहलाता है।

अहो पुण्यम् अहो भाग्यं सौभाग्यपदवीमनु ।
दिव्यं स्व जीवितं कुर्यात् दीक्षया विधया तया ।।

अर्थात् दीक्षा के माध्यम से ही मनुष्य-जीवन दिव्य, पवित्र, पुण्यमय एवं सौभाग्यदायक बनाया जा सकता है।

आजकल किसी व्यक्ति के पास इतना समय नहीं है कि वह एक स्थान पर बैठकर, लम्बे समय तक साधना कर जीवन में सफलता और सिद्धि प्राप्त कर सके, किन्तु दीक्षा द्वारा वह शीघ्र ही कुछ ही क्षणों में शक्तिपात के माध्यम से अपने जीवन में सफलता और सिद्धि दोनों ही प्राप्त कर सकता है। मात्र गुरु-कृपा के माध्यम से किए गए ऊर्ध्वपात से वह कम समय में ही, विना परिश्रम किए जीवन के भोग एवं मोक्ष दोनों को प्राप्त कर ब्रह्मानन्द में लीन हो जाता है।

ललाट में स्थित ३२ ज्योतिर्बिन्दु

दीक्षा का मूल तात्पर्य श्रेष्ठ गुरु द्वारा ही ज्ञात किया जा सकता है, जो उसके वास्तविक स्वरूप को प्रतिपादित करने की सामर्थ्य रखता हो, वही दीक्षा द्वारा कर्म-वासनाओं के वंधन से मुक्त कर उसे वास्तविक जीवन का साक्षात्कार करा सकता है, किन्तु आज के इस आडम्बर युक्त समाज में अज्ञानी गुरुओं के प्रदर्शन मात्र से मनुष्य दीक्षा के वास्तविक प्रभाव को न जान पाने के कारण, उसे व्यर्थ की क्रिया ही मानकर जीवन के बहुत बड़े सौभाग्य से वंचित रह जाता है, मात्र मुंह से गुरु-गुरु या शिष्य-शिष्य शब्द का उच्चारण करने से कुछ नहीं हो पाता, जब तक की वह व्यक्ति पूर्ण विधि-विधान के साथ शास्त्रोचित पद्धति से दीक्षा प्राप्त नहीं कर लेता।

''दीक्षया अमृतत्त्वमाप्नोति'' अर्थात् गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त करने पर शिष्य को ''अमृतत्त्व'' की प्राप्ति सम्भव होती है। चाहे साधक कितना ही महान क्यों न हो, पर उसे तब तक पूर्ण सिद्धि एवं सफलता प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक कि वह गुरु से दीक्षा प्राप्त न कर ले, क्योंकि गुरु ही दीक्षा द्वारा उसकी मलीन आत्मा का संस्कार करता है।

व्यक्ति, साधक या शिष्य मायावी व्यवहार, दोष एवं पाश से हर क्षण आबद्ध रहता है, इन दोषों और पापों के कारण ही उसका पूर्णत्व प्रस्फुटित नहीं हो पाता तथा अपनी आत्मा पर झूठ, छल, पाप और असत्य का आवरण रहने से वह अपने-आप को अपूर्ण ही समझने लगता है, और यही भावना उसके अन्दर शारीरिक एवं मानसिक रोगों को उत्पन्न कर देती है, जिससे कि वह अपनी आयु क्षीणता का अनुभव करने लगता है, अतः बाहरी प्रपंचों से घिरा रहने के कारण उसका जीवन अभावयुक्त और

आकर्षक योजना
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
१९८१ से प्रकाशित होने वाली
इस पत्रिका के कई दुर्लभ अंकों
की मांग आप सभी पाठकों द्वारा
की गई है। आपकी इस आवश्यकता
को ध्यान में रख कर ही हमने इन
दुर्लभ अंकों का प्रकाशन किया है।
इन्हें प्राप्त करने के लिए आप सिर्फ
अपना नाम व पता हमें लिख कर भेज
दें, और हम आपको मात्र १००/- में भेजेंगे
इन दुर्लभ १२ अंकों का पूरा सेट, इनका
संग्रह आप अपने लिए कर सकते हैं और
अपने किसी मित्र को उपहार में दे कर
उसके जीवन को प्रशस्त करने का मार्ग
प्रदान कर सकते हैं . . . अब देर नहीं करें—
पुनर्प्रकाशित विशेषांक —
१९९१ का पूरा सेट
१९९२ का पूरा सेट
१९९३ का पूरा सेट
१९९४ का पूरा सेट
१९८६ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८७ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८८ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८९ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९९० के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
मंत्र-तंत्र-यंत्र
इनमें से आप कोई भी १२ अंक अपनी इच्छानुसार हमें लिख भेजें।
हां! इतना अवश्य है कि यदि आप एक साथ ६ अंक मंगायेंगे, तो ६०/- देय होगा तथा १२ अंक मंगाने पर मात्र १००/- देय होगा। प्रति अंक १५/- देय होगा।
नोट : पुराने अंक सीमित संख्या में ही उपलब्ध हैं।

. . . और इस विशिष्ट क्रिया का मूल ज्ञान केवल समर्थ गुरु को ही ज्ञात होता है. . . तथाकथित गुरु दीक्षा के नाम पर दिखावा करते हैं. . . जो अज्ञानतावश शिष्य के ललाट में स्थित बिन्दुओं को स्पर्श कर उनके जीवन को कष्टप्रद बना देते हैं. . . जिससे उन शिष्यों को लाभ मिलने की अपेक्षा हानि ही पहुंचती है।

जीवन में सफलता प्राप्त करता हुआ उन्नति की ओर अग्रसर हो पूर्ण मानव बन सकता है।

शक्तिपात के तीव्रतादि भेद एवं शिष्य के अधिकार वैचित्र्य के अनुसार दीक्षा नाना प्रकार की होती है, इन दीक्षाओं को किसी भी अवस्था में प्राप्त किया जा सकता है, बालक, युवक, वृद्ध तथा गर्भस्थ शिशु एवं स्त्रियां सभी इसे प्राप्त कर अपने जीवन को शुद्ध, पवित्र और दिव्य बना सकते हैं, क्योंकि इसमें आयु का या वर्ग-विशेष का कोई महत्व नहीं होता।

निराशाजनक बन जाता है। यह अपूर्णता का बोध करता है, एवं यही अन्यान्य मलों का भित्ति स्वरूप भी है।

दीयते ज्ञान सद्भाव क्षीयते पशुवासना,
दान क्षपण संयुक्ता दीक्षा तेनेह कीर्तिता।

अर्थात् जिसके द्वारा ज्ञान दिया जाता है और पशु-वासना का क्षय किया जाता है, ऐसे गुरु प्रदत्त दान और क्षपणयुक्त क्रिया का नाम 'दीक्षा' है। दीक्षा मायामण्डल से शिष्य को बाहर निकालने की क्रिया है, जिस क्रिया-शक्ति के द्वारा शिष्य के अज्ञान रूपी मल को गुरु धो डालता है, क्योंकि चित्त निर्मल न होने पर शिष्य निरावरण सत्ता का अनुभव नहीं कर पाता, जिस कारण वह अपने जीवन में सुख-दुःख का अनुभव करने लगता है, यह दीक्षा व्यापार आत्मा के निज के दिव्य ज्ञान उन्मेष का द्वार-स्वरूप है।

दीक्षा ज्ञान देने की क्रिया है, जिसके द्वारा जीव का उद्धार होता है, और वह अपना मूल स्वरूप पहिचान कर अखण्डानन्द में लीन हो जाता है, यह एकबारगी समाप्त होने वाली क्रिया नहीं है, क्योंकि इस सांसारिक माया से बद्ध जगत में शिष्य का शरीर रूपी कपड़ा बार-बार मैला हो जाता है, और गुरु दीक्षा के माध्यम से बार-बार उस मैल को धो कर उसके चित्त को शुद्ध, निर्मल व पवित्र करता है, जिसके माध्यम से शिष्य में व्याप्त पौरुष-अज्ञान का विध्वंस होने लगता है।

यों तो कई प्रकार की दीक्षाएं होती हैं, किन्तु शास्त्र आदि के आधार पर १०८ प्रकार की दीक्षाओं का ही वर्णन मिलता है। व्यक्ति ३२ ज्योतिर्बिन्दुओं से सम्बन्धित भौतिक और आध्यात्मिक किसी भी क्षेत्र में गुरु द्वारा दीक्षा के माध्यम से शिव-शक्ति सायुज्य की कृपा प्राप्त कर अपने

"दीक्षा" . . . एकबारगी समाप्त होने वाली क्रिया नहीं है. . . अपितु यह एक सतत प्रक्रिया है. . . एक दीक्षा के बाद दूसरी दीक्षा, दूसरी के बाद तीसरी . . . यह तो भौतिक और आध्यात्मिक, भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान कर पूर्ण मानव बना देने वाली क्रिया है।

इन १०८ दीक्षाओं में भौतिक, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान और सभी प्रकार के सुखों की उपलब्धि छुपी हुई होती है। व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार इन दीक्षाओं को किसी योग्य गुरु से प्राप्त कर, अपनी सभी समस्याओं का अन्त कर जीवन में विजयी हो जाता है, अतः पाश का प्रशमन एवं शिवत्व की अभिव्यक्ति की योग्यता दीक्षा से ही सिद्ध होती है, लेकिन दीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि आप जिस उद्देश्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, वह कार्य सम्पन्न हो ही जाए, अपितु दीक्षा का तात्पर्य तो यह है कि आप जिस उद्देश्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, उस कार्य के लिए आपका मार्ग प्रशस्त हो, किन्तु इसके लिए आवश्यकता होती है गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास की, तभी पूर्णता सम्भव है।

पाप विमोचनी त्रिपुर सुन्दरी साधना

बालार्कायुततेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्शेखराम् ।
हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रतीं
श्री चक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ।।

साधनाओं में सफलता प्राप्ति का मूल उत्स पुष्ट देह, सचरित्र तथा शांत मानस होता है। इस प्रकार की देह, इस प्रकार का मानस तथा ऐसा ही जीवन प्राप्त करना आज के इस भौतिकवादी युग में अत्यन्त ही दुष्कर कार्य हो गया है। व्यक्ति चाहकर भी अपने-आप को पवित्र तथा निर्मल नहीं बना पाता, वह जाने-अनजाने में अनेक कर्म-दोषों से ग्रसित होता ही है।

यह समस्त भूलोक पूरी तरह से कर्म प्रधान है, इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाले प्रत्येक जीव को कोई न कोई कर्म करते ही रहना पड़ता है, और यह कर्म करना जीव की विवशता ही कही जा सकती है, उसकी यह विवशता मृत्यु के पश्चात् भी समाप्त नहीं होती।

यों तो कर्मों की विवेचना करना, पाप और पुण्य का सही निर्णय करना अनादिकाल से ही एक दुष्कर कार्य रहा है, फिर भी जनहित की भावनाओं को लेकर कर्मों का संक्षिप्त विवेचन करना आज के युग में अत्यन्त ही आवश्यक हो गया है।

प्रायः सामान्य दृष्टि से देखा जाए, तो जीव जन्म लेते ही कर्म-बन्धनों से जुड़ जाता है, और प्रतिपल नवीन कार्य करना तथा पूर्वजन्मकृत संचित कर्मों के फलों को भोगना जीव की नियति है, और यही नहीं अपितु जीव जिस गर्भ से जन्म लेता है, जिस परिवार में जन्म लेता है, उनके कर्मों का परिणाम भी उससे जुड़ा रहता है, जिसे जीव को भोगना ही पड़ता है।

यहां सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि जीव कितने प्रकार के कर्म करता है अथवा वे कर्म, जिनका भोग जीव को भोगना पड़ता है, कितने प्रकार से सम्पन्न होते हैं?

प्रथम वे कर्म होते हैं, जिन्हें जीव स्वयं को प्राप्त पंच भौतिक देह के माध्यम से सम्पन्न करता है, तथा भू लोक के समस्त प्राणी, जिन्हें देखते हैं और उनसे प्रभावित होते हैं, और जिसका परिणाम जीव को निश्चित तथा शीघ्र ही प्राप्त होने वाला होता है, ऐसे कर्म **''दैहिक कर्म''** कहलाते हैं।

दूसरे कर्म वे होते हैं, जिन्हें जीव दैहिक कर्मों के अलावा मानसिक रूप से सम्पन्न करता है। इस प्रकार के कर्म दैहिक कर्मों के साथ-साथ ही सम्पन्न किये जाते हैं। इन कर्मों को **''वैचारिक कर्म''** कहते हैं। इनका परिणाम स्थूल देह के साथ-साथ आत्मा को भी भोगना पड़ता है, यदि इन वैचारिक कर्मों को दैहिक कर्मों से न भी जोड़ा जाए, तो भी जीवात्मा इनके परिणामों से प्रभावित होती ही है।

तीसरे प्रकार के कर्म सर्वथा विचित्र तथा अनोखे होते हैं, विचित्र इसलिए होते हैं, क्योंकि जीव इन कर्मों को न तो देह के माध्यम से सम्पन्न करता है, और न ही मानसिक रूप से। इस प्रकार के कर्मों को कोई दूसरा व्यक्ति ही सम्पन्न करता है, जिसका परिणाम भी पहले व्यक्ति अथवा जीव को भोगना ही पड़ता है।

इस प्रकार से यह जीव-जगत, यह मनुष्य अनेक प्रकार के कर्म-दोषों से ग्रसित हो जाता है, और जब तक वह इन दोषों से, इन त्रितापों से मुक्ति नहीं पा लेता, इन पर नियन्त्रण स्थापित नहीं कर लेता, तब तक वह जीवन में पूर्ण उन्नति, पूर्ण शांति, सुख, वैभव एवं जीवन की सर्वश्रेष्ठ निधि **''ब्रह्मानन्द''** को नहीं प्राप्त कर सकता।

महादेवी त्रिपुर सुन्दरी की साधना एक पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की साधना है, नर से नारायण बनने की साधना है, साधना के मार्ग में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने की साधना है। साधक इस साधना को सिद्ध कर, अपने जीवन को उन्नति तथा सफलता के पथ पर गतिशील कर जीवन को श्रेष्ठता व दिव्यता प्रदान कर सकता है।

इन त्रितापों पर विजय प्राप्त करने की, इन दोषों को समाप्त करने की एकमात्र सर्वश्रेष्ठ साधना **''त्रिपुर सुन्दरी साधना''** है। यह महाविद्या साधना दस महाविद्याओं में से एक है। महादेवी त्रिपुर सुन्दरी अपने भक्तों के, अपने साधकों के दोषों को दूर करने के लिए प्रति क्षण तत्पर रहती ही हैं।

त्रिपुर सुन्दरी व्यक्ति के पूर्व संचित कर्मों को तो समाप्त करती ही हैं, साथ ही व्यक्ति के जीवन में चल रहे वर्तमान समय के दुष्कर्म, जो कि व्यक्ति के लिए ज्ञात-अज्ञात

हैं, अपनी सूक्ष्म उपस्थिति से उन कर्मों को न करने देने के लिए प्रायः व्यक्ति को विवश करती रहती हैं, और उसे जीवन में निर्मलता, पवित्रता, श्रेष्ठता तथा निष्पाप जीवन प्रदान करने के साथ ही वह सब कुछ प्रदान कर देती हैं, जिसका कि वह व्यक्ति आकांक्षी है।

महादेवी त्रिपुर सुन्दरी जिस स्वरूप में विद्यमान हैं, वह अत्यन्त ही गूढ़तम रहस्यों से ओत-प्रोत है। जिस महामुद्रा में वे भगवान् शिव की नाभि से निकलते कमलदल पर विराजमान हैं, वे मुद्राएं उनकी कलाओं को प्रदर्शित करती हैं, उनके कार्यों की तथा उनकी अपने भक्तों के प्रति जो भावनाएं हैं, उनका सूक्ष्म विवेचन करती हैं।

सोलह पंखुड़ियों के कमलदल पर पद्मासन मुद्रा में बैठी देवी 'त्रिपुर सुन्दरी' पूर्ण मातृ स्वरूपा हैं, तथा सभी पापों एवं दोषों से मुक्त करती हुई अपने भक्तों तथा साधकों को सोलह कलाओं से पूर्ण करती हैं, और उन्हें पूर्ण शिवत्व प्रदान करती हैं।

देवी त्रिपुर सुन्दरी अपने चारों हाथों में क्रमशः माला, अंकुश, धनुष तथा बाण लिए हुए हैं। प्रथम दाएं हाथ में माला धारण कर ये साधकों को साधना-पथ पर अग्रसर होने का संकेत देती हैं, जो व्यक्ति साधना के क्षेत्र में पूर्णता, सफलता तथा श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें तो यह साधना अवश्य ही सिद्ध करनी चाहिए।

ये अपने दूसरे दाएं हाथ में अंकुश धारण कर इस बात को इंगित करती हैं, कि जो व्यक्ति अपने कर्म-दोषों से परेशान हैं, जिनका अपने कर्मों पर, अपने-आप पर नियंत्रण नहीं रहा, ये उन सभी कर्मों पर अपने भक्तों का पूर्ण नियंत्रण प्रदान कर, उन्हें उन्नति के पथ पर गतिशील करती हैं, तथा उन्हें जीवन में श्रेष्ठता, भव्यता और आत्म-विश्वास प्रदान करती हैं।

इसके अलावा अपने दोनों बाएं हाथों में धनुष-बाण रखना इस संकेत को स्पष्ट करता है, कि उनके भक्तों के उन्नति के मार्ग में आने वाली प्रत्येक बाधा, प्रत्येक शत्रु चाहे वह बीमारी हो, गरीबी हो या उसकी अशक्तता हो, ये सभी को दूर कर उसे स्वस्थ जीवन प्रदान करती हैं, उसके पंच-विकारों को दूर कर उसे 'पूर्ण पौरुषत्व' प्रदान करती हैं।

एक प्रकार से देखा जाय तो, महादेवी त्रिपुर सुन्दरी की साधना एक पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की साधना है, नर से नारायण बनने की साधना है, साधना के मार्ग में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने की साधना है। साधक इस साधना को सिद्ध कर, अपने जीवन को उन्नति तथा सफलता के पथ पर गतिशील कर जीवन को श्रेष्ठता व दिव्यता प्रदान कर सकता है। इस साधना को सिद्ध करने के पश्चात् दूसरी अन्य साधनाएं सिद्ध करना उसके लिए सहज और सामान्य बात हो जाती है।

साधना विधि

यह साधना एक दिवसीय साधना है, यदि साधक चाहें तो इस साधना को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर जीवन में विशेष सफलता व लाभ अर्जित कर सकते हैं। **इस साधना को करने का विशेष मुहूर्त २७ जुलाई गुरुवार, हरियाली अमावस्या है या फिर साधक सप्ताह के किसी भी शुक्रवार की रात्रि को यह साधना सम्पन्न कर सकता है।**

यह रात्रिकालीन साधना है, इसे **रात्रि ६ बजकर १२ मिनट से मध्य रात्रि ११ बजकर ३० मिनट** के बीच सम्पन्न करना चाहिए। इसमें जिस विशेष सामग्री की आवश्यकता है, वह है— **सर्वार्थ सिद्धि माला, पापघ्नि गुटिका** और इसके साथ ही लकड़ी के बाजोट पर बिछाने के लिए **गुलाबी आसन** तथा पहिनने के लिए **गुलाबी धोती।**

साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर पूर्व अथवा उत्तर दिशा में लकड़ी के बाजोट पर गुलाबी आसन बिछा कर, एक ताम्र प्लेट में त्रिकोण रूप में तीन बिन्दियां कुंकुम या केसर से बनाकर, उस त्रिकोण में **''पापघ्नि गुटिका''** स्थापित करें, तथा धूप, दीप, पुष्प आदि से उसका पूजन करें, इसके पश्चात् चार माला गुरु मंत्र का जप करें, और मानसिक रूप से उनसे साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद मांगें।

महादेवी त्रिपुर सुन्दरी का मूल मंत्र प्रारम्भ करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करें, आप जिस उद्देश्य को लेकर यह साधना सम्पन्न करने जा रहे हैं, उस उद्देश्य का उच्चारण करें, तत्पश्चात् ही **''सर्वार्थ सिद्धि माला''** से ५ माला मंत्र-जप सम्पन्न करें।

मंत्र

ह्रींकएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

साधना काल में साधक को अपना शरीर पूर्णरूप से हल्का होता प्रतीत होगा, तथा उसे ऐसा लगेगा कि उसके मस्तिष्क का कोई बहुत बड़ा दबाव उतर गया है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। जैसे-जैसे साधक के पाप-दोष समाप्त होते हैं, उसका समस्त शरीर तथा मस्तिष्क किसी अनजाने दबाव से मुक्त होता जाता है, इससे किसी भी प्रकार से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, यह स्थिति अपने-आप में पूर्णानन्द की स्थिति है।

साधना समाप्ति के पश्चात् साधक ११ दिनों तक साधना सामग्री को अपने पूजा स्थान में रखें, तथा ११ दिन के पश्चात् उक्त सभी सामग्री को किसी नदी अथवा तालाब या कुंए में विसर्जित कर, शांत चित्त भाव से घर आ जाएं।

जब शिष्य पर शक्तिपात हो जाता है, तो फिर वह पूज्य गुरुदेव को साधारण व्यक्ति की तरह नहीं देखता, क्योंकि उसे दो चर्म-चक्षुओं से आगे बढ़कर ज्ञान-चक्षु, आत्म-चक्षु एवं दिव्य-चक्षु जो मिल चुके होते हैं।

'स्वामी रामानन्द जी' ऐसे ही वरिष्ठ संन्यासी हैं, जिन पर पूज्य गुरुदेव कृपा पूर्वक शक्तिपात कर उनके सभी बंधन काट चुके हैं। उन्होंने श्रद्धा-सुमन के रूप में यह लेख प्रस्तुत किया है।

गुरु बापुरा कासी बसै, सिख समुन्दर तीर।
बिसरे नहीं बिसारया, जो गुण मांहि सरीर।।

पर आप तो जीवन्त मन्दिर हैं

मन्दिर, मस्जिद, चर्च या अन्य कोई साधना- स्थल अपने-आप में क्या मायने रखते हैं, यदि वे निर्जीव पत्थरों से निर्मित हों? उसकी अपेक्षा जो सजीव है, हलचल युक्त और प्राणवान है, ऐसा आपका शरीर ही मेरे लिए मन्दिर है। मैं आपके शरीर को ही पावन तीर्थ मानता हूं, मेरे लिए यही केदारनाथ है, यही बद्रीनाथ है, यही यमुनोत्री और गंगोत्री है, जिसके शीतल जल में अवगाहन कर मैं अपने-आप को पवित्र और दिव्य अनुभव करता हूं, इसकी सेवा ही मेरे मन्दिर की सेवा है।

आपके पूरे शरीर को मैं ऐसा अनुभव करता हूं, जैसे यह एक सजीव देवालय हो, जो प्राणवान है, चेतनायुक्त और स्पन्दनशील है, और मैं इसका पुजारी हूं। आपको किसी प्रकार की कोई ठेस न लगे, मेरी सेवा में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न रहे, ऐसा कोई कार्य मैं न करूं, जिससे आपको तनाव हो, क्योंकि यदि मन्दिर की

एक ईंट भी खिसकती है, तो धीरे-धीरे वह मन्दिर पूरा टूट जाता है, और मैं जीते जी ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकता, क्योंकि मेरे लिए तो यही स्वर्ग है, यही पुण्य तीर्थ है. . . और स्वर्ग में जाकर भी क्या मिल जाएगा? बैकुण्ठ धाम में भी ऐसा क्या है, जिसके लिए मैं लालायित रहूं? यदि मेरे साथ आप नहीं हैं, आपका जन्म-जन्म का साथ नहीं है, तो संसार की प्रत्येक वस्तु मेरे लिए त्याज्य है, इसीलिए तो मैं आपके शरीर को मन्दिर के रूप में देखता हूं। जब मैं आपके पास पहुंचता हूं, तो इस मन्दिर के गर्भगृह में बैठे हुए प्राणों को, इष्ट को देखकर धन्य-धन्य हो जाता हूं।
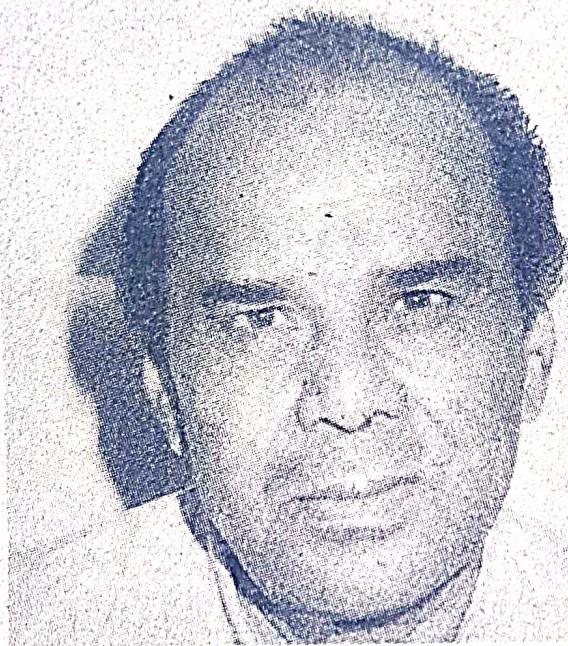
ईंट और पत्थर का मन्दिर तो जड़ होता है, किन्तु यह आपका शरीर मेरे लिए एक सजीव मन्दिर है। आपके पास आते ही मैं अपने-आप में खो जाता हूं, और तब मेरी सारी चिन्ताएं, सारा विषाद, सारा दुःख और सारा दैन्य क्षणभर में ही मिट जाते हैं, तथा मैं आनंन्द और मस्ती में डूब जाता हूं। कई बार आप पास से गुजर जाते हैं, तो एक अजीब सी आनन्द की लहर मुझे आत्मसात् कर लेती है, भले ही आपका यह शरीर पास में नहीं होता, किन्तु तब भी उसकी सुगन्ध, हृदय की वह श्वास वहां उपस्थित अवश्य रहती है, और तब उस समय मुझे यह एहसास होने लग जाता है, कि आप वहां सशरीर उपस्थित हैं और मुस्करा रहे हैं।

चाहे मैं कहीं पर भी होऊं, परन्तु उस समय भी मैं वहां आंखें बन्द करके अपने अन्दर आपको उतारने का प्रयास करता रहता हूं, और तब आप मेरे सामने एक जीवन्त व्यक्तित्व बन कर उपस्थित हो जाते हैं, तथा उस समय भी आप मेरे इस सुप्त और अलसाये हुए जीवन को मुस्कराहट से भर देते हैं, जिससे कि मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठता है, और सारा शरीर स्वतः ही थिरकने लग जाता है, मन आनन्द के झूले में झूलने लग जाता है और एक अजीब सी खुमारी से भर जाता है, किन्तु ज्योंही मैं बन्द आंखों को खोलता हूं, तो इस कठोर संसार के धरातल पर अपने-आप को उपस्थित पाता हूं, और उस समय आपको अपने पास न पाकर मैं एक अजीब सी बेचैनी, एक अजीब सी कसमसाहट एवं विचित्र से विषाद से भर जाता हूं, ऐसा लगता है, जैसे अभी-अभी सुगन्ध का एक झोंका आया और मेरे पास से हो करके गुजर गया, ऐसा लगता है, जैसे अभी-अभी आनन्द के कुछ क्षण उपस्थित हुए और लुप्त हो गए।

आपकी जुदाई भी बहुत पीड़ादायक होती है। आपकी एक क्षण की भी अनुपस्थिति से मन और प्राण दोनों बेचैन हो उठते हैं, गला रुंध जाता है, आंखों से आंसू छलछलाने लगते हैं, उस क्षण ऐसा लगने लगता है, जैसे मेरा सब कुछ लुट गया हो, सब कुछ समाप्त हो गया हो, और एक ही झटके में वह आनन्द, वह मस्ती उस प्यार की भीनी-भीनी फुहार में लुप्त हो जाती है। आपके इस शरीर में सभी मिठास, सभी अनुभूतियां प्रगाढ़ता के साथ विद्यमान हैं, और यही कारण है, कि आप से दूर रहकर भी आपको भुलाया नहीं जा सकता, क्योंकि आप भुलाने की वस्तु नहीं हैं।

यही कारण है, कि मैं हर-क्षण, हर-पल खोया-खोया सा रहता हूं, जब कोई पुस्तक पढ़ता हूं, तो उस पुस्तक की पंक्तियों और अक्षरों में आप आकर खड़े हो जाते हैं, तथा उस समय भी आप मुस्कराते हुए, कुछ बोलते हुए से नजर आते हैं। जब कभी मैं एकान्त

में अकेला होता हूं, तो आप साकार, सशरीर विद्यमान हो जाते हैं, और मैं उस समय एक अजीब सी मादक गुनगुनाहट से, थिरकन से, मस्ती से भर उठता हूं। **आपके इस शरीर का जन्म मात्र एक घटना नहीं है, अपितु यह तो एक जीवन्त, सजग उपस्थिति है, शिष्यों के सन्देश का माध्यम है, शिष्यों को पूर्णता देने की पगडण्डी है, और जो भी इस पगडण्डी पर आपके साथ चल सकेगा, वह निश्चय ही पूर्णता तक पहुंच सकेगा, ब्रह्मानन्द में निमग्न हो सकेगा।**

पृथ्वी-लोक में आपके इस शरीर की उपस्थिति शिष्यों एवं साधकों को गतिशील करने, जीवन्तता देने एवं सप्राणता युक्त करने के लिए है। आपका जन्म तो प्रेम की गागर को शिष्यों के गले में उड़ेलने के लिए हुआ है, किन्तु मेरे जीवन की सार्थकता तभी है, जब मैं इस जीवन्तता को समझ सकूं, चैतन्य हो सकूं, तथा आपसे प्रवाहमान आनन्द, मस्ती एवं प्यार के उन क्षणों को पकड़ सकूं।

आप आंसुओं की भाषा को शीघ्र समझते हैं, और आपको समझने की यही एक महत्वपूर्ण भाषा है। यही वह फुहार है, जो जीवन को स्थायी बना देती है, और यह आपके मिलने से ही सम्भव है, किन्तु समाज की कंटीली धरती पर मेरे पांव रपट जाते हैं, जिस कारण हर बार मेरा दामन पति-पत्नी या मां-बाप द्वारा खींच लिया जाता है, और मैं ठिठक कर उनमें ही अटक जाता हूं।

जैसा कि आप हमेशा कहते आये हैं— "मैं तुमसे अलग नहीं हूं, तुम अपनी सारी चिन्ताएं मुझ पर छोड़ दो, मैं अपने-आप ही ठीक समय पर तुम्हारा हाथ थाम लूंगा। मैं सही क्षण पर तुम्हारी उंगली पकड़ कर पगडण्डी पर आगे बढ़ जाऊंगा, किन्तु आवश्यकता इस बात की है, कि तुम समाज से बगावत कर सको, आवश्यकता इस बात की है, कि तुम मेरे शरीर की भाषा को पढ़ सको, मेरी आंखों के मूक निमन्त्रण को सुन सको, मेरे हृदय की चैतन्यता में उत्सवमय हो सको, रसमय हो सको, प्रीतिमय हो सको।"
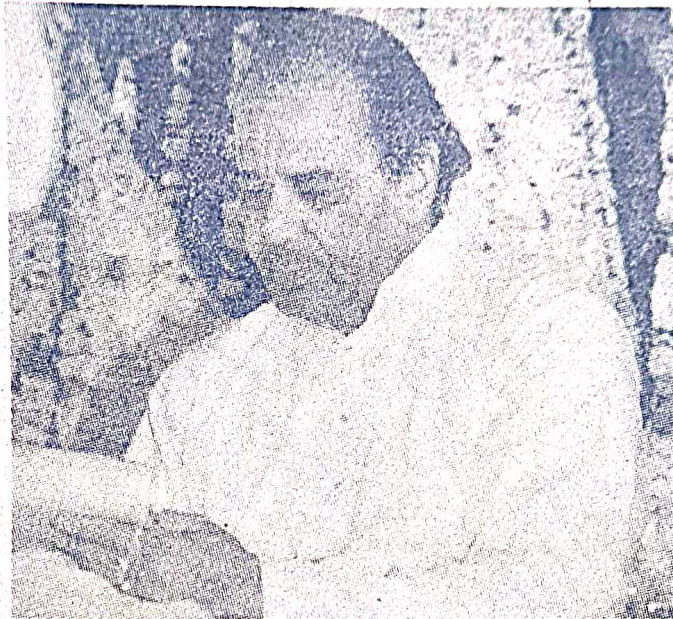
आपके इस शरीर को मैं जब भी देखता हूं, तो उसी क्षण नृत्यमय हो जाता हूं, और मैं ही नहीं, अपितु पूरा विश्व और समस्त ब्रह्माण्ड ही नृत्यमय हो जाता है क्या ऐसी अवस्था में फिर मेरे लिए किसी अन्य मन्दिर की आवश्यकता शेष रह जाती है? आखिर उन मन्दिरों में मुझे मिल भी क्या सकता है? वहां तो बाहर-भीतर की कोई भी वेदना अनसुनी हो जाती है।

पर आज आपको देखकर मैं समझ रहा हूं, कि मेरा जन्म क्यों हुआ? जैसे समुद्र सरिता को आवाज देता है, जिस प्रकार संगीत गुनगुनाहट को स्वर देता है, उसी प्रकार यह आपका शरीर रूपी मन्दिर भी आवाज दे रहा है मुझे अपनी बांहों में समेटने के लिए, और यही मेरे लिए जीवन्त एवं सप्राण मन्दिर है।

आपका यह शरीर मात्र देखने की वस्तु नहीं है, आपके चरण मात्र छूने के लिए नहीं हैं, यह तो सुगन्ध का एक झोंका है, और ऐसा दिव्य झोंका, जिसे अपने प्राणों में भरने की जरूरत है, जो नस-नाड़ियों में, रक्त की एक-एक बूंद में आत्मसात् करने योग्य है। यह प्रसन्नता तो जीवन का स्वाभाविक भाग है, ऐसा पावन और दिव्यतम मन्दिर और कहां मिलेगा. . .? गुरुदेव आप तो जीवन्त मन्दिर हैं।

सर्वथा पहली बार प्रकाशित

पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

एस-सीरिज के अन्तर्गत ये पुस्तकें. . .
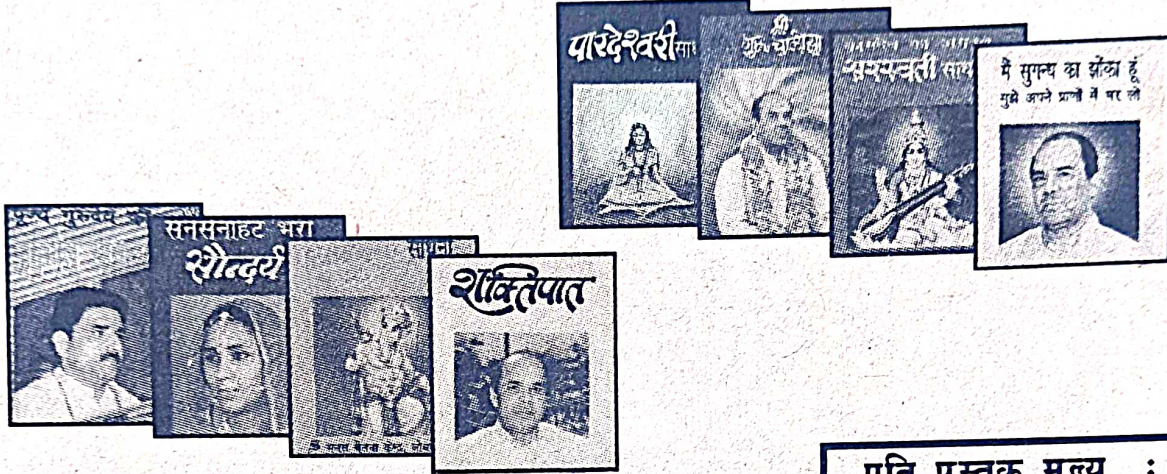
प्रति पुस्तक मूल्य : 5/-

पारदेश्वरी साधना

एक विलक्षण और चैतन्य पुस्तक . . . पारे से धातु परिवर्तन क्रिया की आराध्या "पारदेश्वरी" का पूर्ण साधना विधान . . . गोपनीय, दुर्लभ. . . पहली बार प्रकाशित।

श्री यंत्र साधना

मां भगवती लक्ष्मी का व्रत्य विग्रह "श्री यंत्र" और उससे सम्बन्धित साधना तो विश्व की दुर्लभतम साधना कही जाती है. . . और यही साधना पहली बार।

सनसनाहट भरा सौन्दर्य

सौन्दर्य . . . जीवन की पूर्णता, किस विधि से, किस प्रकार से सनसनाहट भरा सौन्दर्य प्राप्त कर सकते हैं. . . एक जीवन्त कृति।

मैं सुगन्ध का झोंका हूं

गुरु. . . हाड़-मांस का व्यक्ति नहीं, अपितु वासन्ती पवन का झोंका है, जो तन-मन को पुलक से भर दे, जीवन्त, जाग्रत, चैतन्य, सुगन्धित कर दे . . . एक दुर्लभ पुस्तक।

गणपति साधना

समस्त प्रकार के कार्यों, कष्टों, परेशानियों से मुक्त होने व धन-धान्य एवं समृद्धि प्राप्त करने हेतु श्रेष्ठ साधना पुस्तिका।

सरस्वती साधना

स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु एवं बालकों का सर्वांगीण विकास व वाक्सिद्धि के लिए श्रेष्ठतम साधनाएं, प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी।

शक्तिपात

शक्तिपात क्यों, कब और कैसे . . . कुण्डलिनी जागरण किस विधि से . . . जीवन में तनाव मुक्ति सम्भव है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

बगलामुखी साधना

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता तथा सभी प्रकार के विकारों पर विजय के लिए बगलामुखी साधना सर्वोत्तम है, और इसी से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

श्री गुरु चालीसा

नित्य स्तवन योग्य तथा हृदय में गुरु को धारण करने की विधि लिए सुन्दर, मधुर स्तोत्र।

अनमोल सूक्तियां

प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी और आवश्यक . . . श्रेष्ठ पुस्तिका. . . जीवन में पूर्ण सफलता के लिए।

: प्राप्ति स्थान :

सिद्धाश्रम,306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली.110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

> "सर्प का नाम आते ही पूरे शरीर में एक सिहरन सी दौड़ जाती है . . . साक्षात् काल का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है. . . लेकिन यह धारणा गलत है, इनकी भी अलग-अलग योनियां होती हैं, जिनकी साधना-आराधना से लाभ प्राप्त होता है, और जिनका दर्शन मात्र सौभाग्यदायी माना जाता है. . ."

शास्त्रों में मनुष्य की उन्नति के लिए चार प्रकार के पुरुषार्थ बताए गए हैं, जिसमें सबसे पहला **'धर्म'** तथा दूसरा **'अर्थ'** है, जबकि जीवन में धर्म को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है, फिर भी धर्म से ही पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त नहीं की जा सकती, इस सम्पन्नता को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम इस भाग-दौड़ की जिन्दगी में, प्रतिस्पर्धा के जीवन में व्यापार व अन्य कार्यों के माध्यम से अर्थ संचय कर सकें, क्योंकि समाज में जीने के लिए अर्थ और धर्म में सन्तुलन बनाए रखना आवश्यक है।

इस समाज में **''स्वान्तः सुखाय''** की महिमा प्राचीन काल से ही गाई जाती रही है, परन्तु सुख से आत्मा को सन्तोष भले ही पहुंचता हो, लेकिन उससे

पेट नहीं भरा जा सकता। श्रम करने के लिए व्यक्ति को कोई और प्रेरणा चाहिए, और आज के समाज में वह प्रेरणा पैसा जुटाना है। **आज मनुष्य को अपनी मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए धन की आवश्यकता पड़ती ही है, और यही कारण है कि धन को आज ईश्वर की तरह पूजा जाता है, और धन प्राप्त कर लेने को ईश्वरीय सुख माना जाता है।**

किन्तु व्यक्ति के लाख परिश्रम करने के बावजूद भी वह अर्थ संचय करने में अपने-आप को असमर्थ ही पाता है या कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो शीघ्र ही धनाढ्य बन जाना चाहते हैं, और इसके लिए यह आवश्यक है कि वे किसी ऐसी दैवी शक्ति का सहारा लें, जिससे कि वे शीघ्र ही उसके बल पर अपनी गरीबी व दरिद्रता को दूर कर जीवन में धनवान बन सकें।

हर व्यक्ति यही स्वप्न देखता है कि वह बिना परिश्रम किये एक दिन में ही करोड़पति बन जाए, परन्तु यह सम्भव नहीं है, अधिक नहीं, किन्तु कुछ परिश्रम तो उसे अवश्य ही करना पड़ेगा, उस अर्थ साधना को सम्पन्न करने के लिए, जिसके माध्यम से उसके स्वप्न को सम्भव व साकार रूप दिया जा सकता है, और वह सम्भव है **''नागेश साधना''** के माध्यम से।

देव, किन्नर आदि की तरह नाग अर्थात् सर्पों का भी एक अलग लोक है, जिसे हम **'पाताल लोक'** कहते हैं। साधारण दृष्टि से सर्प एक जन्तु मात्र है, किन्तु ऐसा सोचना ठीक नहीं है, इनकी भी अनन्त जातियां हैं तथा ये अपने-आप में विभिन्न विशेषताएं लिए हुए होते हैं। पुराणों में इनकी विशेष कथाएं चर्चित हैं, जो मनुष्य की तरह या देवों की तरह वैचित्र्य पूर्ण इतिहास प्रसिद्ध हैं।

हमें सर्पों से जुड़ी अनेक घटनाएं प्रतिदिन देखने और सुनने को मिलती हैं। सर्पों को हम दन्तक कथाओं के माध्यम से विषैले और व्यर्थ ही काट कर मनुष्यों या अन्य पशुओं को मार डालने वाले जीव मात्र ही समझ बैठे हैं, पर ऐसी बात नहीं है, अपितु ये तो साधना के माध्यम से अनन्त ऐश्वर्य तथा निधि प्रदान करने वाले होते हैं, क्योंकि ये पृथ्वी के नीचे दबे-गड़े हुए स्वर्णादि निधियों के स्वामी होते हैं, और उनकी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

भारतीय शास्त्रों के अनुसार ये देवकोटि में ही गिने जाते हैं, जो अनेक अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न होते हैं, इनकी साधना सौभाग्य तथा वैभवप्रद मानी जाती है, जिसके माध्यम से शीघ्र धन-लाभ की अवस्था बनती है।

साधना के द्वारा इनके प्रसन्न होने पर पृथ्वी में छिपी हुई सम्पत्ति को आसानी से हस्तगत किया जा सकता है या आकस्मिक धन-प्राप्ति के अनेक साधन उपलब्ध किए जा सकते हैं। **अनेक ऐसे दिव्य शरीरधारी सर्प होते हैं, जिनकी आयु भी लम्बी होती है, तथा जिनके दर्शन मात्र सौभाग्यदायी होते हैं, इसीलिए इनकी पूजा भी अनेक स्थानों पर होती है। जहां मन्दिर आदि स्थल बने होते हैं, वहां देवता की तरह ये भी यथासमय दर्शन देते रहते हैं।**

अनेक सर्प ऐसे भी होते हैं, जिनके मस्तक पर मणि लगी होती है, और रात्रि में निकलते समय ये कभी-कभी ही दृष्टिगत होते हैं। कई तो इतने खुंखार होते हैं, जो मात्र अपने श्वास से ही जान ले लेते हैं, फिर भी ये अपने-आप किसी को नहीं काटते, जब तक कि इन्हें किसी प्रकार से पहले प्रताड़ित या पीड़ित न किया जाए।

हमारे भारतीय शास्त्रों के अनुसार ये देवकोटि में ही गिने जाते हैं, जो अनेक अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न होते हैं, इनकी साधना सौभाग्य तथा वैभवप्रद मानी जाती है। जिसके माध्यम से शीघ्र धन-लाभ की अवस्था बनती है। विष्णु पुराण के अनुसार— **''समस्त पृथ्वी को शेषनाग ने ही अपने सिर पर धारण किया हुआ है। समुद्र में विष्णु भगवान शेषशायी माने जाते हैं और भगवान शंकर भी सदैव अपने गले में सर्प माल्य धारण किए हुए रहते हैं।''** इसीलिए 'नागेश साधना' का मनुष्य के जीवन में एक विशेष महत्व है।

नागेश साधना का वास्तविक ज्ञान हमें **''स्वामी भूतेश्वरानन्द जी''** से हुआ, जो देखने में पतली-दुबली काया वाले एक साधारण से व्यक्ति ही प्रतीत होते थे, और एक झोला तथा गले में कई प्रकार की मालाएं धारण किए हुए रहते थे। उन्होंने ही यह

बताया, कि अगर मनुष्य चाहे तो 'नागेश साधना' सम्पन्न कर शीघ्र से शीघ्र धन प्राप्त कर सकता है, क्योंकि इस साधना से आकस्मिक धन प्राप्त कर वह कुछ ही दिनों में सम्पन्न और धनाढ्य लोगों की श्रेणी में गिना जा सकता है।

किन्तु आज लोग नाग के नाम से ही भयभीत और आशंकित हो उठते हैं, नाग साधना करने से पूर्व उन्हें हर क्षण यह डर बना रहता है कि कहीं सांप आकर कुछ अनर्थ न कर दे, इसी भ्रामक धारणा से भयभीत होकर वे नाग साधना करने से हिचकिचाते हुए प्रतीत होते हैं, परन्तु यह बात सर्वथा गलत है, नाग साधना सम्पन्न करने से व्यक्ति को सदैव लाभ ही होता है, हानि नहीं।

इस प्रकार नाग चर्चा के दौरान ही उन्होंने हमें 'नागेश साधना' के बारे में सविस्तार पूर्वक बताया, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति गड़े हुए धन, लॉटरी, जुए आदि से अचानक प्राप्त हुए धन का स्वामी बन सकता है, किन्तु उन्होंने यह भी बताया, कि इस साधना को एक विशेष मुहूर्त में सम्पन्न किया जाना आवश्यक है, क्योंकि विशेष क्षणों में ही साधक को उसका लाभ प्राप्त हो सकता है, और वह विशेष मुहूर्त है **''नाग पंचमी''**, जिस दिन साधना करने से नाग प्रसन्न होते ही हैं, और प्रसन्न होने के उपरान्त व्यक्ति के जीवन से गरीबी व दरिद्रता जैसा शब्द हमेशा-हमेशा के लिए मिटा देते हैं। वैसे तो इस दिन नागों को दूध पिलाने की भी प्रथा जन-सामान्य में प्रचलित है, क्योंकि नाग एक रक्षक के रूप में भी उस मनुष्य की सहायता करते हैं।

किन्तु नागेश साधना सम्पन्न करने वाले साधक को चाहिए कि वह साधना के पश्चात् चांदी का एक सर्प, जो कि स्वयं किसी सुनार के द्वारा पहले से ही बनवा कर रख लेना चाहिए, किसी शिव मन्दिर में चढ़ा आए। भूतेश्वरानन्द जी ने बताया, कि ऐसा करने पर ही साधक को पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है, और ऐसा विष्णु पुराण आदि शास्त्रों में भी वर्णित है, उनकी बताई गई इस साधना को प्रामाणिक रूप देने के लिए कई साधकों को इस साधना को सम्पन्न कराया गया, और उन्हें इसके विशेष लाभ भी प्राप्त हुए, जिसके आधार पर ही हम यह कह सकते हैं कि यह एक प्रामाणिक तथ्य है, और इस साधना से निश्चित ही धनागम के स्रोत तो खुल ही जाते हैं, साथ ही उसे आकस्मिक रूप से भी धन की प्राप्ति होने लग जाती है।

यह एक गुह्य साधना है, जिसका ज्ञान बहुत कम लोगों को है, किन्तु इस साधना के बाद साधक को जीवन भर कभी धन की कमी महसूस नहीं होती। व्यक्ति को यह साधना नाग पंचमी के दिन ही सम्पन्न करनी चाहिए, परन्तु बिना किसी भय के, और इसके लिए यह आवश्यक है कि साधक के मन में उस साधना के प्रति पूर्ण श्रद्धा व विश्वास हो, जिसके आधार पर ही इस साधना में सफलता प्राप्त हो सकती है।

सामग्रीः शंख-निधि, चांदी का सांप, गुह्य माला।

समयः १ अगस्त ६५ (नाग पंचमी) या अन्य किसी सोमवार के दिन प्रातः पांच बजे से आठ बजे तक।

साधना विधि

साधक 'नाग पंचमी' के दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, स्नानादि क्रिया से निवृत्त होकर, दक्षिण दिशा की ओर मुख करके लाल आसन पर बैठ जाएं। अपने सामने छोटी चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें, तथा बीच में कुंकुम या चन्दन से नागेश का अर्थात् सर्प का चित्र बनाएं तथा सर्प के ऊपर चावलों की एक ढेरी बनाकर उस पर **'शंख-निधि'** को स्थापित करें। उसका मुंह साधक अपनी ओर रखें, तथा उसके आगे स्टील की या अन्य किसी प्लेट में **'चांदी के सर्प'** (यदि यह उपलब्ध न हो सके, तो चांदी का तार लेकर उसे सर्प की भावना देकर पूजन सम्पन्न करें) को गंगाजल से या दूध से स्नान कराकर स्थापित कर दें, फिर 'शंख' तथा 'सर्प' का कुंकुम, अक्षत व पुष्पादि से पूजन करें, और तेल के पांच दीपक जला दें, (तेल, तिल या सरसों किसी का भी ले सकते हैं) ये दीपक मंत्र-जप करते समय निरन्तर जलते रहने चाहिए, अतः ध्यान रखें कि साधना काल में दीपक न बुझने पाएं।

साधक बाद में 'शंख-निधि' को चावलों से भर दें, और फिर उसी आसन पर खड़े होकर **''नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु''** इस मंत्र का दस मिनट तक जप करें, फिर आसन पर बैठ कर गुह्य माला, जो कि विशिष्ट मंत्रों से चैतन्य होती है, उससे निम्न मंत्र का पांच माला जप करें।

मंत्र-जप के समय मन बिलकुल शान्त होना चाहिए। आंख बन्द करके अपने इष्ट का या पूज्य गुरुदेव का ध्यान करें, और इस साधना में सिद्धि हेतु उनसे मानसिक प्रार्थना करते रहें।

मंत्र

ॐ नृं नागेश्वराय धनप्रदाय नृं फट्

मंत्र-जप के बाद गुरु आरती सम्पन्न करें तथा जो भी प्रार्थना करना चाहें, वह करें। इस साधना के उपरान्त साधक कुछ दिनों में ही इसके प्रतिफल या लाभ से स्वयं आश्चर्यचकित रह जाता है और आकस्मिक धन-लाभ की सम्भावना तो बनती ही है। साधना सम्पन्न करने के पश्चात् उसी दिन या उससे अगले दिन इस साधना में प्रयुक्त पूजन सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

गुरु कृपा ही केवलं

गत जुलाई माह में मैंने पूज्य गुरुदेव से दिल्ली में **"गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा"** प्राप्त की। दीक्षा लेने से पहले ही मैंने यह तय कर लिया था, कि मैं गुरु मंत्र का, सवा लाख जप का अनुष्ठान करूंगा। मेरे लिए यह एक अचरज की बात थी, कि दीक्षा के समय पूज्य गुरुदेव ने भी मुझे १५ या २१ दिनों तक सवा लाख गुरु मंत्र के अनुष्ठान का आदेश दिया।

इस आदेशानुसार मैंने पूर्णिमा के बाद के गुरुवार से गुरु मंत्र का अनुष्ठान प्रारम्भ किया। सवा लाख मंत्र का जप पूर्ण होते ही दशांश मंत्रों से जप और तिल की आहुतियां दीं।

इस अनुष्ठान को करते समय मुझे एक दूसरा मंत्र भी आंखों के सामने दिखाई दे रहा था। शुरू में मैंने उस तरफ ध्यान नहीं दिया, आगे-आगे मंत्र शब्द के रूप में उभरने लगा। मैंने बीच में ही जप करना बन्द कर दिया, तो साफ-साफ उस मंत्र ने शब्द का रूप धारण कर लिया, और फिर तुरंत ही मैंने उस मंत्र को कागज के ऊपर लिख लिया, यह मंत्र है—

ॐ शिवोऽहम् सद्गुरु निखिलेश्वरानन्दाय नमः।

पूज्य गुरुदेव की कृपा से प्राप्त इस मंत्र का मैंने सवा लाख मंत्र-जप का अनुष्ठान सम्पन्न किया, और मुझे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। पूज्य गुरुदेव की कृपा इस प्रकार भी प्राप्त होती है।

गुरु गणेश, बम्बई

जब पथरी रोग से मुक्ति मिली

गंगा में अपनी मामी की अस्थियां विसर्जन के बाद मैं घर लौटने के लिए इलाहाबाद स्टेशन पर रेलगाड़ी का इंतजार कर रहा था। रास्ते में समय काटने के लिए पुस्तक खरीदने का मन होने पर एक बुक स्टॉल पर गया, तो मेरी नजर पूज्य गुरुदेव **"श्रीमाली जी"** की लिखी हुई **"मंत्र रहस्य"** पुस्तक पर पड़ी, उसी समय मैंने उसे खरीद लिया, और रास्ते में उसे पढ़ता रहा। ग्वालियर स्टेशन पर पुनः बुक स्टॉल पर मेरी नजर **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** नामक पत्रिका पर गई, तो मैंने उसे भी खरीद लिया।

घर पहुंच कर दोनों पुस्तकें पढ़ने पर मेरे मन में यह दृढ़ निश्चय हो गया, कि मेरी तमाम परेशानियों का व जो भी बीमारी या तांत्रिक प्रभाव मेरे ऊपर कराया गया है, उन सबका हल पूज्य गुरुदेव से मिलने पर ही सम्भव हो सकता है। मैंने उसी दिन से उन्हें अपना गुरु मान लिया और **"निखिलेश्वरानन्द स्तवन"** का पाठ प्रारम्भ कर दिया, तथा दिल्ली व जोधपुर कार्यालयों से पत्र-व्यवहार चालू रखने पर वहां से मुझे वार्षिक सदस्य बनने व दीक्षा ग्रहण करने का निर्देश मिला, तो दोनों ही काम मैंने किए। २६ अक्टूबर १९९३ को मुझे गुरुदेव ने सुबह **"कुण्डलिनी जागरण शक्तिपात युक्त दीक्षा"** प्रदान की और दीक्षा ग्रहण करने के बाद मैं वापिस घर लौट आया।

२५ वर्षों से मुझे जिगर में पथरी की बीमारी थी, और महीने में एक-दो बार उल्टी तथा पेट दर्द होता ही रहता था। मैंने तमाम इलाज कराये और दो बार ऑपरेशन भी हो गया, किन्तु यह मेरा सौभाग्य है कि तीसरा ऑपरेशन, जो ७ जनवरी १९९४ को होना था, उसके पूर्व ही यह सब दीक्षा आदि कार्यक्रम हो गया, और मुझे उसी समय लाभ होना प्रारम्भ हो गया।

आज ८ महीने बीत जाने पर भी मेरे अन्दर रोग का कोई नामो-निशान बाकी नहीं है, तथा शरीर भी चैतन्य रहता है, जैसे भगवान् राम के मात्र चरण-स्पर्श से अहिल्या का उद्धार हो गया था, उसी तरह पूज्य गुरुदेव के पैर के अंगूठे के स्पर्श मात्र से मेरा रोग जाने कहां चला गया।

डॉ० मधुसूदन शर्मा,
लश्कर, ग्वालियर

जाको राखे साइयां

"गुरु पूर्णिमा पर्व" पर आयोजित शिविर में हम गुरु भाई न जा पाने के कारण मन ही मन दुःखी थे, कि गुरु सामीप्य से वंचित रह गये, पर जो घटना साधना के दौरान घटी, उससे हमें विश्वास हो गया, कि गुरुदेव की दृष्टि सदैव अपने प्रत्येक शिष्य पर रहती है।

हम लोग **कुक्षी** से १७ कि०मी० दूर स्थित तीर्थ स्थान **"कोटेश्वर"** पर संध्याकाल में साधना के लिए पहुंचे। चूंकि बारिश का मौसम था, इसलिए नर्मदा नदी का जल स्तर भी बढ़ा हुआ था, परन्तु गुरुदेव के सामीप्य की लगन एवं उत्साह से भरे हुए हम गुरु भाई पूजन-विधान के पश्चात् साधना हेतु बैठे। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व ही हम जुलाई ९३ के अंक में पृष्ठ ३३-३४ पर प्रकाशित **"निखिलेश्वरानन्द कवचम्"** अर्थात् **"रक्षात्मक देह कवचम्"** का पाठ कर बैठ थे।
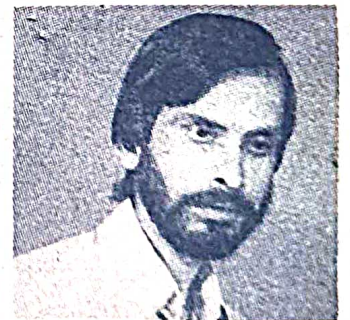
चूंकि बारिश का मौसम था, अतः थोड़ी देर पश्चात् बारिश प्रारम्भ हो गई, पर हम तब भी साधनारत रहे, जब बारिश

बहुत तेज हो गई, तो घाट पर ही स्थित शिव मंदिर में बारिश से बचने हेतु खड़े हो गए, बिजली भी चमक रही थी, अतः हम सिमटे हुए खड़े रहे। मंदिर के अन्दर कुछ नाविक एवं भिक्षुक पहले से ही बैठे थे, अंधेरा बहुत अधिक हो गया था, अचानक स्व प्रेरणा या गुरु-प्रेरणा से मैं अपने स्थान से हटकर मंदिर के द्वार पर जाकर बैठ गया।

मेरे हटने के कुछ क्षण ही बीते होंगे, कि घाट पर उसी स्थान पर बिजली गिरी, यानि ३-४ फिट दूर ही, और अगर मैं वहां से नहीं हटता, तो बिजली मेरे ऊपर ही गिरती, जबकि ४०-५० फुट दूर घाट पर नाव बांधे नाविक के हाथ सुन्न हो गए और वह बुरी तरह से घबरा गया, पर हम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं **''रक्षात्मक देह कवचम्''** के पाठ से सकुशल बच गए, अन्यथा ४-५ फिट दूर गिरी बिजली हम लोगों को भस्म कर देती। इस घटना से हम सब श्रद्धानवत हो गए गुरु-कृपा प्राप्ति के लिए।

यतेन्द्र सक्सेना
धार, म० प्र०

गुरु मंत्र मोरा आधार

मैं उत्तर प्रदेश जिला एटा का स्थाई रूप से रहने वाला हूं, पर इस समय मैं दिल्ली में ही अपने परिवार के साथ रह रहा हूं। मेरी उम्र ३७ वर्ष की है। मैंने पूज्य गुरुदेव से ३ मार्च १९९४ को दीक्षा ली थी।

दीक्षा लेने के बाद मैंने गुरुदेव की महिमा और असीम शक्तियों के विषय में जाना, तो मेरा हृदय उमंग से खिल उठा। मुझे ऐसा लगा, जैसे खोया हुआ खजाना वापिस मिल गया हो। मेरे मन में गुरुदेव के प्रति लगन, मनन-चिंतन तथा विश्वास गहराई के साथ बढ़ता गया।

एक बार अचानक मेरी पत्नी की तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गई, वह किसी प्रकार से भी ठीक नहीं हो रही थी, तब मैंने उसे जल लेकर, **गुरु मंत्र** से मंत्रोच्चारण करके पिला दिया, तो मेरी पत्नी उसी दिन ठीक हो गई।

इसी प्रकार एक रात को दो-ढाई बजे के बीच मेरा पुत्र हिचकियां भरने लगा, उसकी तबीयत खराब हो गई, वह विचित्र-विचित्र प्रकार की हरकतें करने लगा। वह इस प्रकार से इशारे कर रहा था, जैसे उसे कोई अदृश्य आत्मा दिखाई दे रही हो। वह भय से पीला पड़ता जा रहा था, तभी मैंने उसके सिर पर हाथ रख कर ''गुरु मंत्र'' का उच्चारण करना शुरू कर दिया, तो कुछ ही देर में मेरा पुत्र बिलकुल ठीक हो गया।

जब से मैंने गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त की है, तब से मैं निरोग काया के साथ जीवन जी रहा हूं। वैसे तो मुझे बहुत से अनुभव हुए हैं, लेकिन मैं यहां सभी अनुभव नहीं लिख सकता। मैं पत्रिका का वार्षिक सदस्य हूं, तथा हर महीने की पत्रिका का अध्ययन बड़ी गहराई से करता हूं। पत्रिका में जो लघु तथा बड़ी साधनाएं प्रकाशित होती हैं, वे पूर्ण सिद्धि प्रदायक एवं शीघ्र फल देने वाली साबित हुई हैं।

इन सब बातों से यह सिद्ध होता है, कि कोई सिद्धाश्रम की सर्वश्रेष्ठ दिव्य आत्मा पूज्य गुरुदेव के रूप में हम सब के बीच सप्राण, जीवन्त तथा चैतन्य विभूति स्तम्भ की तरह उपस्थित है। अन्त में मैं भगवान् सद्गुरुदेव **''परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी''** के चरण-कमलों में शत्-शत् बार प्रणाम करता हूं, तथा अपने मन को गुरुदेव के श्री चरणों में लगाने की आकांक्षा रखता हूं।

करनसिंह कुशवाहा,
शकूर पुर, दिल्ली

सर्वसिद्धि प्रदायक ''निखिलेश्वरानन्द स्तवन''

पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेने के बाद उनके मार्गदर्शन में निरन्तर साधनाओं में लीन रहा, और पत्रिका में प्रकाशित साधनाएं उसमें दी हुई विधि के अनुसार कीं, लेकिन काफी प्रयत्न के बाद भी मुझे उतनी सफलता प्राप्त नहीं हो रही थी, जिस प्रकार प्राप्त होनी चाहिए। हालांकि अनुभूतियां तो हो रही थीं और मेरी आर्थिक स्थिति भी दिनों-दिन अच्छी होती जा रही थी, पर मैं साधनाओं में और ज्यादा सफलता प्राप्त करना चाहता था।

मैंने थक कर पूज्य गुरुदेव से इस सम्बन्ध में प्रार्थना की, कि काफी प्रयत्नों के बाद भी मैं साधनाओं में उस तेजी से नहीं बढ़ पा रहा हूं, जिस तेजी से मुझे बढ़ना चाहिए, तब पूज्य गुरुदेव ने मुस्कराते हुए कहा, कि इसके लिए तुम नित्य **''निखिलेश्वरानन्द स्तवन''** का पाठ करो।

यह मेरे लिए आश्चर्य का विषय था, पर मैं इसे गुरु आज्ञा मान कर नित्य इसका पाठ करने लगा, और खाली समय में भी इसका पाठ करता रहा, कुछ ही दिन बीते थे, कि जिस कार्य की सिद्धि के लिए मैं काफी प्रयत्न कर रहा था, वह अपने-आप पूरा हो गया। मैंने इसे एक संयोग माना और फिर एक कार्य की पूर्णता के लिए मन ही मन प्रार्थना कर स्तवन का पाठ प्रारम्भ कर दिया, देखते ही देखते उस कार्य के अच्छे परिणाम प्राप्त होने लगे और जिन साधनाओं में मैं आगे नहीं बढ़ पा रहा था उनमें सफलता प्राप्त होने लगी। अतः मैं यही कहूंगा, कि **''निखिलेश्वरानन्द स्तवन''** सर्वसिद्धि प्रदायक साधना है, मात्र इसके पाठ करने से ही सभी प्रकार की सफलता प्राप्त होने लगती है।

विजय सिंह शास्त्री
नारनौल

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी की दुर्लभ कृतियां

एस-सीरीज के अन्तर्गत प्रस्तुत हैं ये अमूल्य ग्रन्थ

मूल्य प्रति– 96/-

मूल्य प्रति– 240/-

हिन्दी कृति

कुण्डलिनी नाद ब्रह्म :
कुण्डलिनी जागरण की क्रिया क्या होती है? क्या होते हैं विविध चक्र? कैसे सम्पादित होती है यह अति श्रेष्ठ क्रिया? इसका सूक्ष्म विवेचन है इस ग्रन्थ में . . .

ध्यान, धारणा और समाधि :
इन तीनों विषयों पर विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं, इन सभी के चक्कर में फंस कर मनुष्य इसके मूल चिन्तन के प्रति भ्रमित हो गया है, इसी भ्रम का निवारण है, यह ग्रन्थ . . .

फिर दूर कहीं पायल खनकी :
प्रिया के आगमन का संदेश, दूर से आती उसकी पायलों की खनक से प्राप्त हो जाता है . . . किन्तु हम अपने प्रिय (ईश्वर, गुरु, इष्ट) के आगमन की आहट सुनने की सामर्थ्य खो बैठे हैं. . . इस श्रवण शक्ति को पुष्ट करने का माध्यम है, यह कृति . . .

अंग्रेजी कृति

Meditation :
नाम के आकर्षण में फंस कर पूर्ण जानकारी न होने के कारण अधिकतर लोग ध्यान की खोज में भटकते रहते हैं। इस भटकने की क्रिया का समापन कर ध्यान का प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत है, इस कृति द्वारा . . .

Kundalini Tantra :
प्रस्तुत है इस ग्रन्थ के माध्यम से कुण्डलिनी की विस्तृत विवेचना, सप्त चक्रों का विश्लेषण, जिससे मनुष्य को पूर्णता प्राप्त हो सके।

The Sixth Sense :
छठी इन्द्रिय के जाग्रत होने का तात्पर्य है, सम्पूर्ण प्रकृति के कार्य में इच्छानुसार हस्तक्षेप करने की शक्ति प्राप्त कर लेना . . . लेकिन कैसे? यह आप इस ग्रन्थ को पढ़कर प्रामाणिक रूप से जान सकते हैं।

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010
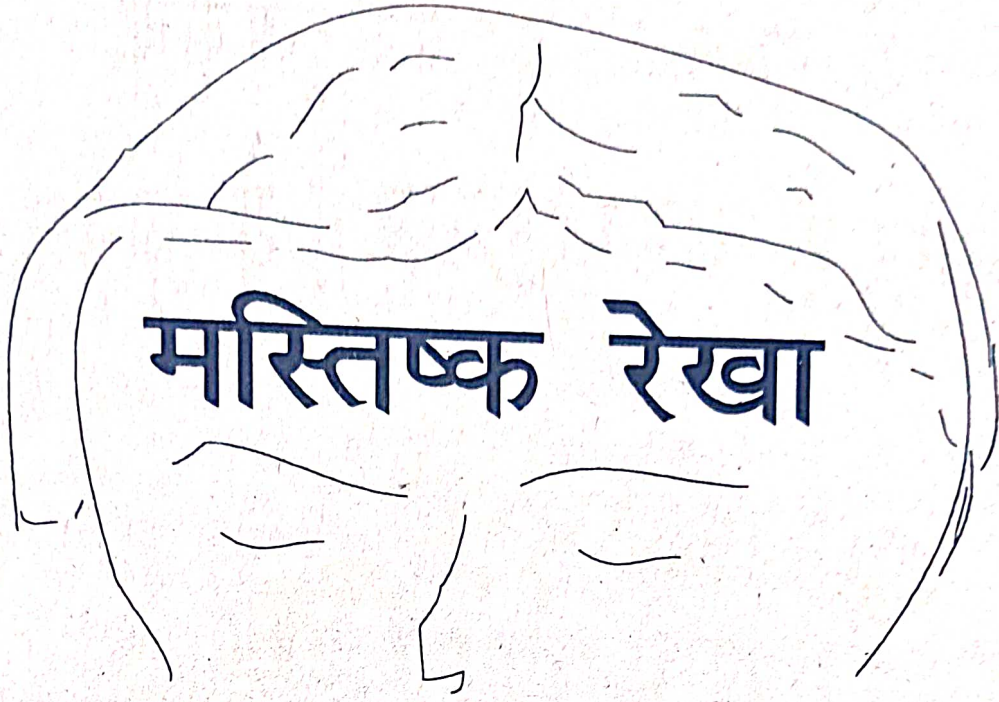
मस्तिष्क रेखा

जीवन और मस्तिष्क का आपस में गहरा सम्बन्ध है, क्योंकि बिना बुद्धि के या मस्तिष्क के जीवन व्यर्थ-सा हो जाता है। जीवन में यश, मान, प्रतिष्ठा आदि बुद्धि के द्वारा ही प्राप्त होता है, अतः जीवन रेखा का जितना महत्त्व हथेली में है, लगभग उतना ही महत्त्व मस्तिष्क रेखा का भी है।

विद्वानों के अनुसार हथेली में मस्तिष्क रेखा का पुष्ट, सुदृढ़ एवं स्पष्ट होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यदि मस्तिष्क रेखा जरा-सी भी विकृत होती है, तो उसका पूरा जीवन लगभग बरबाद-सा हो जाता है।

आइये देखें मस्तिष्क रेखा से सम्बन्धित अन्य तथ्य–

१. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई पतली रेखा गुरु पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

२. यदि यह रेखा सीधी, स्पष्ट और निर्दोष हो, तो वह व्यक्ति तुरन्त निर्णय लेने वाला, क्रियाशील मस्तिष्क का धनी तथा बुद्धिमान व्यक्ति होता है।

३. यदि मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा का उद्गम अलग-अलग हो, तो ऐसा व्यक्ति स्वच्छन्द प्रकृति का होता है। वह अपने तरीके से काम करता है और किसी दबाव में कार्य नहीं करता।

४. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई शाखा निकल कर गुरु पर्वत के अन्त तक पहुंच जाती है, तो वह व्यक्ति देश का श्रेष्ठ साहित्यकार अथवा कलाकार होता है। वह अपना जीवन शालीनता से व्यतीत करने में समर्थ होता है।

५. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली के बीच में जाकर नीचे की ओर झुक जाती है, तो ऐसा व्यक्ति धन के प्रति बहुत अधिक मोह रखने वाला होता है, उसकी इच्छाएं ऐश्वर्य में जीवन व्यतीत करने की होती हैं, परन्तु परिस्थितियों के कारणवश वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता।

६. यदि मस्तिष्क रेखा हृदय रेखा से लिपटती हुई-सी आगे बढ़ती है, तो ऐसा व्यक्ति क्रोध में अपनी पत्नी या प्रेमिका की हत्या कर देता है।

७. मस्तिष्क रेखा का झुकाव जिस पर्वत की ओर विशेष होता है, उस पर्वत के गुणों में वृद्धि हो जाती है। उदाहरणार्थ यदि इसका झुकाव गुरु पर्वत की ओर होता है, तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ साहित्यकार या तत्त्वज्ञानी होता है।

८. यदि मस्तिष्क रेखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो ऐसा व्यक्ति दार्शनिक अथवा चिन्तक होता है।

९. यदि मस्तिष्क रेखा सूर्य पर्वत की ओर झुकती हुई दिखाई दे, तो वह व्यक्ति अत्यन्त उच्च पद प्राप्त करता है।

१०. यदि मस्तिष्क रेखा लहराती हुई आगे बढ़ती हो, तो ऐसे व्यक्ति का चित्त अस्थिर होता है तथा उसकी कथनी और करनी में समानता एवं एकरूपता नहीं रह पाती।

११. यदि मस्तिष्क रेखा आगे चलकर चन्द्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई दे, तो निश्चय ही वह व्यक्ति कवि होता है और जीवन में कई बार जल-यात्रा करता है।

१२. यदि मस्तिष्क रेखा चन्द्र पर्वत की ओर से उसके ऊपर से होती हुई मणिबन्ध तक पहुंच जाती है, तो ऐसा व्यक्ति जीवन-भर दुःखी, दरिद्री और निकम्मा रहता है।

१३. यदि मस्तिष्क रेखा मणिबन्ध तक पहुंच कर रुक जाती है और इसके आगे क्रॉस का चिन्ह होता है, तो वह व्यक्ति निश्चय ही आत्महत्या करता है।

१४. मस्तिष्क रेखा जिस स्थान पर भी हृदय रेखा को काटती है, जीवन की उस उम्र में व्यक्ति को बहुत बड़ी स्वास्थ्य हानि होती है।

१५. यदि दोहरी मस्तिष्क रेखा सीधी और सपाट हो, तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति कूटनीति में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

१६. यदि मस्तिष्क रेखा जंजीर के समान हो, तो उसे जीवन में मस्तिष्क सम्बन्धी रोग रहते हैं।

१७. शनि पर्वत के नीचे यदि मस्तिष्क रेखा पर द्वीप का चिन्ह दिखाई दे, तो २४वें वर्ष में उसे पागलखाने जाना पड़ता है।

१८. यदि बुध पर्वत के नीचे इस रेखा पर द्वीप बन जाए, तो विस्फोट के कारण उस व्यक्ति की मृत्यु होती है।

१९. यदि मस्तिष्क रेखा घूमकर शुक्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई दे, तो वह व्यक्ति उन्नति करता है तथा स्त्रियों में अत्यधिक लोकप्रिय होता है।

२०. यदि मस्तिष्क रेखा पर सफेद बिन्दु दिखाई दे, तो वह व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

२१. यदि इस रेखा पर वृत्त का चिन्ह हो, तो व्यक्ति अदूरदर्शी तथा मूर्ख होता है।

२२. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली के आर-पार जाती हुई दिखाई दे, तो उस व्यक्ति की स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है, और वह जीवन में मेधावी कहा जाता है।

२३. यदि बुध पर्वत विकसित हो, परन्तु मस्तिष्क रेखा कमजोर हो, तो उसे जीवन में बहुत बड़ा विश्वासघात सहन करना पड़ता है।

२४. यदि मस्तिष्क रेखा टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो वह व्यक्ति संकुचित विचारधारा का होता है।

२५. यदि जीवन रेखा मस्तिष्क रेखा के ऊपर से उद्गम करती हुई आगे बढ़ती हो और साथ में कई छोटी-मोटी रेखाएं हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक शक्तिशाली होता है।

२६. यदि वह रेखा चन्द्र पर्वत पर जाकर समाप्त होती हो, तो वह व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।

२७. यदि यह जीवन रेखा से मिलकर हृदय रेखा की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति अंधा होता है।

२८. यदि स्वास्थ्य रेखा और मस्तिष्क रेखा दोनों ही लहरदार हों, तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त कमजोर होता है।

२९. यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत से निकलकर मस्तिष्क रेखा को काटती हो, तो उसका गृहस्थ-जीवन बरबाद हो जाता है।

३०. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई शाखा निकलकर शुक्र पर्वत की ओर जाती हो, तो उसका प्रेम जीवन भर गुप्त बना रहता है।

३१. यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर शनि पर्वत की ओर जाती हो, तो वह जीवन में उच्चकोटि का धार्मिक व्यक्ति होता है।

३२. यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा सूर्य पर्वत की ओर जाती हो, तो उसे आकस्मिक धन-लाभ होता है।

३३. यदि सूर्य पर्वत के नीचे इस रेखा पर सफेद धब्बे हों, तो उसे राष्ट्रव्यापी सम्मान मिलता है।

३४. यदि बुध पर्वत के नीचे इस रेखा पर सफेद धब्बे हों, तो वह व्यक्ति करोड़पति होता है।

३५. यदि मंगल पर्वत बलवान हो और इस रेखा के अन्त में त्रिकोण बना हुआ हो, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी की हत्या अवश्य करता है।

३६. यदि यह रेखा मध्यमा उंगली पर चढ जाए, तो उस व्यक्ति की डूबने से मृत्यु होती है।

३७. यदि यह रेखा सभी दृष्टियों से दोष मुक्त हो, तो व्यक्ति का चुम्बकीय व्यक्तित्व होता है।

(पूज्य गुरुदेव की पुस्तक वृहद हस्त रेखा से साभार)

● डॉ० राजेन्द्र सिंह ढल,
दिल्ली

साधना का तात्पर्य मंत्रों का आरोह-अवरोह क्रम ही नहीं, न ही मंत्रों की निश्चित संख्या होती है, अपितु यह तो साधने की क्रिया है अपनी इन्द्रियों को, अपने कुविचारों को, अपने मन को! जब साधक को अपने स्व पर पूर्ण नियंत्रण हो जाता है, तब वह जिसकी चाह करता है, उसे प्राप्त हो जाता है, और यही. . .

साधना और

मानव जब संसार में आता है, तो वह एक निर्मल झरने की तरह होता है, जैसे झरने की एक अलग ही छटा होती है, सुहावना दृश्य होता है, जब वह पर्वतों की नीली घाटियों में से, हरी-भरी वादियों में से, अत्यन्त खूबसूरत सा, सफेद दूध की भांति निकलता हुआ, प्रकृति की गोद में बहता हुआ आगे बढ़ता है, तो कितना लुभावना प्रतीत होता है, मन को आनन्द-विभोर कर देने वाला होता है, और तब दिल में एक ही इच्छा जाग्रत होती है, कि बस उसे देखते ही रहें।

इसी तरह बहते हुए निर्मल झरने की तरह आदमी अपनी छटा बिखेरता है। झरना अपनी सुन्दरता, पावनता लिए मिल जाता है उस बहती हुई नदी में, और खो देता है अपना अस्तित्व. . . नदी में पानी तो है, लेकिन झरने जैसी निर्मलता नहीं है, झरने की तरह कल-कल करती हुई वह मधुरता नहीं है, जो कानों को मधुर संगीत का आनन्द दे सके।

नदी उस झरने को अपने अन्दर विलीन करके ले जाती है अथाह समुद्र में, जिसमें न जाने कितनी नदियां अपने अन्दर झरनों को लिए विलीन हो जाती हैं, और खो देती हैं अपना सब कुछ. . . मिटा देती हैं अपना सर्वस्व. . . और फिर उदय होता है एक नया नाम, जो कहलाता है ''महासागर'',

जिसकी गहराई की कोई सीमा नहीं होती।

इन्सान जब धरती पर आता है, तो वह अपने साथ झरने की तरह कोमलता, पावनता, निर्मलता लिए हुए होता है, और धीरे-धीरे बचपन से गुजरता हुआ जवानी में, जवानी से बुढ़ापा. . . और अन्त में मृत्यु की कभी न टूटने वाली नींद में सो जाता है।

मनुष्य कहां से आता है? कहां जाता है? अगर इस ओर हमारा ध्यान जाए, तो शुरूआत होती है एक नये ज्ञान की, एक नये चिन्तन की। अगर हम मोटे तौर पर यही मान लें, कि स्त्री और पुरुष के मेल से मानव की उत्पत्ति होती है, और अन्त में वह अपना कार्य करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तो उसको जला कर, दफना कर उसके शरीर को नष्ट कर देते हैं, और इसी को जीवन का अन्त मान लेते हैं।

कुछ हद तक तो यही सही है, लेकिन यह वास्तविकता से काफी दूर है। मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होकर भी, मृत्यु को प्राप्त नहीं होता, क्या यह सच नहीं है? कुछ तो संसार में ऐसे कार्य कर जाते हैं, जिनसे वे अपना नाम अमर कर जाते हैं, और कुछ ऐसे भी दिव्य-पुरुष होते हैं, जो सदा अमर रहते हैं। ऐसी विभूतियां संसार में आती हैं, एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करती हैं, परन्तु ऐसा पहले शरीर में क्या था, जो निर्जीव हो गया, उसमें चेतना नहीं रही? और दूसरे में ऐसा क्या है, जो ''चेतनावान'' है, जिसे जीवित मानते हैं?

यह सभी जानते हैं, कि आत्मा कभी नहीं मरती, केवल एक शरीर को छोड़ कर दूसरा शरीर धारण कर लेती है। **''श्रीमद्‌भगवद्‌ गीता''** में स्पष्ट कहा है— **''वासांसि जीर्णानि यथा विहाय''** जिस प्रकार मनुष्य नित्य वस्त्र बदलता है, उसी प्रकार आत्मा भी चोला बदलती रहती है, और उस छोड़े हुए शरीर के कर्म-दोष, पाप, कष्ट दूसरा शरीर धारण करने पर मनुष्य को फिर भोगने पड़ते हैं, और फिर जारी होता है यह सिलसिला जन्म-जन्मान्तर तक।

संसार में सबसे बड़ा तंत्र तो मानव और मानव का जीवन-चक्र है, जो जन्म लेता है और मृत्यु को प्राप्त होता है तथा इसके बीच के अन्तराल में वह लाखों प्रकार के जीवों से मिलता है, वह अपने विचार उन्हें देता है और. . .

मनुष्य एक जन्म से छुटकारा पाकर, दूसरा जन्म लेकर भोगता है पिछले जीवन के कर्मों के फल। यहां पूर्वजन्म की बात आ जाती है, जब आदमी जन्म लेता है, मरता है, और फिर जन्म लेता है, यह एक कटु सत्य है, जिसे जल्दी से स्वीकारा नहीं जा सकता।

जहां संसार में विज्ञान की सीमा समाप्त होती है, वहीं से ज्ञान अर्थात् अध्यात्म की शुरूआत होती है, और फिर तलाश शुरू होती है एक योग्यतम गुरु की। केवल शिष्य को ही एक योग्य गुरु की तलाश नहीं होती

वरन् गुरु को भी एक योग्य शिष्य की तलाश होती है। शिष्य तो एक नदी की भांति होता है, जिसके जीवन का लक्ष्य केवल मात्र गुरु रूपी सागर में मिलकर अपना अस्तित्व खो देना है, **और जब शिष्य अपना अस्तित्व मिटा कर, अपना सब कुछ भूल कर गुरु के चरणों में आ जाता है, तब गुरु उसकी सारी अच्छाई-बुराई, पाप-पुण्य अपने अन्दर समेट लेता है, और करता है उसका एक नया रूप तैयार, उसे बनाता है अपने जैसा प्रकाश-पुञ्ज, जो फैला सके गुरु द्वारा दिया हुआ वह ज्ञान-प्रकाश, जिसकी चांदनी में यह संसार अवगाहन कर सके।**

गुरु अपने शिष्य को दीक्षा देकर जाग्रत करता है, उसके सोये हुए मन को आवाज देता है, उसके सुप्त मन को झंकृत कर देता है अपनी प्राण-शक्ति से। यहां **'दीक्षा'** शब्द जो आया है, वह अपने अन्दर गुरु की अनन्त क्षमताओं को, शक्तियों को समेटे हुए है। दीक्षा का तात्पर्य होता है— गुरु अपने प्राणों से, अपने तपस्यांश से शिष्य रूपी पौधे को सींचने के लिए तैयार है, और दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य है— दक्षता प्राप्त करना, निपुणता प्राप्त करना, चैतन्यता प्राप्त करना तथा वह सब कुछ प्राप्त करना, जिसका कि शिष्य के जीवन में अभाव है।

दीक्षा का तात्पर्य है, ज्ञान का वह मार्ग खोलना, जो जन्म-जन्मान्तर से वन्द पड़ा है। दीक्षा का अर्थ है, एक नवीनता पाना, और एक सच्चा व समर्थ गुरु ही उचित दीक्षा देकर अपने शिष्य को बताता है वह मार्ग, जो खोल देता है सिद्धि के द्वार, जो बताता है साधना का एक सच्चा मार्ग, जो ले जाता है शिष्य को उस ऊंचाई की तरफ, जिस पर गुरु स्वयं बैठा है।

गुरु अपने शिष्य से यही तो चाहता है, कि वह उसके बताये हुए सत्कर्म करे, साधना करे, सिद्धि प्राप्त करे, और वह सब कुछ प्राप्त करे, जो उसके लिए आवश्यक है।

जिस प्रकार एक निरोगी एवं सुन्दर शरीर के लिए शुद्ध भोजन व व्यायाम जरूरी है, जिस प्रकार बदलते मौसम के अनुसार वस्त्रों की जरूरत होती है, ठीक उसी प्रकार साधना के लिए भी उचित दीक्षा की आवश्यकता होती है, बिना दीक्षा प्राप्त किए तो साधना में सिद्धि प्राप्त हो ही नहीं सकती।

जिस प्रकार किसी कुपात्र को यदि कोई मूल्यवान वस्तु दे दी जाए, तब भी वह उससे अहित ही करेगा, परन्तु दीक्षा के माध्यम से शिष्य की पात्रता में परिवर्तन किया जाता है, शिष्य को पात्रता प्रदान की जाती है।

बिना दीक्षा के साधना करने पर शिष्य को कई प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जैसे— आप महालक्ष्मी साधना कर रहे हैं, तो अनेक रूपों में विघ्न एवं बाधाएं आकर आपकी साधना को विखंडित कर सकती हैं, जिससे कि आपका प्रयास विफल हो जाता है, और आप अनेक पीड़ाओं से ग्रस्त हो जाते हैं, परन्तु दीक्षा लेने के बाद इस तरह की सम्भावनाएं नहीं रहतीं।

दीक्षा ज्ञान का, चेतना का, तपस्यांश का, शक्ति का वह धारा प्रवाह है, जो शिष्य के अन्तःकरण को रोशन करती है, उज्ज्वल व निर्मल करती है, उसके शरीर में एक आभामंडल का विकास करती है, और यही रोशनी धीरे-धीरे प्रकाश-पुञ्ज का रूप ले लेती है, जिसके माध्यम से जीवन के सभी विकार दूर होते हैं, वे हैं अपने पूर्वजन्मकृत पाप-दोष, कई जन्मों से चली आ रही दरिद्रता तथा शक्तिहीनता, अज्ञानता... और प्राप्त होता है जीवन का आनन्द, साधना, और साधनाओं में सफलता, जो कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होता है।

कहने का तात्पर्य यह है, कि विना गुरु के दीक्षा नहीं, तो विना दीक्षा के साधना में सफलता भी नहीं, विना सफलता के जीवन में प्रकाश नहीं, और प्रकाश नहीं, तो जीवन में नवीनता भी नहीं।

वर्तमान युग कहने को तो 'कलियुग' कहलाता है, और कलियुग का सही अर्थ होता है— कल अर्थात् **'तंत्र-युग'**। इसका तात्पर्य यह है, कि यह तंत्र का युग चल रहा है, और अगर हम तंत्र के सही अर्थ को जान लें तथा समझ लें, तो जीवन में, जो भौतिकता है, जो क्षणिक सुख हमें प्राप्त हो रहा है, उसे हम चिरस्थायी बना सकते हैं।

संसार में सबसे बड़ा तंत्र तो मानव और मानव का जीवन-चक्र है, जो जन्म लेता है और मृत्यु को प्राप्त होता है तथा इसके बीच के अन्तराल में वह लाखों प्रकार के जीवों से मिलता है, वह अपने विचार उन्हें देता है और उनके विचारों को ग्रहण करता है, तथा अपने जीवन को गतिशीलता प्रदान करता है।

जिसने इस जीवन को समझ लिया, वह सही शब्दों में तंत्र को समझ लेता है तथा समझने का अधिकारी हो जाता है। तंत्र को समझने के लिए भी दीक्षा की नितान्त आवश्यकता है, क्योंकि दीक्षा के द्वारा ही जीवन को, जीवन के समस्त तत्त्वों को गहराई से समझा जा सकता है।

यदि आप जीवन के प्रत्येक पक्ष में आगे बढ़ना चाहते हैं, जीवन के प्रत्येक पक्ष को गूढ़ता से समझना चाहते हैं, तो इसके लिए योग्य गुरु से दीक्षा प्राप्त कर साधना-मार्ग की ओर जाना ही होगा, तभी हम जीवन में आनन्द, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त कर सकेंगे।

कायाकल्प संजीवनी विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका-पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है। दीक्षा न्यौछावर का उपयोग केवल संस्था के भवन और संस्था के हित के लिए ही किया जाता है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
गणपति विग्रह	१५	१५०/-
मंगल माला	१५	२४०/-
गणपति गुटिका	१५	६०/-
प्राण-प्रतिष्ठा सम्मोहन यंत्र	२१	२४०/-
सम्मोहन माला	२१	१५०/-
सम्मोहन गुटिका	२१	१००/-
शक्ति चक्र	२१	५/-
गायत्री यंत्र	३०	१५०/-
स्फटिक माला	३०	३००/-
दिव्य शंख	३०	२५१/-
चैतन्य माला	३०	१५०/-
मूंगा रत्न	३०	१५०/-
लाल हकीक माला	३०	१५०/-
वशीकरण गुटिका	३०	१००/-
मूंगा माला	३०	१५०/-
चैतन्य पूरित रुद्राक्ष	४१	१०१/-
रुद्राक्ष माला	४१	३००/-
रम्भा यंत्र	५१	२४०/-
रम्भा माला	५१	२१०/-
दो रम्भा युत	५१	५१/-
सर्वार्थ सिद्धि माला	६४	२४०/-
पापघ्नि गुटिका	६४	१५०/-
शंख निधि	७१	१५०/-
गुह्य माला	७१	१५०/-

दीक्षा

दीक्षा	न्यौछावर	दीक्षा	न्यौछावर
पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा	२१००/-	पुत्र-प्राप्ति दीक्षा	३०००/-
शिष्याभिषेक दीक्षा	३०००/-	गणपति दीक्षा	२४००/-
सम्मोहन दीक्षा	२१००/-	वांछा कल्पलता दीक्षा	३०००/-
गायत्री दीक्षा	२४००/-	सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ति दीक्षा	३०००/-
रोग निवारण दीक्षा	२१००/-	अघोर दीक्षा	२१००/-
ग्रह शान्ति दीक्षा	१५००/-	कृष्णत्व गुरु दीक्षा	५१००/-
रम्भा दीक्षा	२१००/-	बगलामुखी दीक्षा	३१००/-
आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा	३१००/-	सरस्वती दीक्षा	१५००/-
महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-	त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा	३१००/-
गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा	२१००/-	नागेश दीक्षा	१५००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	२१००/-	साधना सिद्धि दीक्षा	२१००/-
तंत्र सिद्धि दीक्षा	२१००/-	सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा	२४००/-
पूर्ण वीर वैताल दीक्षा	५१००/-	भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा	३०००/-
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा	२१००/-	आत्म वार्तालाप सिद्धि दीक्षा	२१००/-
निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा	३०००/-	ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा	३०००/-
गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा	२१००/-		

पत्थर को वश में करने हेतु "हादी तंत्र दीक्षा"	३०००/-
गड़ा धन प्राप्त करने हेतु "भूगर्भ सिद्धि दीक्षा"	२१००/-
दूसरों के मन की बात जानने के लिए "पराविज्ञान दीक्षा"	२१००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें। सम्पूर्ण धनराशि पर मनीऑर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धनराशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनीऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-342001 (राज.),टेलीफोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आयें

306,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : 011-7182248

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. 13, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

जीवन को परिपूर्ण बनाने हेतु

परम पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ

❋❋❋

निखिलेश्वरानन्द स्तवन

जो एक स्तवन ही नहीं शब्दों के माध्यम से ब्रह्म को व्यक्त करने का प्रयास है, सद्गुरुदेव के ओर-छोर को नाप लेने का प्रयास है. . . जिसका पाठ करते ही स्वतः ध्यान की क्रिया आरम्भ हो जाती है, समाधि की भाव-भूमि स्पष्ट होने लगती है और सिद्धियां तो मानों हाथ जोड़ कर सामने खड़ी हो जाती हैं. . . तभी तो यह मात्र स्तवन नहीं काल के भाल पर लिखी अमिट पंक्तियां हैं, आप सब के द्वारा नित्य पठनीय एवं श्रवणीय. . . एक अद्भुत और अनोखा संकलन. . .
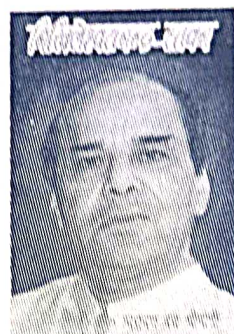
मूल्य प्रति ९६/-

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

सफलता, शोहरत, सम्पत्ति किसे प्रिय नहीं. . . प्रत्येक की यही इच्छा रहती है, कि समाज में उसकी एक अलग पहिचान बने. . . इसके लिए आवश्यक नहीं कि वह शारीरिक सौन्दर्य से परिपूर्ण हो. . . आवश्यकता है उसे सम्मोहन के पूर्ण ज्ञान की. . . जिसे वह देखे, उसका हो जाय. . . जो उसे देखे, उसका बन जाय. . यही तो है आपकी सफलता. . .

— और इस सम्मोहन क्रिया की सम्पूर्ण विवेचना इस पुस्तक में है. . . आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए. . .
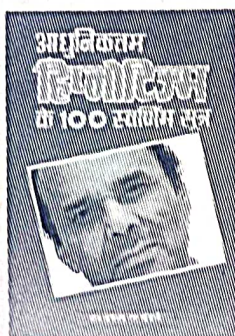
मूल्य प्रति – ३०/-

सर्व सिद्धि प्रदायक : यज्ञ-विधान

अध्यात्म जीवन का एक ऐसा पक्ष है, जिसे नकारा नहीं जा सकता. . . और इसकी पूर्णता के लिए जहां मंत्र-जप आवश्यक है, वहीं यज्ञों का समावेश होना भी उतना ही आवश्यक है. . . बिना यज्ञ में आहुति दिये साधना की सफलता में संशय रह जाता है. . . उसकी क्रिया को स्पष्ट करता यह एक लघु ग्रंथ, जो प्रत्येक साधक के लिये आवश्यक है।
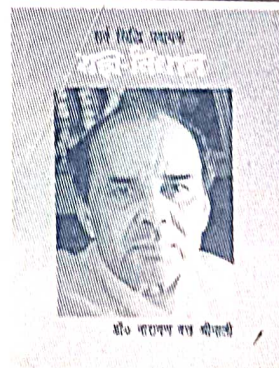
मूल्य प्रति – १५/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फैक्स : ०११-७१८६७००

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९, फैक्स : ०२९१-३२०१०

रजिस्ट्रेशन नं० ३५३०५/८१ A.H.W. पोस्टल-एल.आर.जे. ३६६७/८६-८७

शतायुषि कल्पयेत्वाम्

अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाओ

दिनांक : 10 से 14 जून 1995

को पूज्य गुरुदेव निम्न दीक्षाएं प्रदान करेंगे

दीक्षाएं

तंत्र सिद्धि दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा, वशीकरण दीक्षा, सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा, पूर्ण वीर वैताल दीक्षा, भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा, पत्थर को वश में करने हेतु हादी तंत्र दीक्षा, गड़ा धन प्राप्त करने हेतु भूगर्भ सिद्धि दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, राजयोग दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा, भैरव दीक्षा, दूसरों के मन की बात जानने के लिए परा ज्ञान दीक्षा, गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा, आत्मा-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा, निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा, ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा, गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना-सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

अद्भुत अचरज भरी दीक्षाएं उपरोक्त दीक्षाओं में से चुनकर जो पूज्य गुरुदेव स्वयं प्रदान करेंगे

दिनांक : 24-25-26-27 जून 1995

को भी

और इस बार गुरुदेव स्वयं चुनकर साधक के अनुरूप दीक्षाएं प्रदान करेंगे।

सम्पर्क :

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४

फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

नोट :

ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल "गुरुधाम" दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।